राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in

वर्ष-१, अंक-६ लखनऊ जून २०१५ विक्रमी सं. २०७२ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-२४ रु. १०

हजारों साल बाद हुए सरस्वती नदी के दर्शन

यमुनानगर। वैसे तो १८७४ में ही अंग्रेज विद्वानों ने विलुप्त सरस्वती को खोज निकाला था। एक अंग्रेज विद्वान सीएफ ओल्डहम का 'भारत के रेगिस्तान में खोई हुई सरस्वती एवं अन्य नदियां' शीर्षक लेख एक शोध पत्रिका में छपा था। उसके बाद समय-समय पर कई वैज्ञानिकों ने सरस्वती नदी पर शोध किया और यह कार्य आगे बढ़ता रहा। लेकिन हाल ही में 'विलुप्त' सरस्वती नदी की खोज में एक बड़ी सफलता मिली है।

यमुनानगर के आदिबद्री से महज पांच किलोमीटर की दूरी पर अप्रैल के आखिरी सप्ताह में सरस्वती नदी की खोज को लेकर खुदाई शुरू हुई थी, जिसमें धरातल से महज सात-आठ फीट की खुदाई पर ही वहां जलधारा एकाएक फूट पड़ी। सरस्वती को पुनर्जीवित करने के लिए की जा रही खुदाई के दौरान मिले खनिज लवणों के ओएसएल (जिन पर सूर्य की किरणें न पड़ी हों) के नमूने की जांच से पता चलेगा कि इस क्षेत्र में सरस्वती नदी कब बहती थी।

आदिबद्री से पांच किलोमीटर दूर मुगलवाली गांव में मनरेगा के तहत दर्जनों मजदूर काम कर रहे थे।

करीब आठ फीट की गहराई तक खुदाई करने के बाद कुछ मजदूरों को अचानक जमीन से पानी की धारा निकलते दिखी। पहले थोड़ा पानी निकला, लेकिन जैसे ही ज्यादा खुदाई की तो पानी की मात्रा बढ़ती चली गई। पानी निकलते ही मजदूर वहां जमा हो गए। देखते ही देखते चार जगहों पर सरस्वती का पानी निकलने लगा।

उक्त घटना के बाद जमीन के नीचे बह रही सरस्वती नदी को धरातल पर लाने के लिए मनरेगा के तहत १५ दिन में तीन किलोमीटर खुदाई की जा चुकी है। इतनी कम गहराई पर नीली बजरी व चमकदार रेत, अन्य नदियों के समान ही पानी निकला। इसके बाद मजदूरों ने ८-१० खड्डे खोदे और ६-१० फुट पर सभी जगह पानी फुट पड़ा।

धरती से सरस्वती का पानी निकलने की खबर पूरे जिले में फैल गई है। मुगलवाली गांव में उपायुक्त ने कहा कि सरस्वती नदी का जिक्र पुराणों में मिलता था और आज वह हकीकत के रूप में धरती पर अवतरित हो गई है। उन्होंने बताया कि २१ अप्रैल को सरकार ने मनरेगा परियोजना के तहत इस नदी की खुदाई शुरू की गई थी और अब सरस्वती नदी का अस्तिव उभरने लगा है। बताया जा रहा है कि यह पवित्र जलधारा यमुनानगर से निकलकर छह अन्य जिलों से होकर बहेगी। नदी का अगला पड़ाव देने के लिए २० सदस्यीय कमेटी का गठन किया जा रहा है, जिसमें सरस्वती शोध संस्थान के अध्यक्ष शामिल होंगे। नमूने लेने पहुंचे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के भूगर्भ विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. एआर चौधरी ने बताया कि ओएसएल नमूने की जांच से नदी की प्रामाणिकता का पता लगाया जा सकता है। ■

हमने लोकलुभावन नहीं, कठिन राह चुनी : नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि उन्होंने जानबूझ कर लोकलुभावन रास्ता नहीं चुना और उसकी जगह दोषपूर्ण सरकारी मशीनरी को ठीक करने के लिए अधिक कठिन रास्ते को अपनाया। एक साक्षात्कार के दौरान यह पूछने पर कि उनकी सरकार के एक साल पूरे होने पर क्या उन्हें लगता है कि वह कुछ अलग कर सकते थे? प्रधानमंत्री ने कहा कि उनके सामने दो विकल्प थे।

एक विकल्प सरकारी मशीनरी को लामबंद करने व व्यवस्था में आई कई खामियों और खराबियों को दूर करने के लिए क्रमबद्ध ढंग से काम करने का था। ऐसा इसलिए कि देश को स्वच्छ, कुशल और निष्पक्ष शासन के रूप में लंबे समय तक लाभ मुहैया कराया जा सके।

दूसरा विकल्प यह था कि जनादेश का उपयोग करते हुए नई लोकलुभावन योजनाएं घोषित की जाएं और जनता को बेवकूफ बनाने के लिए मीडिया के जरिये ऐसी घोषणाओं की बमबारी कर दी जाए। यह रास्ता आसान है और लोग इसके आदी हैं।

मोदी ने कहा, 'हालांकि, मैंने इसे नहीं चुना और इसके बजाय शांत और व्यवस्थित ढंग से त्रुटिपूर्ण सरकारी मशीनरी को ठीक करने का अधिक कठिन मार्ग अपनाया। अगर मैंने लोकलुभावन विकल्प चुना होता, तो वह मुझ पर जताए गए जनता के भरोसे को तोड़ना होता।'

प्रधानमंत्री ने कहा, 'हमने सरकारी सेवकों को यह याद दिलाने का प्रयास किया कि वे जनसेवक हैं और केंद्र सरकार के अधिकारियों में अनुशासन को बहाल किया। मैंने एक ऐसा काम किया जो बाहर से देखने में छोटा लगता है। मैं नियमित रूप से चाय पर अधिकारियों से बातचीत करता हूं। यह मेरे काम काज के तरीके का हिस्सा है।'

पीएम ने कहा कि वह महसूस करते हैं कि देश तभी प्रगति करेगा जब वे एक टीम की तरह काम करेंगे। उन्होंने कहा, 'प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री एक टीम हैं।

कैबिनेट मंत्री और राज्यों के मंत्री अन्य टीम हैं। केन्द्र और राज्यों के लोकसेवक भी एक अन्य टीम हैं। यही एक तरीका है जब हम देश को सफलतापूर्वक विकसित कर सकते हैं।'

मोदी ने कहा कि हमारे भविष्य का फोकस महिला, किसान, शहरी गरीब और रोजगार पर रहेगा। हमें ऐसे सुधार लाने होंगे जो हमें बेघरों के लिए पांच करोड़ मकान बनाने में मदद करे। भूमि विधेयक और जीएसटी विधेयक पर उन्होंने कहा कि कुछ ही समय की बात है जब ये दोनों विधेयक पारित हो जाएंगे। ■

सन् २००५ में मिले थे सरस्वती नदी के संकेत

यमुनानगर। हरियाणा के यमुनानगर के जिस मुगलावाली गांव में १० फीट की खुदाई में मिले पानी को हजारों साल पहले लुप्त सरस्वती नदी का पानी बताया जा रहा है। इसे सरस्ध्वती नदी का पुनर्जन्म माना जा रहा है। इस अवधारणा को तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी) के एक अध्ययन 'सरस्वती ओएनजीसी प्रोजेक्ट' में पहले ही मजबूत आधार दिया जा चुका है।

ओएनजीसी के भूगर्भीय विशेषज्ञ वर्ष २००५ में रिमोट सेंसिंग और धरातलीय अध्ययन के जरिये पहले ही बता चुके थे कि सरस्वती नदी आज भी सैकड़ों किलोमीटर नीचे जिंदा है। अध्ययन में यह भी बताया गया था कि किन कारणों से नदी लुप्त हो गई। यह अध्ययन ओएनजीसी से अधिशासी निदेशक पद से सेवानिवृत्त डा. एमआर राव ने किया था।

राव ने पहले नदी के रूट की सेटेलाइट मैपिंग की और फिर धरातलीय जानकारी जुटाई। उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश में सिरमौर जिले के काला अंब के पास 'सरस्वती टियर फाल्ट' का बारीकी से अध्ययन किया गया। इसके आधार पर कहा गया कि हजारों साल पहले आए भीषण भूकंप के कारण यमुना और सतलुज नदी ने अपने रास्ते बदल दिये।

यमुना पूरब में बहते हुए दिल्ली पहुंच गई और सतलुज पश्चिम में होते हुए सिंधु नदी में मिलने लगी। जबकि, पहले इन दोनों नदियों का पानी सरस्वती में मिलकर हरियाणा, राजस्थान व गुजरात होते हुए कच्छ में मिलता था। यही दोनों नदियां सरस्वती नदी के जल का मुख्य स्रोत भी थीं। सरस्वती को जल न मिलने के कारण यह नदी सूख गई।

अवशेषीय अध्ययन के बाद ओएनजीसी ने राजस्थान के जैसलमेर से सात किलोमीटर दूर जमीन में करीब ५५० मीटर तक ड्रिल किया। वहां पर ७६०० लीटर प्रति घंटे की दर से साफ पानी निकला था। यही नहीं, संस्थान ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के भारत-पाक विभाजन के कुछ समय बाद के सर्वे का अध्ययन भी किया।

अध्ययन में यह जानकारी सामने आई थी कि हरियाणा व राजस्थान में करीब २०० स्थलों पर सरस्वती के पानी के निशान आज भी मौजूद हैं। डा . राव के अनुसार इस पूरे क्षेत्र में विस्तृत अध्ययन करने की आवश्यकता है, ताकि सरस्वती नदी को पुनर्जीवित किया जा सके। ■

हरियाणा के सात जिलों से होकर धरातल में बह रही है सरस्वती

चंडीगढ़। जिस सरस्वती नदी की बरसों से तलाश चल रही है, वह हरियाणा के सात जिलों से होते हुए राजस्थान और गुजरात के रास्ते भारत-पाक सीमा के निकट अरब सागर में जाकर गिरती है। हरियाणा में सरस्वती नदी २७५ किलोमीटर लंबी है। राजस्व रिकार्ड में इस नदी का जिक्र है।

यमुनानगर के आदिबद्री से शुरू होकर यह नदी कुरुक्षेत्र, कैथल, जींद, फतेहाबाद और सिरसा होते हुए राजस्थान में प्रवेश कर जाती है। सरस्वती राजस्थान के भी सात जिलों में बहती है और नागौर से होते हुए गुजरात में प्रवेश करती है। गुजरात के छह जिलों में बहती हुई सरस्वती नदी भारत-पाक सीमा पर फारस की खाड़ी में जाकर अरब सागर में समा जाती है।

सरस्वती नदी शोध संस्थान के उप प्रधान भारत भूषण भारती के अनुसार ऋग्वेद में सरस्वती का जिक्र है। इस नदी के लिए 'अन्तःसलिला' शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जिसका मतलब है कि धरती के नीचे चलने वाली नदी। सरस्वती नदी का उदगम स्थल यमुनानगर जिले का आदिबद्री ही है। राजस्व रिकार्ड में यह दर्ज है। राज्य के जिन सात जिलों से होकर यह नदी बहती है, उसमें निरंतरता है यानी इन सात जिलों में बीच में कहीं भी नदी की टूटन नहीं है। सिरसा जिले का नाम भी सरस्वती नदी पर ही पड़ा है। उन्होंने बताया कि १९८२ में आदिबद्री से गुजरात तक पदयात्राएं हुई थी। १९९९ में जब सरस्वती शोध संस्थान बना, तब से २०१४ तक ५० वर्कशाप हुई और दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का आयोजन किया गया।

तमाम खोज के बाद केंद्रीय भूमिगत जल विभाग ने स्वीकार कर लिया कि सरस्वती नदी धरती के नीचे बह रही है और इसका प्रवाह काफी तेज है। इसका पानी भी काफी मीठा है। हरियाणा सरकार ने इसके लिए 'सरस्वती हैरीटेज के नाम से प्रोजेक्ट प्रारम्भ किया है। इसके लिए १०० करोड़ रुपये का बजट है, जिसमें से ५० करोड़ रुपये की राशि जारी हो चुकी है। ■

कार्टून अच्छे दिनों के लिए उतावलापन -- मनोज कुरील

कार्टून -- श्याम जगोता

सुभाषित

दुराचारी च दुर्दृष्टिर्दुराऽवासी च दुर्जनः।
यन्मैत्री क्रियते पुम्भिर्नरः शीघ्रं विनश्यति।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- गलत आचरण करने वाले से, बुरी निगाह वाले से, गलत स्थान पर रहने वाले से और दुष्ट से जो भी मित्रता करेगा, उसका सर्वनाश शीघ्र हो जाता है।

पद्यार्थ- दुराचारी नर से तो दूर ही रहे जी सदा,
बुरी दृष्टि वाले से न रखे कभी नाता है।
नीच हो निवास वाले संग नहीं वास करे,
उसका प्रभाव मन बीच बुरा जाता है।
दुष्ट का न संग कभी भूल के भी करो भाई,
सारे घोर संकटों को नीच खींच लाता है।
नीति की ये रीति ध्यान देके सुन लीजै सब,
नीचता के साथ नाश आप चला आता है।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

एक साल का संतोषजनक सफर

आज से ठीक एक वर्ष पहले नरेन्द्र मोदी जी ने लोकसभा चुनावों में पूर्ण बहुमत प्राप्त करके प्रधानमंत्री के रूप में देश की बागडोर संभाली थी। उन चुनावों में जनता ने जिन आशाओं के साथ उनको देश का दायित्व सौंपा था, उन आशाओं को पूर्ण करने की इच्छा होना स्वाभाविक ही नहीं आवश्यक भी है। आज जब हम इस सरकार के पिछले एक साल के कार्यकाल पर दृष्टि डालते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि भले ही जनता की आकांक्षायें सम्पूर्ण रूप में साकार न हुई हों, लेकिन मोदी जी ने ठोस आर्थिक और सामाजिक नीतियां अपनाकर यह सुस्पष्ट कर दिया है कि वे विकास की सुदृढ़ नींव रख रहे हैं।

मजबूत नींव के बिना मजबूत भवन की कल्पना करना असम्भव है। देश की अर्थ व्यवस्था को अभी तक ऐसी दिशा नहीं मिली थी कि वह विकास की मंजिलें चढ़ती जाये। इसी के परिणामस्वरूप हमारा देश स्वतंत्रता के ६५ वर्ष बाद भी आज भी विकास शील अवस्था में है, जबकि हमारे देश के आस-पास स्वतंत्र हुए अनेक छोटे-बड़े देश विकास की ऊंचाइयों को भी पार कर गये। इससे यह सिद्ध होता है कि हमारी नींव कमजोर थी।

इसलिए यह उचित ही है कि मोदी जी ने लोकलुभावन घोषणाओं के बजाय ठोस सुधारों की राह पर चलना पसंद किया। यह राह भले ही अभी हमें कठिन लग रही है, लेकिन इसी राह से विकास की मंजिलों को पाया और पार किया जाएगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसके लक्षण अभी से नजर आने लगे हैं। हमारी विकास दर जो कभी ४ और ५ प्रतिशत के बीच घिसट रही थी, मोदी जी के शासनकाल में ७.७ प्रतिशत को छू चुकी है और शीघ्र ही ८ तक पहुंचने वाली है। चीन जैसे देश की अर्थव्यवस्था की विकास दर को भी इसने पीछे छोड़ दिया है।

लेकिन खेद है कि विरोधी दल अपने लोकतांत्रिक अधिकारों का दुरुपयोग देश के विकास को बाधित करने में कर रहे हैं, जिससे विदेशी निवेश के अपेक्षित परिणाम नहीं मिले हैं। उद्योगों और बुनियादी सुविधाओं के लिए भूमि का अधिग्रहण किये बिना देश में विदेशी निवेश नहीं आयेगा और रोजगार के अवसर नहीं बढ़ेंगे, यह सभी जानते हैं। फिर भी विरोधी दल अनुचित विरोध से बाज नहीं आ रहे हैं।

प्रसन्नता की बात यह है कि देश की जनता को आज भी मोदी जी पर पूर्ण विश्वास है। अभी हाल ही में जो जनमत सर्वेक्षण हुए हैं, उन सभी में निरपवाद रूप से मोदी जी में दो तिहाई से अधिक जनता ने पुनः अपना विश्वास व्यक्त किया है। इससे स्पष्ट है कि मोदी जी सही रास्ते पर चल रहे हैं।

-- बृजनन्दन यादव

आपके पत्र

पत्रिका का कलेवर एवं समस्त रचनाएँ अत्यंत अच्छी हैं। अनन्त शुभकामनाएं एवं बधाई! **-- उदय भान पाण्डेय 'भान'**

एक-से-एक नायाब कविता, कहानी, गजल, लेख, बाल रचना पढ़कर मन हर्षित हो गया. विषयों की विविधता, समसामयिक घटनाएं, आगामी मदर्स डे कुछ भी आपकी नजरों से ओझल नहीं हुआ. बधाई. **-- लीला तिवानी**

आपकी यह पत्रिका समाज के लगभग सभी विषयों को उजागर करती हुई पाठको के मन को स्पर्श कर लेती है। देशभक्ति से ओतप्रोत आपकी पत्रिका व आपके विचारों को मेरा सादर अभिनन्दन। **-- संगाती कुमारी**

'जय विजय' का मई अंक अच्छा लगा। शुभकामनाएं।
-- प्रकाश पारवानी, सांसद प्रतिनिधि, इंदौर

सभी रचनाएँ बहुत सुन्दर. सराहनीय प्रयास के लिए बधाई. **-- कैलाश शर्मा**

'जय विजय' का मई २०१५ अंक मिला। पत्रिका में कवितायें और कहानियां पढ़ना बहुत अच्छा लगा। **-- कविता रावत**

'जय विजय' पत्रिका का मई २०१५ का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका बहुत अच्छी लगी। शरद सुनेरी का 'जय जवान जय किसान' आलेख बहुत मार्मिक और संवेदनापूर्ण है। आशा पांडेय ओझा का 'फेसबुकवा बनाम लेखकवा' आलेख में लेखिका ने एक नई बात रखी है। गजलें, कविताएं आदि से भी बहुत कवियों की सर्जनात्मकता का परिचय मिलता है। पत्रिका आगे फले-फूले और प्रगति करे, ऐसी मेरी शुभ कामना है। **-- प्रोफेसर कृष्ण कुमार गोस्वामी**

आप नये रचनाकारों को प्रोत्साहन देकर बहुत ही नेक कार्य कर रहे हैं, इसी तरह नए साहित्यकार सामने आते हैं। एक ही अंक में कहानियाँ, कविताएँ, लघुकथाएँ, लेख आदि पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। इतनी श्रेष्ठ सामग्री पाठकों को उपलब्ध करवा रहे हैं। इसके लिए आप निश्चित ही बधाई के पात्र हैं। मेरी अनंत शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। **-- कल्पना रामानी**

आपका अति आभार बड़े भाईसाहब कि आपने मेरी कविता को मई अंक में स्थान दिया. आगे भी मैं अपनी रचनाएं प्रेषित करता रहूंगा. नवीन रचनाकारों को प्रोत्साहन देने वाली आपकी पत्रिका बेहद रुचिपूर्ण है. धन्यवाद! **-- सूर्य प्रजापति**

'जय विजय' के मई अंक में अत्यंत सूचनाप्रद और साहित्यिक सामग्री के लिए बहुत बहुत बधाई एवं धन्यवाद। **-- जय प्रकाश भाटिया**

हमेशा की भांति समय से 'जय विजय' का मई अंक भी प्राप्त हुआ। आपकी कर्मठता के लिए पुनः हार्दिक साधुवाद। सामग्री रोचक, पठनीय और संग्रहणीय है। जारी रखें। **-- देवकी नन्दन 'शान्त'**

उत्कृष्ट पठनीय सामग्री के लिए बहुत बहुत आभार। **-- कर्नल राजेश आनन्द**

आपका लेख 'मुसलमानों को मताधिकार का प्रश्न' बहुत अच्छा लगा। मुद्दा भी बहुत प्रासंगिक है। मई माह के अंक में आपने बड़ी संख्या में रचनाकारों को जगह दे दी है, इसके लिए आप साधुवाद के पात्र हैं। एक दिन आपकी पत्रिका पूरे देश के साहित्यकारों की सबसे प्रिय पत्रिका होगी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। एक बार फिर आपको बधाई रचनाकर्मियों का काफिला बड़ा करने के लिए। **-- उमेश शुक्ल**

'जय विजय' की प्रगति को देखकर प्रसन्नता होती है। मैं कुछ परिचितों का संदर्भ भेज रहा हूं। कृपया उनको भी अपनी सूची में शामिल कर लें। **-- सन्त लाल**

बहुत अच्छी पत्रिका। पढ़कर बहुत खुशी हुई। **-- श्वेता रस्तोगी**

पत्रिका का अंक मिला। सराहनीय प्रयास है। ऐसे समय में जब जिन्दगी की भागदौड़ से समय मिलने पर टीवी पर राजनीति की उठापटक में फंसना एकमात्र विकल्प हो, आप जैसे सुधीजनों के प्रयास ताजा हवा के झोंके जैसे लगते हैं। **-- सतीश शर्मा**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - **सम्पादक**)

योग एक वरदान !

विजय कुमार सिंघल

भारतीय संस्कृति में योग का एक महत्वपूर्ण स्थान है। 'योग' के कई अर्थ किये गये हैं। योग दर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतंजलि के अनुसार 'योगश्चित्त वृत्ति निरोधः' अर्थात् "चित्त की वृत्तियों का निरोध करना ही योग है।" भगवद्गीता के अनुसार 'योगः कर्मसु कौशलम्' अर्थात् "कर्म को कुशलतापूर्वक करना ही योग है।" महर्षि व्यास ने योग का अर्थ 'समाधि' किया है। आधुनिक युग के योगी श्री अरविन्द के अनुसार "परमात्मा के साथ एकत्व की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना और उसे प्राप्त करना ही योग है।"

व्याकरण की दृष्टि से योग का अर्थ है 'जोड़ना' अर्थात् आत्मा को परमात्मा से जोड़ना। योग करते हुए हम परम सत्ता से अपना सम्बंध जोड़ने का प्रयास करते हैं। ऐसा करने से ही हमें परम शान्ति की प्राप्ति हो सकती है। इस प्रकार योग मोक्ष का साधन है। इसके लिए अपने शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा तक को शुद्ध करना होता है। योग की समस्त क्रियाएँ इसी शुद्धीकरण की प्रक्रिया का अंग हैं। यहाँ योग से हमारा तात्पर्य महर्षि पतंजलि द्वारा बताये गये अष्टांग योग से हैं। यहाँ इन सभी अंगों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

१. यम

यह अष्टांग योग का प्रथम अंग है। इसमें ५ तत्व हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह। इन तत्वों को भली प्रकार समझ लेना और उनका पालन करना योग की पहली सीढ़ी है।

अहिंसा - किसी भी प्राणी को मन, वचन और कर्म से कष्ट न देना ही अहिंसा है।

सत्य - मन, वाणी और कर्म में एकरूपता को सत्य कहा जाता है। छल-कपट भरी हुई वाणी बोलना या आचरण करना असत्य है।

अस्तेय - इसका अर्थ है- चोरी न करना। दूसरों की वस्तुओं पर बिना पूछे अधिकार करना अथवा अनुचित ढंग से ग्रहण करना चोरी है।

ब्रह्मचर्य - इसका अर्थ है- धर्मानुसार आचरण करना। अपनी इन्द्रियों को संयमित करते हुए सम्यक् आचरण करना ही ब्रह्मचर्य है।

अपरिग्रह - इसका अर्थ है अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना।

२. नियम

इसमें भी ५ तत्व हैं- शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान।

शौच - इसका अर्थ है- आंतरिक और बाह्य पवित्रता। योग साधक को प्रतिदिन जल से शरीर की शुद्धि, सत्य से मन की शुद्धि, विद्या से आत्मा की शुद्धि और ज्ञान के द्वारा बुद्धि की शुद्धि करनी चाहिए।

सन्तोष - अपने पास जो और जितना है, उसी से संतुष्ट रहना और पुरुषार्थ करते रहना, जो पुरुषार्थ और ईश-कृपा से प्राप्त हो उसका तिरस्कार न करना और अप्राप्त की तृष्णा न रखना ही सन्तोष है।

तप - अपने जीवन में जो भी द्वन्द्व हों, जैसे भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान, स्तुति-निन्दा, जीत-हार आदि उन सबको सहजता से स्वीकार करते रहना ही तप कहलाता है।

स्वाध्याय- इसके दो अर्थ हैं। एक- सु-अध्ययन अर्थात् अच्छे ग्रंथों का अध्ययन करना। दूसरा अर्थ है- स्व-अध्ययन अर्थात् अपना अध्ययन करना कि 'मैं कौन हूँ?', 'मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है?' आदि।

ईश्वर-प्रणिधान - इसका अर्थ है- अपने समस्त कर्मों को ईश्वर को अर्पित कर देना। हम जो कर रहे हैं वह ईश्वरीय कार्य ही है। ऐसा विचार करने वाले साधक पर परमपिता की कृपा का अमृत सदा बरसता है।

३. आसन

'स्थिर सुखमासनम्' के अनुसार पद्मासन, सिद्धासन, वज्रासन या सुखासन आदि किसी भी आसन में सुखपूर्वक स्थिर होकर बैठना ही आसन कहलाता है। साधक को ध्यान आदि करने के लिए किसी आसन में देर तक बैठने का अभ्यास करना चाहिए। ध्यानात्मक आसनों के अतिरिक्त हठयोग में कई ऐसे आसन हैं, जिनका सम्बंध शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से है।

४. प्राणायाम

अपनी श्वास-प्रश्वास की गति को नियंत्रित करना प्राणायाम कहलाता है। प्राणायाम कई प्रकार के होते हैं। प्राणायामों का शरीर के विभिन्न अंगों पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इनसे रक्त और नाड़ियाँ शुद्ध होती हैं, रोगों से मुक्ति मिलती है, रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है और दीर्घायु प्राप्त होती है।

५. प्रत्याहार

अपनी इन्द्रियों को जीतना अर्थात् उन्हें उनके विषयों से दूर खींचकर अपने में ही नियंत्रित करना ही प्रत्याहार है। जैसे, रूप-सौंदर्य को देखना आँखों का विषय है। यदि हम अपने विवेक को इस प्रकार जागृत कर लेते हैं कि आँखें रूप-सौंदर्य की ओर आकर्षित न हों और समस्त स्रष्टि को ही सुन्दर मानें, तो वह नेत्र इन्द्रिय को अन्तर्मुखी करना है। यही प्रत्याहार है। इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों के बारे में समझा जा सकता है।

६. धारणा

अपने शरीर के किसी विशेष अंग जैसे नाभि, हृदय, भ्रूमध्य, नासिकाग्र आदि में से एक पर अपने मन को एकाग्र कर लेना ही धारणा कहलाता है। प्रत्याहार से जब इन्द्रियाँ अन्तर्मुखी हो जाती हैं, तो उन्हें इच्छा मात्र से किसी स्थान-विशेष पर स्थिर कर लेना ही धारणा है।

७. ध्यान

जब मन शरीर से हटकर परमपिता के साथ एकाकार हो जाता है तो उस स्थिति को ध्यान कहा जाता है। उदाहरण के लिए, जब नदी समुद्र में प्रवेश करती है तब वह समुद्र के साथ एकाकार हो जाती है। समस्त विषयों को भूलकर परमात्मा के आनन्दमय, ज्योतिर्मय और शान्तिमय स्वरूप में मग्न हो जाना ही ध्यान है।

८. समाधि

यह योग का अन्तिम लक्ष्य है। ध्यान में जब साधक अपने स्वरूप से शून्य हो जाता है और ईश्वर से एकात्म हो जाता है, तब उसे समाधि कहते हैं। यह ध्यान की एक विशेष अवस्था है।

योग के इन आठ अंगों में पहले चार अंग बहिरंग योग हैं अर्थात् ये मुख्यतः शरीर और संसार से सम्बंध रखते हैं। अन्तिम चार अंग अन्तरंग योग हैं, जो मुख्यतः मन और आत्मा से सम्बंध रखते हैं। योग के आठों अंगों का अभ्यास तो विरले योगी ही करते हैं। यदि हम केवल बहिरंग योग का ही अभ्यास कर लें, तो जीवन को सुखी बनाने के लिए पर्याप्त हैं।

योग आज के युग में एक वरदान है। बिना कुछ खर्च किये केवल कुछ नियमों का पालन करने और कुछ मिनट तक आसनों और प्राणायामों का अभ्यास करने से ही कोई व्यक्ति सदा स्वस्थ और क्रियाशील बना रह सकता है। जो इसके लिए समय के अभाव का रोना रोते हैं, उन्हें बीमारियों और डाक्टरों के क्लीनिकों के बाहर लाइन लगाने के लिए समय देना पड़ता है। फिर उसमें जो धन खर्च होता है उसे कमाने में और अधिक समय लगाना पड़ता है। इस प्रकार योग का अभ्यास करना ही समय को बचाने और उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग करने का एक मात्र उपाय है।

अधिकांश युवक अपने स्वास्थ्य को गम्भीरता से नहीं लेते। अपनी जवानी के नशे में वे समझते हैं कि जो भी कर रहे हैं, जो भी खा-पी रहे हैं, सब ठीक है। परन्तु बदली हुई जीवन शैली का बुरा प्रभाव देर-सबेर स्वास्थ्य पर पड़ता ही है। जवानी में वे छोटी-मोटी असुविधाओं को किसी सीमा तक झेल जाते हैं। लेकिन ४०-४५ की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते वे तमाम बीमारियों से घिर जाते हैं और फिर योग की तरफ झुकते हैं। यदि वे प्रारम्भ से ही योग को अपना लें और अपनी जीवन शैली को संतुलित रखें, तो उन्हें बढ़ती हुई उम्र में कोई रोग होगा ही नहीं। इसलिए सभी को जितना जल्दी सम्भव हो उतनी जल्दी योग का अभ्यास शुरू कर देना चाहिए।

माताओं और बहनों के लिए तो योग और भी अधिक उपयोगी है। उनके ऊपर समस्त परिवार के स्वास्थ्य, भोजन और सुख-सुविधा का प्रबंध करने का भार होता है। यदि वे स्वयं योग और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहेंगी, तो समस्त परिवार पर उसका अच्छा संस्कार पड़ेगा। इसलिए माताओं और बहनों को नित्य योग का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। ■

गौतम-अहिल्या आख्यान का यथार्थ स्वरूप

मनमोहन कुमार आर्य

रामायण में गौतम-अहिल्या का एक प्रसंग आता है जिसमें कहा गया है कि राजा इन्द्र ने गौतम की पत्नी अहिल्या से जार कर्म किया था। गौतम ने उसे देख लिया और इन्द्र तथा अहिल्या को श्राप दिये। रामायण के पाठक इसे पढ़कर इस घटना को सत्य मान लेते हैं। क्या यह सम्भव है कि एक ब्रह्मज्ञानी ऋषि की पत्नी ऐसा अनुचित कार्य करे। ऋषि की पत्नी तो स्वयं भी ब्रह्मज्ञानी ही हो सकती है न कि कोई साधारण अज्ञानी व दुर्बल चरित्र की। कोई पुरुष वेश बदल ले तो उसे अपने पति व अन्य पुरुष का अन्तर ही पता न चले, यह सर्वथा असम्भव है। वास्तव में यह कथा ऐतिहासिक न होकर वेद के एक वैज्ञानिक रहस्य का विद्रूप वर्णन है।

महाभारत काल के बाद संस्कृत, वेद, वैदिक साहित्य, इतिहास आदि के सबसे अधिक प्रमाणित विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती हुए हैं। इन्होंने समस्त संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के 'ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्य विषयः' अध्याय में महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि इन्द्र और अहल्या की कथा मूढ लोगों ने अनेक प्रकार से बिगाड़ कर लिखी है। उन्होंने ऐसा मान रखा है कि 'देवों का राजा इन्द्र देवलोक में देहधारी देव था। वह गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या के साथ जारकर्म किया करता था। एक दिन जब उन दोनों को गौतम ने देख लिया, तब इस प्रकार शाप दिया कि हे इन्द्र ! तू हजार भगवाला हो जा। अहल्या को शाप दिया कि तू पाषाणरूप हो जा। परन्तु जब उन्होंने गौतम की प्रार्थना की कि हमारे शाप का मोक्षण कैसे वा कब होगा, तब इन्द्र से तो कहा कि तुम्हारे हजार भग के स्थान में हजार नेत्र हो जायं, और अहल्या को वचन दिया कि जिस समय रामचन्द्र अवतार लेकर तुझ पर अपना चरण लगावेंगे, उस समय तू फिर अपने स्वरूप में आजावेगी।' महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि इस प्रकार से पुराणों में यह कथा बिगाड़ कर लिखी गई है। सत्य ग्रन्थों में ऐसा नहीं है। सत्यग्रन्थों में इस कथा का स्वरूप निम्न प्रकार है।

सूर्य का नाम इन्द्र है, रात्रि का नाम अहल्या है तथा चन्द्र का नाम गौतम है। यहां रात्रि और चन्द्रमा का स्त्री-पुरुष के समान रूपक अलंकार है। चन्द्रमा अपनी स्त्री रात्रि से सब प्राणियों को आनन्द कराता है और उस रात्रि का जार आदित्य है। अर्थात् जिस (सूर्य) के उदय होने से (वह) रात्रि के वर्त्तमान रूप श्रृंगार को बिगाड़ने वाला है। इसलिये यह स्त्री पुरुष का रूपकालंकार बांधा है। जैसे स्त्री-पुरुष मिल कर रहते हैं, वैसे ही चन्द्रमा और रात्रि भी साथ-साथ रहते हैं। चन्द्रमा का नाम 'गौतम' इसलिये है कि वह अत्यन्त वेग से चलता है और रात्रि को 'अहल्या' इसलिये कहते हैं कि उसमें दिन का लय हो जाता है। सूर्य्य (इन्द्र) रात्रि को निवृत्त कर देता है, इसलिए वह उसका 'जार' कहलाता है। इस उत्तम रूपकालंकार विद्या को अल्प बुद्धि पुरुषों ने बिगाड़ के सब मनुष्यों में हानिकारक फल धर दिया है। ऐसी अनेक मिथ्या कथायें पुराणों में दी गई हैं जिन्हें विवेकशील मनुष्यों को स्वीकार नहीं करना चाहिये। रामायण में यह कथा वैदिक ग्रन्थों से आयातित है।

गौतम-अहिल्या के आख्यान व कथा की ही तरह अन्य ऐसी अनेक कथाओं के मिथ्यात्व का कारण अर्वाचीन काल में लोगों का वेदों के मन्त्रों के शब्दों का लौकिक संस्ंत के आधार पर अर्थ करना है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा वेदों के शब्द ईश्वरीय वाक् है। यह वेदों के शब्द धातुज व यौगिक है। अतः वैदिक शब्दों का अर्थ लौकिक संस्ंत से करने से इस प्रकार की त्रुटियां होती हैं। यदि वेदों के शब्दों के अर्थ अष्टाध्यायी महाभाष्य व निरुक्त पद्धति को अपनाकर किये जायें तो उनका यथार्थ प्रकट होता है जैसा कि महर्षि दयानन्द जी ने किया है। ■

सामान्य ज्ञान

१. भारत के अलावा किस देश में स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त को ही मनाया जाता है?
२. कौन सा देश कभी परतंत्र नहीं हुआ?
३. विश्व में कुल कितने देश हैं?
४. किस देश के डाकटिकटों पर उस देश का नाम नहीं छापा जाता?
५. विश्व का सबसे बड़ा महासागर कौन सा है?
६. विश्व में सबसे कठोर कानून वाला देश कौन सा है?
७. किस देश में सफेद हाथी पाये जाते हैं?
८. किस देश के राष्ट्रपति का कार्यकाल एक साल का होता है?
९. विश्व की सबसे बड़ी नदी कौन सी है?
१०. विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान कौन सा है?
११. विश्व की सबसे मंहगी वस्तु कौन सी है?
१२. शाखाओं की संख्या की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा बैंक कौन सा है?

उत्तर

१. दक्षिण कोरिया; २. नेपाल; ३. ३५३; ४. ग्रेट ब्रिटेन; ५. प्रशांत महासागर; ६. सऊदी अरब; ७. थाईलैंड; ८. स्विट्जरलैंड; ९. नील नदी; १०. सहारा; ११. यूरेनियम; १२. भारतीय स्टेट बैंक।

सिक्के के दो पहलू

डा. विवेक आर्य

रतलाम जिले के एक हेलमेट पहने दूल्हे की तस्वीर पिछले दिनों इंटरनेट पर खूब प्रसारित हुई। दूल्हा दलित समुदाय से सम्बंधित है एवं उसने हेलमेट इसलिए पहना है क्यूंकि उस गांव के सवर्ण लोगों द्वारा दलित समाज से सम्बंधित व्यक्ति द्वारा घोड़ी की सवारी करने पर आपत्ति है। दलित भाई इसे सवर्णों द्वारा दलितों पर अत्याचार के रूप में प्रचारित कर रहे हैं। इस घटना को विभिन्न दलित संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं से लेकर इंटरनेट पर व्यापक रूप से यह दिखाने के लिए प्रचारित किया जा रहा है कि सम्पूर्ण सवर्ण हिन्दू समाज अत्याचारी है। निश्चित रूप से यह अत्याचार है और हम इसकी निंदा करते हैं मगर इस घटना का सहारा लेकर जो सवर्ण और दलितों के मध्य वैमनस्य पैदा किया जा रहा हैं वह एक देश घातक सोची समझी साजिश है।

ध्यान से देखने पर मालूम पड़ता है कि दलित मुखपत्रों के चलाने वाले अथवा दिशा निर्देश देने वाले मुख्य रूप से ईसाई अथवा मुस्लिम होते हैं जो समाज सेवा की आड़ में विदेशी धन के बल पर हिन्दू समाज को तोड़ने का कार्य करते हैं। आज के समय में ९०% से अधिक हिन्दू समाज जातिवाद को नहीं मानता। केवल १०% अज्ञानता के चलते जातिवाद को मानते हैं जिसका उन्मूलन आवश्यक है। मगर उन १०% के कुकृत्य को बाकि ९०% पर थोपना सरासर गलत हैं। इस घटना के विरोध से दूरियाँ घटने के स्थान पर बढ़ेगी इसमें कोई दो राय नहीं है। तो इसका समाधान क्या है?

इसका समाधान है ऐसी घटनाओं को जोर शोर से प्रचारित करना जिसमें स्वर्ण और दलित के मध्य दूरियां कम करने का प्रयास किया गया था और उसमें आंशिक ही सही मगर सफलता अवश्य मिली। आप बुराई के स्थान पर अच्छाई वाले दृष्टान्तों को प्रचारित कर भी सामाजिक सन्देश दे सकते हैं जिससे सकारात्मक माहौल बने और वैमनस्य न बढ़े। इस प्रकार के अनेक प्रसंग महाशय रामचन्द्र जी जम्मू, वीर मेघराज जी इन्दौर, लाला लाजपत राय जी गढ़वाल, लाला गंगाराम जी स्यालकोट, पंडित देवप्रकाश जी मध्य प्रदेश, मास्टर आत्माराम अमृतसरी जी बरोडा, वीर सावरकर जी रत्नागिरी, स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली, पंडित रामचन्द्र देहलवी दिल्ली आदि के जीवन में मिलते हैं, जिनके प्रचार प्रसार से जातिवाद उन्मूलन की प्रेरणा मिलती है। यही इस सिक्के के दो पहलू हैं कि दलितोद्धार के लिए दलितों पर अत्याचार के स्थान पर भेदभाव मिटाने वाली घटनाओं को प्रचारित किया जाना चाहिए। ■

सजन जब से गए बिदेस/भेजी ना पाती ना कोऊ संदेस
नैना बावरे थक गइल/तक तक राह निहार हमेस ...
जेठ अगन कम लागै/बिरह अगन सुलगाये
कासे कही बात मनवा की/जिय के दरद कैसन समझाये
सावन सूखा, भादों सूखा/रीता बिन साजन घर-द्वार
अँखियन बदरा बन बरसीं बीते कातिक क्वार ...
रात हठीली पूसन की/कोसन लम्बी, सीली
फुलवा फूले, शूलन लागै /अँखियन गीली-गीली ...
फागुन आयो, संदेसा लायो
सखी, बही प्रेम पुरवाई
पतझड़ ज्यों बासंती बन गयो
अंग रंग भरी अमराई
टेसू फूला, बगियन झूला
अम्बर लाल-लाल
देख पिय की एक झलक बस नैनन हुए गुलाल ...
आये सजन घर फगवा गाओ सखी री ...
केसर तन, सिंदूरी मन प्रिय से होरी मनाओ सखी री ...

-- अनिता अग्रवाल

(कविता संग्रह '**अन्तर्मन के स्पन्दन**' से साभार)

तुम्हारी आँखों में/मैंने देखी है एक उम्मीद
शायद बहुत ही करीब से/जब मैं गुजरी हूँ तुमसे होकर
और बहुत से ऐसे मोड़ जो
दुख और उदासी के डगर से होकर
जाते हैं तुम तक
मेरी भी आँखों में एक मूरत
जो याद दिलाते हैं हर पल
तुम्हारे होने की भीनी खुशबू
क्या तुमने भी देखा है
इन आँखों के गहरे समंदर को
जो रहती है खामोश सदा और बरबस ही कभी
बरस पड़ती हैं बिन बादल बरसात की तरह...

-- संगीता सिंह 'भावना'

मैं बसंत में/आश्वासन भरा पीला फूल बन
खिलना चाहती हूँ
पतझड़ में/ललछौंह पत्तियों सी बिखर जाना चाहती हूँ
ग्रीष्म की तीखी धूप में/गुलमोहर बन दहकना चाहती हूँ
चीखती कोयल के लिये
मैं आम, पीपल बरगद नीम के
पेड़ में तब्दील होना चाहती हूँ
मैं चाहती हूँ पानी की बूंद बन जाना
और झूम झूम बरसना बरसात में
हरी घास बनकर पूरी पृथ्वी पर
हरियाली फैलाना चाहती हूं
शरद में हरसिंगार की महक बन/हवा में घुलना चाहती हूं
मैं प्रकृति की विलुप्त होते अवयवों को
अक्षुण्ण रखना चाहती हूं
मैं प्रकृति के सभी रंग समेट
इन्द्रधनुष का प्रतिरूप बन आसमान में टंगना चाहती हूं
आपाद मस्तक मैं प्रकृति होना चाहती हूं !

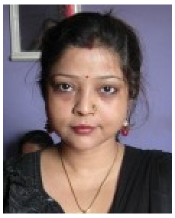

-- डा. भावना सिन्हा

प्रेम भक्ति की अनूठी परिभाषा पढ़ा गये तुम
हर दिल में अपनी मोहनी छवि छिपा गये तुम
जीवन जीने की कला सिखा गये तुम
दुख और सुख में संयम करना पढ़ा गये तुम
शरीर नश्वर आत्मा अमर बता गये तुम
कर्म ही जीवन है पाठ दे गये तुम
अधर्म पर सदा धर्म की होती जीत
आस इसकी बंधा गये तुम
हमसे कितना प्यार करते हो
एहसास करा गये तुम
मिलन होगा ये कैसी प्यास
कान्हा ! बढ़ा गये तुम

-- संगीता कुमारी

(कविता संग्रह '**हृदय के झरोखे**' से साभार)

कतरा कतरा बन/जिन्दगी गिरती रही
समेट उन्हें, मैं यादों में सहेजती रही
अनमना मन मुझसे/क्या मांगे, पता नहीं
पर हर घड़ी धूप सी/मैं ढलती रही
रात, उदासी की चादर
ओढ़ने को आतुर बहुत
पर मैं तो चाँद में ही अपनी
खुशियाँ ढूंढती रही
और चाँदनी सी खिलखिलाती रही

-- कनेरी महेश्वरी

मेरे घर का किवाड़/आज भी बुला रहा है
मुझे अपनी चरमराहट से/बैचेन होकर देख रहा है
किसी न किसी आहट पे/बचपन सारा बीत गया
उसकी ओट में लुक छिपकर
कभी हंसती हुई कनखियों से
तो कभी कुछ पलों मे घुट घुटकर
मन की वेदना को समझा
अपनी कुंडियों मे सहेजा
नही उडेला बहुत कुछ सच
रखा बंद घबराहट से/मेरे घर का किवाड़
कभी नव वधु के/घुंघट की आड़ ये
कभी देर तक न आये/प्रियतम की ताक ये
सहस्त्र युगों का साक्ष्य/रात भर प्रखर प्रहरी सा
आज भी बुला रहा है/मेरे घर का किवाड़

-- मधुर परिहार

चलो उस जहां में/जहां शाम न हो, सिर्फ सहर हो
जहां रात न हो, सिर्फ दिन हो
जहां दुःख न हो, सिर्फ सुख हो
जहां गैर न हों, सिर्फ अपने हों
जहां ख्वाब न हो, सिर्फ हकीकत हो
जहां दुश्मन न हों, सिर्फ दोस्त हों
मुझे पता है ऐसा सब कुछ
सिर्फ एक जगह है/तुम्हारे आगोश में !
मुझे खुद से जुदा मत करो
मेरी सोच का दायरा/सिर्फ तुम तक है !

-- धर्म पाण्डेय

नहीं करूंगी अब टूटे तारों को जोड़ने का प्रयास
मैंने किया था यह प्रण अनेक बार
पर जब भी दृष्टि पड़ी किसी के टूटने पर
अनायास बढ़ गये थे उसकी ओर मेरे हाथ!
न जाने क्यूं ढूंढ़ती रही थी
मैं रेत में मोती
जबकि जानती हूं कि
हर सीप में मोती नहीं होता
फिरभी ढूंढ़ती रही मैं
पानी मरुस्थल में

-- डा. रचना शर्मा

(कविता संग्रह '**अन्तर-पथ**' से साभार)

कुछ अरसे पहले ये चाँद/बेटा था मेरी नानी का
इसमें परियों का डेरा था/हिस्सा था उनकी कहानी का
साथ खेलते खेलते जाने कब/साथी बन गया सपनों का
ये मेरी आँखों में चेहरा/पहचानता था अपनों का...
आजकल ये मेरी/नानी का नाती है
परियों की लिखी/कहानी भरी पाती है...
कल को बने शायद
नाती मेरी मां का
ये हिस्सा है सबके कारवां का
ये रिश्ते बदल के जीता है
हमसे ही रिश्ते लेता है
ये तो पूरा रीता है

-- अनीता मण्डा

आँसू का प्रतिबिंब दिखाए, ऐसा दर्पण कहाँ से लाऊं
बिना बोले जो सुन पाए, ऐसा संबंध कहाँ से लाऊं
प्रेम की बातें सब करते हैं, लेकिन प्रेम कोई नहीं करता
नैनों की भाषा जो समझे, ऐसा प्रेमी कहाँ से लाऊं
फूल पकड़ने की चाहत में, अक्सर हाथ छिल जाते हैं
काँटे नहीं लगे हों जिसमें, ऐसा फूल कहाँ से लाऊं
जिसको देखो इस दुनिया में, लगा तिजोरी भरने में
औरों का भी पेट भरे जो,
वो इंसान कहाँ से लाऊं
दुनिया मेरे गीत सराहे,
मन मेरा तुझे सुनना चाहे
तेरे मन को जो भा जाए,
ऐसा गान कहाँ से लाऊं

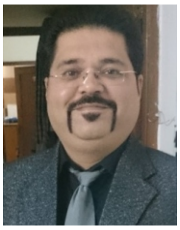

-- भरत मल्होत्रा

आपसे मिले तो आशा हुई/बिछड़े तो फिर निराशा हुई
लेकिन हाँ, /पहले वाली खुशी फिर से मिल गयी
भले दो पल के लिए ही/आपसे मिल कर खुशी तो हुई
आप भी उस दिन के इंतजार में थी
कब हो मुलाकात तुमसे, बेचैन थी
फिर तो वही हुआ जो होना था
फिर से हम दोनों को मिलना था
शुक्रगुजार करूं मैं ईश्वर की
हमें मिला दिए जिनसे मिलना था

-- निवेदिता चतुर्वेदी

मन का जख्मी कोना

नीलिमा शर्मा (निविया)

"कुसुम ! यह सब क्यों हुआ मैंने कभी सोचा भी नहीं था ऐसा!! हाय रे मैं मर क्यों नहीं गया यह दिन आने से पहले!" आंसू भरी आँखों से विकास ने कुसुम के झुर्रियों भरे हाथों को थामा और लाचारगी से उसकी तरफ देखने लगा। कोने वाले कमरे के बिस्तर पर कृशकाय कुसुम विकास के कपकपाते हाथों को थामे टकटकी लगाये छत को देख रही थी।

याद आने लगे उसको वे पल जब उसने एक दुल्हन बन इस आँगन की दहलीज पर पाँव रखा था, ८ भाई-बहनों में चौथे बेटे की बहू थी वो। तब जमाना ही अलग था। शादी तब सिर्फ पति से नहीं पूरे परिवार से होती थी। पति से मन का मिलन हो न हो, देह का मिलन हो जाता था और पूरे परिवार से मन मिले न मिले सर झुकाना पड़ता था। बहुत ही अरमान लेकर उसने भी अम्माजी की देहरी पर माथा टिकाया था। अम्मा जी पूरे राब-दाब वाली बेहद खुबसूरत महिला थी क्या मजाल थी कि कोई बहु या बेटा उनके सामने एक शब्द भी बोल जाये। चक्करघिन्नी सी घूमती सब बहुएं दिन भर काम में लगी रहती। जिसका काम अम्माजी को जरा भी नापसंद आता, उसका रात को पति से पिट जाना लाजिमी था उस घर में। यह रोज का तमाशा था बस सोचना यह होता था कि आज किसका नंबर लगेगा। किसी को किसी से कोई शिकायत नहीं, किसी को किसी से कोई हमदर्दी नहीं थी। साल दर साल परिवार बढता गया, जगह कम होने लगी तो अम्मा जी ने सबसे बड़े बेटे का चौका अलग कर दिया।

शादी के ५ साल बाद कुसुम को भी पति के संग चार बर्तन देकर 'जाओ अपनी घर गृहस्थी खुद बनाओ चलाओ' कहकर घर से पीछे घेर (जानवरों को बांधने की जगह) का रास्ता दिखा दिया गया था। कैसे एक कमरे में कुसुम ने अपने बच्चे पाले, कैसे दिन भर लोगों के स्वेटर बुनकर पैसे कमाए, विकास को कुछ पता नहीं। उसका काम था दिन भर दफ्तर में रहना, उसके बाद अम्मा जी के घर हाजिरी। लौटने तक बच्चे नींद में होते। कभी साथ बैठकर विकास ने दो मीठे बोल भी न बोले।

स्त्री दिन भर काम कर सकती हैं हैं। कम खा सकती हैं एक जोड़ी कपड़े मैं गुजारा कर लेगी बस शाम के वक्त अगर पति दो मीठे बोल बोल दे। लेकिन यह बात हर पुरुष को कहाँ समझ में आती हैं। पैसा पैसा !! करता पुरुष स्त्री पर अहसान करता है कि उसके लिय पैसा कमाया जा रहा है, जबकि स्त्री अपने आप से पैसा खर्च नही कर सकती। उम्र के आखिरी पायदान तक, जीवन का यौवन वो दंभ में गुजार देता हैं कि मैं पुरुष हूँ सृष्टि का रचयिता!! स्त्री तो सिर्फ जमीन है। जबकि वह जमीन ही ९ महीने तक उसके बीज को अपनी कोख में अपने खून से सींचती हैं और तभी उसको मिलता हैं अपना वारिस। उस वारिस को वह गोद में लिए ऐसे खुश होता है जैसे सारा दर्द उसी ने झेला हो और उस नारी की पीडा को समझने के लिए उसके साथ तब भी किसी कोने वाले कमरे का अकेला सा बिस्तर होता है।

कुसुम ने भी ४ बेटों को जना। खून का असर कहो या माहौल का बेटे बाप से भी सवा सेर निकले। बेटियाँ थी दो, जो उसके दुःख को जरा समझती थी। अन्दर से अकेली कुसुम को कब दिल का रोग लगा कोई नहीं जानता था। दिन थे कि गुजर ही रहे थे। आज घर मैं कोई कमी नहीं, न पैसे की, न जगह की। बस कमी थी तो आज भी उस संवेदना की, जो कभी इस घर के पुरुषों ने नारी को कभी दी नही। सब बेटे भी अब बीबियों वाले थे। खुद चाहे आज भी बीबी को जूतों से पीट ले, पर कोई उनको कुछ कहे, तो एक दूसरे का सर फोड़ने को तैयार। और आजकल की बहुये तो माशाल्लाह। खुद काम करे न करे, बेटों के सामने सास को ऐसी लपकती झपकती कि 'मां जी बैठो न, हम हैं काम करने को, आप आराम करिए न।' और बेटों के पलट जाने के बाद- 'अरे, मैं तो थक गयी हूं। हम क्या यहाँ नौकरानी बन जाने के लिए ब्याह कर आई थी। माँ, आप चाय तो बना लाओ।' माँ नौकरानी बन काम करती।

उस सुबह हद ही हो गयी। पता नही कौन सा शनि आज सजा दे रहा था या पिछले जनम के बुरे करम होंगे कोई। सुबह चाय बनाते वक्त कुसुम के काँपते हाथों से दूध का पतीला गिर गया। थोड़ा सा दूध पोते की बांह पर छींटे बनकर गिर गया। बच्चा बाल सुलभ आदत से जोर से चीखा। बेटे ने आव देखा न ताव, माँ पर हाथ उठा दिया। एक बेटे से अपने बेटे का दर्द न देखा गया। उम्र भर पोते-पोतियों की पुचकारियां लेती कुसुम आज खलनायिका बन गयी थी, बेटों, बहु और बच्चों की नजर में। अपने कमरे में रोती कुसुम ने पूरा दिन खाना नहीं खाया, न ही घर-भर में कोई पूछने आया। दो दिन बाद विकास को ही सुध आई। सारी बात जान लेने पर उम्र के इस पड़ाव पर पहली बार उसका पौरुष जागा। उसने जब बेटे से जवाब तलब किया तो जो नहीं होना चाहिए था वही हुआ। अपने बूढ़े बदन पर नील के निशान लिए और लहुलुहान आत्मा से विकास कुसुम के पास लौट आया। इंसान दुनिया से हर कदम पर लड़ लेता है पर हारता है वह सिर्फ अपनी ही संतान के सामने ! सारी उम्र वह खुद अपनी पत्नी को वह सम्मान नहीं देता, जिसकी हकदार वह होती है, तो बच्चे कैसे अपनी माँ को सत्कार करे जिसको उसने उम्र भर तिरस्कृत होते देखा हो?

कुसुम का हाथ थामे विकास खड़ा था उस चौराहे पर। जहा सोच के सब रास्ते खंडित हो जाते हैं कि कहां क्या गलत हुआ और शून्य में ताकने के सिवा कुछ भी नहीं रहता। और आज जख्मी था आज दोनों के मन का कोना, अपनी अपनी परिधि में। ■

बड़ी बहिन

किरण सिंह

मैं रागिनी के यहाँ कुछ दिनों के लिए गई थी। हम लोग सोफे पर बैठ कर आपस में बात कर रहे थे तब उसकी कामवाली की बहन मुनिया चाय लेकर आई। मुझे प्रणाम कर फिर वह अपना काम निपटाने जा रही थी। मैंने उसे आशीर्वाद देते हुए उससे पूछा- 'तुम्हारी बहन कहाँ है? वह क्यों नहीं आई है?' उसने मुस्कुराते हुए कहा कि दीदी को देखने के लिए लड़का आया है, दीदी को पसंद भी कर लिया है। वो उसी के साथ उसका घर देखने के लिए गई है! मैं अभी कुछ और पूछती कि रागिनी ने मुनिया को काम करने को कहा और कहने लगी 'हाय रे किस्मत! पता नहीं भगवान् ने किस मनहूस घड़ी में लिखा है इसका भाग्य कि बेचारी को लड़के के बारे में खुद ही पता लगाना पड़ रहा है!'

तब तक वो कामवाली बुचिया भी आ गई। उसकी उम्र लगभग सत्रह अट्ठारह वर्ष होगी! रागिनी उसकी तरफ मुखातिब होकर लड़के के बारे मे पूछ रही थी कि कहाँ का रहने वाला है, कैसा उसका घर है आदि आदि। और फिर बीच बीच में हिदायत भी दे रही थी कि लड़के को मुझसे मिलवाना जरूर। मेरे मन में उठते हुए कौतूहल को शायद रागिनी समझ गई थी, तभी मेरी तरफ मुखातिब होकर बोलने लगी- 'डर लग रहा है कि कहीं शादी के बाद लड़का इसे बेच ना दे।' फिर बड़े ही दुखी होकर कह रही थी कि कौन है इसका खोजखबर लेने वाला! फिर सुनाना शुरू कर दिया उनकी हृदय को द्रवित कर देने वाली कहानी। कहने लगी- जब बुचिया चौदह वर्ष की उम्र की थी, तभी उसके पिता का देहांत हो गया। हाथ पैर पीट-पीटकर रो रही थी बुचिया, कोई सहारा नहीं दिखाई दे रहा था उसे। कभी-कभी तो बेहोश भी हो जा रही थी। किसी भी तरह उसकी मां ने अपने को सम्हालते हुए तीनों बच्चों को सम्हाला, तब मुनिया नौ वर्ष की और उसका भाई तीन वर्ष का था!

पर इतने से ही ईश्वर को संतोष नहीं हुआ पिता के दसवीं के दिन ही हार्ट अटैक से इनकी माँ का भी देहांत हो गया! उनके पास ना रहने का ठिकाना था, न खाने को कोई रोटी देने वाला था! कुछ पड़ोसी उन्हें अनाथालय में डालने का सुझाव दे रहे थे। किन्तु बुचिया ने कहा कि हम जहाँ पर भी रहेंगे तीनों भाई बहन साथ

(शेष पृष्ठ १४ पर)

यह देश अपना यूं ही जवां और हसीं रहे
जब तक कि आसमां रहे और जमीं रहे
खुशियां सभी यहीं रहें जन्नत यहीं रहे
पहलू में प्रेम-एकता की महजबीं रहे
हम ढूंढ़ते ही रह गये जिनको तमाम उम्र
अब आये हैं वो मिलने को जब हम नहीं रहे
गुलशन बदल-बदल के भी हम फिर रहे यहीं
जिस बाग में बहार रही
हम भी वहीं रहे
'नासिर' को संगदिल जो
समझते हैं उनको हम
कैसे बतायें दिल कहीं,
'नासिर' कहीं रहे

-- डा. मिर्ज़ा हसन नासिर

(ग़ज़ल संग्रह 'ग़ज़ल गुलज़ार' से साभार)

मैं न सोया रात सारी, तुम कहो
बिन मेरे कैसे गुजारी, तुम कहो
हिज्र आँसू दर्द आहें शाइरी
ये तो बातें थीं हमारी, तुम कहो
हाल मत पूछो मिरा, ये हाल है
जिस्म अपना, जां उधारी, तुम कहो
रख दो बस मेरे लबों पे उंगलियाँ
मैं सुनूँगा रात सारी, तुम कहो
फिर कभी अपनी सुनाऊंगा तुम्हें
आज सुननी है तुम्हारी, तुम कहो
रोक लो कान्हा उसे, जाता है वो
वो नहीं सुनता हमारी, तुम कहो

-- प्रखर मालवीय 'कान्हा'

लहू चराग जलाते हैं रात भर अपना
कहीं दिखाती है तब रूप ये सहर अपना
दुआयें माँ की दिखाती हैं जब असर अपना
बलायें भूल ही जाती हैं सब हुनर अपना
किसी भी हाल में माँ को न कोई ठेस लगे
खुद के लहू से सींचती है वो शजर अपना
शिकस्त है ये यकीनन मेरी मुहब्बत की
बना न पाया किसी को मैं उम्र भर अपना
जुल्म इंसान का जब हद से गुजर जाता है
जमके बरसाती है कुदरत ये तब कहर अपना
भूल पाता नहीं पल भर को तुझे, मेरे वतन
याद आता है हर घड़ी, वो घर-शहर अपना
किसी के नूर से रोशन है ये महफिल मेरी
बना लिया है अब उसे ही राहबर अपना
बनाई है तेरी तस्वीर यूँ मुसव्विर ने
कि रख दिया है कलेजा
निकाल कर अपना
दिया है साथ सदा
हौसलों ने 'भान' मेरा
हुआ खुशी से मुकम्मल
हर-इक सफर अपना

-- उदयभान पाण्डेय 'भान'

कहानी है बड़ी दिलचस्प अपनी जिंदगानी की
किसी जलते तवे पर गिर पड़े ज्यों बूंद पानी की
अगर चाहो तो कोई फिल्म तुम इस पर बना लेना
सुना है तुमको भी पहचान है अच्छी कहानी की
जरा सोचो तुम्हें वो किस कदर अपना समझता है
कि जब भी बात उसने की तुम्हारी ही जुबानी की
मुझे नफरत से नफरत है मुझे नफरत से मत देखो
मुहब्बत में बसी रहती
है खुशबू रातरानी की
यकीनन वो मुझे इक दिन
'मिलेगा 'शान्त' जीवन में
सदा खाली नहीं जाती
कभी संतों की बानी की

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

(हिन्दी ग़ज़ल संग्रह 'तलाश' से साभार)

जब से बेटे से बिछड़ी वो खाना-पीना भूल गयी
ऐसा लगता है जैसे माँ जीवन जीना भूल गयी
बेटा पेड़ बना पौधे से माँ ने यूँ खुशियाँ पायीं
उसको सींचा देकर कितना खून-पसीना भूल गयी
बेटे के बेटे की खातिर कितने कपडे सी डाले
खुद का दामन तार-तार था उसको सीना भूल गयी
जब भी उसको पढ़ती है वो रोती खूब अकेले में
कब आया था बेटे का खत साल-महीना भूल गयी
जितना प्यार बड़े से उसको छोटे से भी उतना है
किसने उसको पहुँचाया सुख
किसने छीना भूल गयी
जब बरसों का बिछड़ा बेटा
दरिया के उस पर दिखा
कूद पड़ी पानी में पगली
और सफीना भूल गयी

-- डा. कमलेश द्विवेदी

खोलो मन के द्वार बंद क्यों?
संवादों के तार बंद क्यों?
अहंकार की खुली मुट्ठियाँ
प्रेम-पुष्प उपहार बंद क्यों?
क्या चुनाव फिर चलकर आए?
सर्पों की फुफकार बंद क्यों?
मदिरा के पट खुले बारहा
रोटी के बाजार बंद क्यों?
सत्य कहें जो उन मुद्दों का
करती मुख सरकार बंद क्यों?
जब भी तुमसे मिलने आएँ
मिलते दर हर बार बंद क्यों?
शूलों के पहरे में आखिर
फूलों के परिवार बंद क्यों?
फर्ज, जन्म देना औरत का
मिले जन्म, अधिकार बंद क्यों?
दीनों हित दहलीज "कल्पना"
तेरी हे करतार! बंद क्यों?

-- कल्पना रामानी

मैं रोता भला था, हँसाया मुझे क्यों
शरारत है किसकी, ये किसकी दुआ है
मुझे यार नफरत से डर ना लगा है
प्यार की चोट से घायल दिल ये हुआ है
वक्त की मार सबको सिखाती सबक है
जिन्दगी चंद सांसों की लगती जुआ है
भरोसे की बुनियाद कैसी ये जर्जर
जिधर देखिएगा धुँआ ही धुँआ है
मेहनत से बदली 'मदन' देखो किस्मत
बुरे वक्त में जमाना किसका हुआ है

-- मदन मोहन सक्सेना

कब से तुम्हे निहार रही हूँ नयन उठाकर देखो तो
मै खारा समुद्र पी जाऊं प्राण अगर तुम हँस दो तो
आओ सेतु रचें पलकों से जो टूटे मन को जोड़े,
अश्रु-बिंदु की जलधारा है, इसको अँजुरी में लो तो
प्रीति छुपी मन के भीतर जो, तुमसे मैं बतला न सकी
प्यासे अधरों की भाषा को एक बार तुम पढ़ लो तो
नहीं चाहिए धन अरु वैभव, दे दो थोड़ा प्यार मुझे
अपना सब कुछ तुम्हें सौंप दूं
एक बार तुम कह दो तो
नया उजाला लेकर आई
सूरज की स्वर्णिम किरणें
क्षितिज पार उड़ चलें धरा से
साथ अगर तुम दे दो तो

-- लता यादव

निशा की गोद में शब भर दिया लेकर भटकता है
कोई पूछे तो ये पागल सा चंदा ढूंढता क्या है
रपट लिख लो दरोगा जी मेरा महबूब खोया है
मुझे शक चाँद पर साहिब सुबह से घर में सोया है
नहीं शब ने बताया है न पेचोखम ए बिस्तर ने
नहीं सोई फकत रोई रूमालो हाल कहता है
खड़ी कर दूं कतारें मैं वफा के ताजमहलों की
तुम्हें मुमताज होने से
बताओ किसने रोका है
भरी महफिल में होकर भी
रहा 'आलोक' तन्हा ही
तुम्हारे इश्क में जानम
गजल ही गुनगुनाता है

-- अनन्त आलोक

नींद अपनी से दगा न कर, रातभर तू जगा न कर
वो बे-ईमान वाले हैं हाँ, बार बार उनसे मिला न कर
जो दूर है निगाहों से तेरी, उन्हें दिल से जुदा न कर
फैसले ठन्डे दिमाग से ले
जल्दबाजी यूँ ही किया न कर
इक दिन तू पत्थर हो जायेगा
ऐसे अश्क अपने पिया न कर
'विंकल' हमराही बना किसी को
इस उम्र में तन्हा जिया न कर

-- गौरव कुमार 'विंकल'

गुरु की धरोहर

शांति पुरोहित

सदर बाजार में पीपल के पेड़ के गटे पर टाट-पट्टी बिछा कर बैठता था पन्ना लाल! उसके दाई और एक लकड़ी की पेटी रखी रहती थी, जिसमें उस्तरा, कैंची मशीन और कंघा रहता था। पास में ही पानी की बाल्टी रखी रहती थी, वो बाल काटते वक्त पानी उसी में से लेता था। उन दिनों आज की तरह ब्यूटीपार्लर का चलन नहीं हुआ करता था। लोग-बाग यहाँ नाई के पास आकर बाल कटवा लिया करते, हजामत भी करवा लेते थे। पूरे दिन खटने के बाद भी पन्ना की कमाई दो-तीन रुपया ही होती थी। शहर से दूर कच्ची बस्ती में मकान बस्ती वाले लोगों के बने हैं, वहीं पर पन्नालाल का भी घर है। घर की दीवारें गारे-गोबर की और छत खपरेल की बनी थी। घर की औरतें फर्श को गारे से लीप लेती थीं।

पन्ना ने सोचा 'खाली बैठने से तो बैगार ही भली' ये लोग जहाँ ज्यादा घर होते हैं, वहीं किसी गली के मोड़ पर या किसी दरख्त के नीचे बने गटे को अपना ठिकाना बना लेते हैं। आस-पास के घरों के लोग इनके पास आते रहते हैं जिनसे इनकी रोजी-रोटी चलती रहती है, और लोगों को अपने इस काम के लिए ज्यादा दूर भी नहीं जाना पड़ता है।

गाँव में कोई मरता है, तो ये वहां जाना पहले पसंद करते हैं, क्योंकि वहां एक ही दिन में अच्छी कमाई हो जाती है। जो बाप का काम, वही पन्ना का काम, और अब अपने बेटे को भी पन्ना इसी काम में लगाना चाहता था। कई बार अपने बेटे सोहन को दूकान पर बैठा कर पन्ना घरों में लोगों की कटिंग करने चला जाता था। सोहन ने काम तो अभी तक कुछ भी नहीं सीखा था। जहाँ पन्ना बैठा करता था, वहां सामने बने आलीशान घर में सीनियर सेकंड्री स्कूल के प्रिंसिपल साहब अपने परिवार सहित रहते थे। तेज गर्मी, सर्दी और बरसात में पन्ना उन्हीं के घर के आगे बने बरामदे में बैठ जाया करता था।

पन्ना की इतनी आमदनी नहीं थी कि वो सोहन की पढ़ाई चलने दे। पांचवीं पास करते ही सोहन का स्कूल से नाम कटवा लिया और धंधे पर लगा लिया। पर एक बार सोहन स्कूल क्या गया, उसका मन अब पढने के सिवा किसी और काम में नहीं लगता। अक्सर सोहन प्रिंसिपल जी के घर से पढने के लिए कोई किताब मांग कर ले आता और दुकान पर पढ़ता रहता। प्रिंसिपल जी की नजर से ये छुप नहीं सका कि सोहन को पढ़ने का मौका मिले, तो ये पढ़-लिख कर बहुत बड़ा आदमी बन सकता है।

सोहन की पढ़ने की लगन देख कर प्रिंसिपल साहब ने एक दिन पन्ना से पूछा-"तुमने सोहन को पढ़ने से क्यों रोका? वो बहुत होशियार है, पढ़ने में उसकी बहुत रूचि है, मैं चाहता हूँ तुम उसे पढ़ाने के बारे मे एक बार फिर से सोचो? मैं मदद करने को तैयार हूँ, तुम ठीक समझो तो जरुर बताना, मैं तुम्हारे जवाब की प्रतीक्षा करूँगा।"

"कैसे हां करूं साहब?" अपनी लाचारी व्यक्त करते हुए पन्ना बोला, "सुबह से शाम तक खटता हूँ तो भी बच्चों के पेट पालने तक की कमाई नहीं होती है, तो इसकी फीस, किताबें, कापियों का खर्चा कहाँ से निकालूंगा।" ये तो प्रिंसिपल साहब जानते ही थे कि पन्ना की मुख्य समस्या यही रही होगी। प्रिंसिपल साहब ने कहा "देखो, बच्चे को पढ़ते हुए तो तुम भी देखना चाहते होगे, तो ये खर्च की चिंता तुम मुझ पर छोड़ दो, ये सब मैं देख लूँगा। अगर सोहन का मन पढ़ने में वापस लगता है तो इसके पढ़ने का खर्च मैं करूँगा।"

पन्ना लाल बहुत खुश हुआ और कहा "आप मेरे बच्चे के लिए इतना सब करने के लिए तैयार हैं, तो ये बहुत बड़ी मदद होगी सोहन के भविष्य के लिए, मेरे सारे परिवार के लिए बहुत बड़ी बात है। आप बड़े दयालु हो। आपके दिल में हम जैसों के लिए इतनी दयालुता देख कर मैं आपमें भगवान के दर्शन कर रहा हूँ। आपको भगवान खूब बरकत दे।"

सोहन ने उसी दिन प्रिंसिपल साहब को अपना गुरु माना। उनके निर्देशन में उसने दसवीं क्लास में दूसरी पोजीशन लाकर साबित कर दिया कि प्रिंसिपल साहब ने उस पर विश्वास करके कोई गलती नहीं की थी। उसने उनकी उम्मीद पर खरा उतरना शुरू कर दिया। गाँव और स्कूल का नाम रौशन किया। पन्ना के कुटुम्ब, परिवार में यहाँ तक पूरी जात में सोहन पहला बच्चा था, जिसने दसवीं पास की, वो भी पोजीशन के साथ। प्रिंसिपल साहब आज से दस साल पहले कलकता से आये थे, तब से इसी हाई स्कूल के प्रिंसिपल थे। गरीब, प्रतिभाशाली बच्चों को सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं से मदद दिला कर उन्हें आगे बढ़ने में हमेशा मदद करते थे। अब तक सैकड़ों बच्चों को वो पढ़ने के अवसर उपलब्ध करा चुके थे और ऐसी प्रतिभाओं को तराशने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते थे। गाँव वाले उनकी बहुत इज्जत करते थे।

अपनी मेहनत और लगन से सोहन ने सीनियर भी अच्छे अंक के साथ उतीर्ण कर ली। अब पन्ना उसे अपने पुश्तैनी काम में लगाना चाहता था। चाहता था कि सोहन काम में मदद करेगा तो कमाई ज्यादा होगी। पर प्रिंसिपल साहब को ये पता चला तो कहा- "पन्ना पहले तुम सोहन की राय तो जान लो, वो क्या चाहता है।" सोहन को पूछा तो उसने कहा "मेरा फर्ज बनता है

(शेष पृष्ठ २० पर)

बदलते रिश्ते

अंशू प्रधान

सुनंदा एक पढ़ी लिखी छोटे कद की साधारण नैन नक्श की लड़की थी। अपने माँ-बाप की लाड़ली दो भाइयों में अकेली, होशियार इतनी कि सारा शहर सुनंदा के गुण गाते नहीं थकता। कढ़ाई चित्रकला गायन वादन नृत्य सभी में निपुण, इसीलिए सुनंदा की माँ को कभी उसके विवाह की चिंता नहीं हुई। संयोग से सुनंदा के लिए अच्छा लड़का मिल गया। लड़का बैंक में कार्यरत था तो माँ बाप ने कुछ और जानकारी करने की कोशिश ही नहीं की और अफरा-तफरी में सुनंदा का विवाह हो गया। सुनंदा का पति खुद शहर में रहता था लेकिन उसके भैया भाभी गाँव में रहते थे। माँ बाप नहीं थे, भाई भाभी ने ही पाला था योगेन्द्र को।

सुनंदा और उसके घर के लोग यही सोच रहे थे कि वह तो शहर में रहेगी शादी के बाद गाँव से उसे क्या मतलब? मगर जब योगेन्द्र सुनंदा को विदा करा कर ले गया, तो उसने सुनंदा को गाँव में छोड़ दिया। सुनंदा की बिल्कुल इच्छा नहीं थी, मगर क्या करती? किसी तरह गाँव के परिवेश में ढाला खुद को मगर उसे उपले बनाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता, एक दिन कह दिया पति से कि वो ये नहीं कर पायेगी। इसी बात पर बात बढ़ गयी और गुस्से में उसे उसका पति उसके घर छोड़ गया उसकी भी जिद थी कि जैसे ससुराल में रखेंगे वैसे ही रहना होगा!

माँ बाप को भी बुरा लगा और लड़की को विदा नहीं किया। ये कहते हुए कि जब दिमाग ठिकाने पर हो, तब ले जाना। इसी बीच सुनंदा माँ बन गयी, एक बेटी को जन्म दिया। सब ठीक ठाक चलता रहा किसी प्रकार से और बड़े भाई का भी विवाह हो गया। समय गुजरता गया और दस साल गुजर गए। हमेशा लोगों के बीच उसे लेकर बातें होती कि दोनों पति पत्नी में सुलह हो गयी है वो वापस अपने घर जा रही है। माँ बाप अपनी पे अड़े थे और दामाद अपनी पे। दोनों के बीच सुनंदा कभी एक छोर पर खड़ी दिखाई देती, तो कभी दूसरे छोर पर।

कई बार सिर्फ अहम् को पोषित करते रहने के किये भी इंसान जिन्दगी में सब कुछ खो देता है खासकर वहां जहां प्रेम नहीं होता वहाँ ये स्थिति उत्पन्न होती है और संभलती इसलिए नहीं क्योंकि रिश्ते भावनाओं पर नहीं स्वार्थ पर टिके होते हैं। इसलिए किसी भी पक्ष को किसी के दिल की चिंता नहीं होती और इन सब में मरता वो है जिसके पास दिल होता है दुनियां का कड़वा सच!

(शेष पृष्ठ १४ पर)

काले दिनों में/तुमने आँखें खोली हैं/मेरे बच्चे
अब तो बस तू/नज्मों में ही पढ़ेगा
स्वर्ग से सुंदर धरती की बातें
सच तो यही है कि/तेरी जाई ने भी
कई दिनों से नहीं पढ़ा कुछ/जिंदगी जैसा
काले दिनों का/चेहरा ही ऐसा है जो
याद रहेगा जिंदगी भर/किसी अजीज की बेवफाई सा
क्या कुछ नहीं हो रहा/इन काले दिनों में
प्रीत के हुंकारे/भीग गये हैं लहू में
मातम की आमद हुई है/घर घर उग आये हैं कब्रिस्तान
गढ़ गये हैं हर सर पर/पहचान के झंडे/रंगों के साथ
इन काले दिनों में/मैं जब भी चलती हूँ सड़क पर
जब भी टेक लगा बैठी हूँ/पेड़ के नीचे
तो मेरी आँखों के सामने आये हैं
सिर्फ किलोमीटर तय करते/सरकारी पुर्जे
या मैंने रुदन सुना है/बदरंग आसमानों का
सरसों के फूलों का/सुनहरी कनकों का
कुलांचे भरते हिरनों का/या सफेद रंगहीन होठों का
काले दिनों का जिक्र मैंने/सांझ ढले ही छेड़ दिया है
दादी कहती थी/सांझ ढले छिड़ी बात की छाप
मस्तक में कहीं गहरे छप जाती है
मैं कोशिश करती हूँ/कोई नज्म लिख सकूं
तारों में हंसते आसमान की
किसी ममता की पहचान सी
दरिया के निष्पाप उछाल सी
और तुम उसको सांझ ढले
बैठ कर सुन सको
ताकि तुम्हारे जहन में
सुंदर पृथ्वी की/गहरी छाप बन जाए ..!!

-- ऋतु शर्मा

जैसे रूई धुनें जुलाहे/श्रमिक अंधेरों को धुनते हैं,
किरणों की चादर बुनते हैं/एक उम्र के जितनी लंबी
दुर्घटना बन कर जीते हैं/सब कुछ पाकर भी रीते हैं,
पंछी बन कर तिनका तिनका/निज अस्तित्व-बोध चुनते हैं।
अपने सपनों की राहों में/सदियों से ये खड़े हुए हैं
बुत जैसे हों, गड़े हुए हैं,/मानों कोई मील का पत्थर
इतिहासों से यह सुनते हैं!/गहन तिमिर में सजा काटते
किसी उजाले के अपराधी/भुगत रहे हैं निज बर्बादी,
स्वयं एक दिन विस्फोटित हो/कीट-पतंगों सा भुनते हैं!

-- कृष्ण 'सुकुमार'

मौत की दहलीज पर/खड़े वृद्ध ने/कहा-अपने पुत्र से
तुम्हें देने को/कुछ नहीं मेरे पास
सदा रोटी खायी/ईमानदारी की
हमेशा साथ दिया/सच्चाई का
हो सके तो/रखना एक बात याद
यदि कभी
काम, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, द्वेष का
पनपे भाव मन में/चले जाना श्मशान की ओर
कुछ पलों के लिए/बेहिचक, बेझिझक!

-- मुकेश कुमार सिन्हा

मेरा दर्द/पल पल बढ़ती/दीवार पर चढ़ी
उस बेल की तरह है/जो हर बार
आकाश छूने की कोशिश में/लुढ़क जाती है जमीन पर
मेरा दर्द/सीने में कील की तरह/चुभता है
इतनी गहराई से कि/मैं चिल्ला भी नहीं सकती
मेरा दर्द/जब तक कमरे में/खामोश सा पड़ा रहेगा
तब तक शांति की/कालीन बिछी रहेगी
दर्द खामोश रहेगा/कालीन उठते ही/मेरा दर्द
चीखने चिल्लाने लगेगा
मेरा दर्द/अपने अश्कों से
ना मालूम कितने तूफान
लाएगा जब होगा
इस दर्द से सामना
समस्त संसार का

-- सरिता दास

आकाश की आँखों में/रातों का सूरमा
सितारों की गलियों में/गुजरते रहे मेहमां
मचलते हुए चाँद को/कैसे दिखाए कोई शमा
छुप छुपकर जब/चाँद हो रहा है जवां
चकोर को डर/भोर न हो जाएँ/चमकता मेरा चाँद
कहीं खो न जाए/मन बेचैन आँखें/पथरा सी जाएगी
विरह मन की राहे/रातें निहारती जाएगी
चकोर का यूँ बुदबुदाना/चाँद को यूँ सुनाना
ईद और पूनम पे
बादलो में मत छुप जाना
याद रखना बस
इतना न तरसाना
मेरे चाँद तुम खुद
मेरे पास चले आना

-- संजय वर्मा 'दृष्टि'

मुक्तक

प्रेम की अविरल बहेगी धार जब,
खिलखिलायेगा सकल संसार जब।
तब किसी मन में ना होगी कामना
सत्य से हो जाओगे दो चार जब।।
रास्ते हो जाय सब दुश्वार जब,
पाँव चलने से करें इंकार जब।
है सहारा एक बस परमात्मा,
बेसहारा छोड़ दे संसार जब।।

-- चन्द्रकान्ता सिवाल 'चंद्रेश'

दिल में समाकर जिसने, गुलिस्ताँ नहीं देखा
हमसफर बन साथ चलते, बागवाँ नहीं देखा
मंजिलें देखी बहुत, प्यार पर एतवार नहीं
कब राह चलते मिल गये, आसमाँ नहीं देखा
हे कृषक तेरा पसीना लहू बनकर झूमता है,
शक्ति , शौर्य, प्रेम से हर जिगर को चूमता है
रात -दिन जो एक करता अन्नदाता है व्यथित
तंगहाली जिंदगी में मौत से नित जूझता है

-- राजकिशोर मिश्र 'राज'

मेरा सौन्दर्य तुमसे अछूता रहा/आज तक न जान पाई
सूने माथे में/मैं मासूम दिखती हूँ/या
सिंदूरी मांग/मुझमें रक्तिम आभा भरती है-
सुहाग चिन्ह जरूरी थे/सुहागन दिखने के लिए
मैं कहती हूँ/दिखने से ज्यादा होना जरूरी है
एक एक कर उतारती गई
तुम्हारे होने के सबूत सारे निशान
बिंदी से लेकर बिछीया तक
एक एक गिरह खुलता गया
सातों वचनों का
अंतिम गिरह बाकी है
बस इस बार
पदचाप भी न सुन सकोगे मेरा

-- सीमा संगसार

पीर है ठहरी हृदय में जाँचती
द्वन्द या दुविधा दृगों से बाँचती
आस के उत्कल, बसन्ती थे कभी
रात ठहरी है, भुजाओं में अभी
श्वाँस में खंजर हवाएँ काँपती
प्रीत के पन्ने सभी निकले फटे
घाव थे कल तक, दबे वे सब खुले
पट्टियां फिर भी व्यथाएँ बाँधती
रोकती मुझको मेरी ही मर्जियाँ
दौड़ती है पसलियों में बर्छियाँ
दस्तकें लेकिन कहा न मानती
बंस वट तो है, सुगंधों से लदे
हम कहीं गहरे कुँए में है धँसे
दर्द कितना है ये कैसे नापती

-- रामेश्वर सिंह राजपुरोहित

रह-रह कर मन में क्यों कसक उठ जाती है
मेरे दिल पर दर्द की क्यों दस्तक दे जाती है
जितनी भी कोशिश करता हूँ उसे भूलने की
उतनी ही अधिक उदासी मन में छा जाती है

-- रमेश कुमार सिंह

क्षणिकायें

१-भ्रमण

तुमसे पल भर को भी/जुदा होना चाहता नहीं मन
तेरे आसपास ही भंवरे सा/करता रहता भ्रमण

२- रूप

छाँव हो या धूप/हर जगह दिखलाई
देता है मुझे/तेरा ही रूप

३. मुलाकात

हर मुलाकात को/आखरी मान कर
मिला करो/क्योंकि जिंदगी का
कोई भरोसा नहीं होता

४. लब

खामोश रहते है तेरे लब
समझ लेता हूँ मैं/उनकी खामोशी का मतलब

-- किशोर कुमार खोरेन्द्र

इंसानियत

'अरे सुनीता, तुम इतनी जल्दी कैसे आ गई? अभी परसो ही तो गांव का बोलकर गई थी कि दस दिन नहीं आऊंगी माता रानी को चुंनरी चढ़ानी है, ब्राह्मण भोज करवाना है। फिर आज कैसे आ गई?' सुनीता मेरी कामवाली दो दिन पहले ही मुझसे दस दिन की छुट्टी और मेरे पास अपने जमा किये हुऐ पाँच हजार रुपये लेकर गांव का बोल के गई थी और आज उसे यूं सामने देख मैं आश्चर्यचकित हो गई और सवाल पूछ डाले?

'वो क्या है ना भाभी, मैं गांव ही जा रही थी मगर पहली रात मेरी बाजूवाली अम्मा की तबियत बहुत खराब हो गई। एकदम से उसका पूरा शरीर अकड़ गया। कोई तैयार नहीं हुआ उसे अस्पताल ले जाने के लिए। मुझे बहुत दया आई, उसे सरकारी दवाखाने ले गई, मगर वहां किसी डाक्टर को पड़ी नहीं थी उस बुढ्ढी को देखने भर तक की, तो मुझे उसे पास वाले निजी दवाखाने ले जाना पड़ा, वहां पैसे जमा कराने पडे और कुछ की दवाई फल वगैरह ले आई।कल भी पूरा दिन वही थी। रात को उसे छुट्टी दी तो घर ले आई ।

उसका कोई नही है संसार में हम आस पड़ोस वाले ही उसे खाने पहनने को कुछ दे देते हैं। और माता की चुनरी का क्या है, अभी नहीं तो दो तीन साल बाद ही सही चढ़ा आऊंगी। शायद माता रानी इस रूप में मेरी भेंट चाह रही हों, यही सोच कर खुद को मना ली।'

उसके इस बेबाक जवाब पर मैं उसका मुंह ही देखती रही। एक एक पैसा जोड़कर उसने सपना देखा था गांव में माता को भव्य रुप से चुनरी चढाने का और पांच ब्राह्मणों को भोज करवाने का। उसके लिए जाने कब से पैसे इकट्ठे कर रही थी मेरे पास वो।

उसके इस मन की सुंदरता को पहचानकर मैं उसे अपलक निहारे जा रही थी और वो इन सब से बेफिक्र वह अपने काम में व्यस्त हो गई। हम सामाजिक दायित्वों का दावा करने वाले जेब से एक रुपया खर्च करने से पहले सौ बार सोचते हैं और इस छोटे रूप से मेहनत मजदूरी करने वाली ने बेहिचक अपनी पूंजी वहां न्योछावर कर दी जहां से वापस आने की कोई उम्मीद ही नहीं। शायद इसे ही इंसानियत कहते हैं।

-- एकता सारदा

बुनियाद

बेटे ने घर में कदम रख ही था कि माँ ने कहा, 'बेटा! इससे पूछ, आज यह पराये मर्द के साथ मोटर साइकिल पर बैठकर कहाँ गई थी?'

'मांजी! ये आफिस से थके हुए आए है इन्हें चाय पीने दो. फिर आराम से बात करते हैं।'

'क्यों? अपनी बात छुपाना चाहती है. दूसरों के साथ मोटर साइकिल पर जाती है. लोग क्या कहेंगे?'

'मांजी! ऐसी कोई बात नहीं है. आप बाजार गई थी, सो आप को बता नहीं पाई. इनका फोन बंद था.'

पति सास-बहु के विवाद से परेशान हो गया था जिससे उस के विश्वास की बुनियाद भी हिलने लगी थी, 'बता क्यों नहीं देती, कहाँ गई थी? ताकि विवाद थम जाए.'

'तो सुनो. वह पराया आदमी आपकी माँ के फूफाजी का लड़का व मेरी मौसी की लड़की का पति था. उनकी पत्नी को सड़क दुर्घटना में चोट लगी थी. यदि मैं वक्त पर अस्पताल खून देने नहीं पहुंचती तो वो भी आपके पिता और मांजी, आपके पति की तरह दुनिया से जा चुकी होती.'

-- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

बड़ी सोच

सेठानी रसोईघर में बरतन समेटते हुए बड़बड़ाए जा रही थी, तभी पड़ोसन आ धमकी जले पर नमक छिड़कने।

'क्या हुआ पुरसोत्तम की माँ, क्यों सुबह-सुबह इन बेजान बरतनों पर बिगड़ रही हो?'

'अरे सुमित्रा बहन, आओ, आओ, देख ना सूरज सिर पर चढ़ आया पर वो सुगना है कि अभी तक नहीं आई, घर का सारा काम पड़ा है।'

'पुरसोत्तम की मां शायद तुम भूल गयी, वो कल ही बता तो रही थी कि उसकी बहू भी माँ बनने वाली है, हो सकता है इसीलिए देर हो गयी हो।'

'अरी हां, मुझे तो याद ही नहीं रहा, जरूर उसके घर खुशियाँ बरसी होंगी। जरूर उसका पोता हुआ होगा। कल शर्मा जी के घर भी पोता हुआ है। भगवान को हमारा ही घर मिला था पत्थर बरसाने को। पता नही मरने से पहले पोते का मुंह देख भी पाउंगी या नहीं।' दुखी होते हुए सेठानी बोली।

तभी दरवाजा खुला हाथ में मिठाई का डिब्बा लिए हुए सुगना आती हुई दिखायी दी। उसके चेहरे से खुशी टपक रही थी। चहकते हुए बोली, 'लो सेठानी जी पहले मुंह मीठा करो।' कहते हुए उनके मुख में मिठाई का टुकड़ा रखने लगी तो सेठानी बोली, 'तुमने आज इतनी देर कर दी, पता है घर में कितना काम था?'

'बीबी जी, मेरे घर लक्ष्मी आई है, मेरी पोती हुई है। अब तम्ही बताओ बहू को खिलाना-पिलाना था, बच्ची को नहलाने धुलाने में टेम तो लगेगा ना।'

'पर बीबी जी थम क्यूं उदास बैठी हो? अपनी रमा बहू ना दिखाई दे रही, तबियत तो ठीक है ना!'

'कल रात से अस्पताल में है, सबेरे-सबेरे मनहूस खबर आ गयी कि बहू ने फेर छोरी पैदा कर दी। मेरा तो मन भी नहीं उसका मुँह देखने का। इसी खातिर मैं अस्पताल भी ना गयी।' माथे पे हाथ रख के मायूस होते हुए सेठानी ने कहा।

'अरे वाह सेठानी, घर में देवी आई और थम हो के मातम मना रही हो? म्हारा जिगरा देखो, मजदूरी करके पेट भरें, फेर भी पोती होण की खुसी मैं सारी बस्ती में मिठाई बांट कर आ रही हूं। थारे धोरे तो बहोत धन दौलत है, अपनी पोती न पढ़ा-लिखा के इतना बड़ा बनाओ के एक दिन थारा नाम रोशनी करै। आज छोरियां के ना कर सकैं ? थम हो के खुसी मनाने के बजाए रो रही हो।'

'सुगना सच में तू तो बहुत समझदार है, तूने तो म्हारी आंखें ही खोल दी, चल जल्दी से चल अस्पताल, पोती न देख के आसीरबाद दूंगी, और सब को मिठाई भी खिलाउंगी।' खुशी खुशी-खुशी सुगना का हाथ पकड़कर सेठानी अस्पताल की ओर चल दी।

-- सुरेखा शर्मा

जहां चाह वहां राह

चाहत पर ही सब निर्भर है। हम आप जो ठान लेते हैं उसे पूरा कर ही दम लेते हैं। सफलता विफलता हमारी इच्छा शक्ति पर ही निर्भर है।

दो भाई थे। दोनों भाई को पढाने के लिए उनकी माँ बहुत मेहनत करती थी। लेकिन बडे भाई को पढने की ही इच्छा नहीं थी। उसकी माँ बहुत परेशान रहती थी। बहुत प्यार से शिक्षा के गुण बताती। कभी झूंझला कर डांट देती। कभी सजा देती तो, बेटा गुस्से में बोलता- 'देखतअ बानी कि कइसे पढाअ लेतअ बाड़ू तू...।'

माँ बेटे को स्कूल भेजती। बेटा घर लौट कर बाहर में छिप कर खिड़की पर बैठ जाता। छुट्टी का समय होता तो घर में आ जाता। बड़े बेटे के लिए घर में भी शिक्षण की व्यवस्था की जाती। पढता छोटा बेटा। अंततः बड़ा बेटा नहीं ही पढ़ा लाखों जतन के बाद भी। पूरा परिवार के शिक्षित होने के बाद भी।

बड़ा बेटा बड़ा हुआ, शादी हुई, उसे भी बेटा हुआ, अपने बेटा को भी पढ़ने के लिए प्रेरित नहीं किया, जिससे उसका बेटा भी बिना पढ़े रह गया।

इच्छा शक्ति ऐसी दृढ होती है। लक्ष्य सही गलत अलग बात है ।

-- विभारानी श्रीवास्तव

मुझपे ममता का रंग डाला है
मेरी आँखों में जो उजाला है
बस दुआ देके दर्द खींच लिया
माँ तेरा प्यार भी निराला है
तेरी हिम्मत की दाद देता हूँ
कितनी मुश्किल से हमको पाला है
तुमने तालीम दी हकीकत की
हमके गिरते हुये संभाला है
माँ तेरी हर छुअन है फूलों सी
तुमने काँटा हर एक निकाला है
मेरी ख्वाहिश जो कर सको पूरी
मेरी आदत में खुद को ढ़ाला है
"देव" माँ को सुकून है मुझसे
मुझको भी माँ का नाम आला है

-- चेतन रामकिशन 'देव'

उसका हर अंदाज जमाने वाला है
मुझको सबसे गैर बताने वाला है
लोगों की नजरों में मुफलिस बनता है
घर में देखा शख्स खजाने वाला है
उससे साँस उधारी हरगिज मत लेना
जो तुमसे अहसान जताने वाला है
बेमौसम बारिश-ओला गिरने लगते
लगता घर गल्ला ना आने वाला है
आस लगाए बैठा है होरी कब से
खाते में काला धन आने वाला है
इंसान उगाते जो पत्थर खेतों में
कल ख्वाबों में पेड़ लगाने वाला है
'पूतू' जिंदा रहने का क्या मकसद है
टूटा-फूटा साज बजाने वाला है

-- पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'

मेरे जख्मों को चोट लगती है हवा मत दो
अब मुझे मौत ही दो, और सजा मत दो
तुम मुझे भूल ही जाओ तो अच्छा होगा
मेरे दिल को मेरे यार अब अजां मत दो
मैं मुतमइन हूँ छोटी सी अपनी दुनिया में
तुम मेरे पास न आओ और फजा मत दो

-- अरुण निषाद

मत भटक मुसाफिर राह में चल
अपने प्रियतम की चाह में चल
उसके जैसा नहीं यार कोई
उसके यादों की थाह में चल
जीवन में संकट आये कोई
संग-संग उसके आह में चल
एक दिन मंजिल मिल जाएगी
यार उसके ख्वाबगाह में चल
मरते दम तक मत धैर्य तू खो
अपने रब के खैरख्वाह में चल

-- दिनेश पाण्डेय 'कुशभुवनपुरी'

मंजिल की राह

खूबसूरत इस दुनिया में, यह जिंदगी एक वरदान है
सम्हलकर चलो जीवन सफर, हर मोड़ पर इम्तिहान है
एकबार बढ़े जो आगे कदम, पीछे हटने की बात न हो
बढ़ने की चाहत ऐसी हो, कि थकन का एहसास न हो
मिलेंगे तुम्हें कई काँटे, मंजिल की इन राहों में
आशा धैर्य विश्वास रखना, साहिल होगा इन्हीं तूफानों में
हार भी हासिल हो कभी, टुकड़े मत करना दिल के
जरूर बनाये होंगे रब ने, कुछ और राह मंजिल के
माँ के गर्भ से ही कोई, होता नहीं विद्वान
यहीं जन्मता यहीं बढ़ता, वो यहीं बनता महान
महत्वाकांक्षी अपने दिल से, कभी न हारा करते हैं
पंखों से नहीं वो तो, हौसलों से उड़ाने भरते हैं
नामुमकिन नहीं है कुछ भी, ये रखना तुम विश्वास
मंजिल तुम्हें जरुर मिलेगी, करते रहना प्रयास
मंजिल पर चढ़कर देखोगे, नभ भी होगा तुमसे नीचे
लोग चलेंगे तेरे कदमों पर, दुनिया होगी तुम्हारे पीछे

-- दीपिका कुमारी दीप्ति

पापा

माँ की कोख में भी तुमको, पापा, मैं सुन पाता था
मेरे लिए वो फिक्र तुम्हारी, सुनके मैं इठलाता था
गर्भ में माँ के साथ साथ मैं, हृदय तुम्हारे पलता था
मुझको ही तो सोच तुम्हारा, एक एक पल गुजरता था
खेल-खिलौने, बस्ता, कापी, तुमसे ही सारे ऐश हैं पापा
मौज मस्ती जीवन की सारी, तुमसे ही तो कैश है पापा
बहा खून पसीना भरी दुपहरी, मेरे लिए ही कमाते हो
मम्मी बचाती बुरी नजर से, तुम नजरों में लाते हो
माँ लाती दुनिया में बेशक, दुनियादारी तुम सिखलाते
मम्मी तो प्यारी है ही पापा, तुम भी मुझको बहुत लुभाते
डांट और सख्ती से तुम्हारी, होते कदम मजबूत हमारे
तुम्हारे काँधे पर ही तो चढ़, तोड़ लाते हम नभ के तारे
माँ को पूजे दुनिया सारी, पर पापा भी तो महान हैं
उनके समर्पण और त्याग से,
हम रहते क्यूँ अनजान हैं?
रक्षा करते, पालन करते,
पापा तुम भगवान हो
जिस दिल में बसती है माँ
पापा उसके तुम प्राण हो

-- सपना मांगलिक

कड़ी धूप में, चल रहा है अकेला
आँखों के सामने, हो रहा है अँधेरा
मन चंचल, भारी हो रहा है तेरा
राही! चलना न छोड़ना
चलते-चलते रूक गया अगर,
कहीं बैठकर आराम कर लिया अगर
क्या तय कर पाएगा,
अपनी मंजिल का सफर
राही! चलना न छोड़ना

-- विकाश सक्सेना

दो कदम मैं भी चला दो कदम तू भी चली
वक्त मेरा भी ढला उम्र तेरी भी ढली
सुनी थी दूर तलक तेरे घुंघरू की खनक
रात भर मैं भी जला रात भर तू भी जली
ये ख्वाहिशें न मिटी जिंदगी यूँ ही लुटी
मैं अमानत में पला तू तिजारत में पली
उस जमाने का जहर दिखा गया था असर
गया था मैं भी छला गयी थी तू भी छली
हम इशारों में गए तुम नजाकत में गयीं
थोडा मैं भी न खुला
थोड़ी तुम भी ना खुली
मेरे गुलशन की महक
मेरे ख्वाबों की चमक
जुबां से मैं भी टला
वफा से तू भी टली

-- नवीन मणि त्रिपाठी

मेरा न लिखना उन्हें क्यों सताने लगा है
कुछ न कुछ तो है यह क्यों बताने लगा है
क्यों नहीं समझ पाये वो
कि वो तो दिल की गहराई में रहते हैं
कलम चले न चले
वो तो आँखों की स्याही में बहते हैं
शब्द तो दो घड़ी दिल को बहलाते हैं
लेकिन वो तो हर पल इन साँसों में रहने लगे हैं
ठीक है कि कुछ है/जो रह रह कर मुझको सताता है
चाहता हूं न सोचूं/पर रह रह कर फिर ख्याल आता है
पर वो यह न समझें कि उनकी खता है कोई
क्योंकि खता तो इस दिल की है
जो हमेशा अपने ही भावों में बह जाता है
वो पास हों या दूर/यह उन्हें अपने पास ही पाता है
एक पल नहीं गुजरता उन्हें याद किये बिना
न दिखें आस पास तो
अनायास ही रोना आता है
उनको पाने की चाहत
इतनी बढ़ चुकी
कि एक एक दिन मिलने के
इंतजार में गुजरा जाता है

-- महेश कुमार माटा

माहिया

१. काँटों में कलियाँ हैं
बिटिया की बतियाँ
मिसरी की डलियाँ हैं
२. किस्से दिन रातों के
संग खिलौने हैं
मीठी सी बातों के
३. मिलने की आस बँधी
झूम उठी बगिया
फूलों से खूब लदी

-- डा. ज्योत्स्ना शर्मा

लम्बी कहानी (दूसरी और अंतिम किस्त)

अतीत

सुधीर मौर्य

फिर वो शाम आई जब मैंने उसे प्रोपोज किया। उस दिन चाय पीने के बाद जब वो कप लेकर किचन की तरफ जा रही थी तो मैंने पीछे से उसकी बांह पकड़ कर रोक लिया। उसने सवालिया निगाहों से मेरी तरफ देखा। उस वक्त उन गहरी काली आखों में मुझे खौफ की परछाई नजर आई। इस खौफ को मै बखूबी समझ सकता था। निश्चय ही ये खौफ उसके साथ होने वाले बलात्कार की आशंका का था। पर उसका ये खौफ उस वक्त अचरज में तब्दील हो गया जब मैंने उसके चेहरे के नजदीक अपने चेहरे को लाकर कहा।

अस्मिता मै तुमसे मोहब्बत करने लगा हूँ। मै चाहता हूँ तुम इस घर में अब मेरी महबूबा और शरीके हयात की हैसियत से रहो।

कुछ लम्हे वो मुक्कमल खामोश रही फिर मेरे हाथ से अपनी बांह छुडाते हुए बोली- 'ये मुमकिन नहीं ऋषि।' इतना कह कर वो किचन की तरफ चल दी।

मै भी उसके पीछे चलते हुए बोला- 'नामुमकिन की वजह क्या है अस्मिता, क्या मै तुम्हारे काबिल नहीं?'

मुझे यूँ लगा जैसे उसने मेरी बात नहीं सुनी और वो चुपचाप चलती हुई किचन की तरफ आ गयी। उस वक्त जब वो वाशबेसिन में चाय के झूठे बर्तन रख रही थी तब मैंने उसे कंधे से पकड़ कर तेजी से अपनी तरफ घुमा लिया वो नजरे झुक कर कड़ी हो गयी मैंने कहा- 'अस्मिता, तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया।'

अपने दाये हाथ से मेरे बांये गाल को सहलाते हुए अस्मिता बोली- 'ऋषि, मुझे मोहब्बत करने की इजाजत मेरा अतीत नहीं देता।'

'मुझे अतीत से कोई सरोकार नहीं।' -मैंने अपने हाथ से उसकी कोमल हथेली को अपने गाल पर दबाते हुए बोला।

'नहीं ऋषि मेरे अतीत से तुम्हारा ही सरोकार है।' वो मेरे हाथ से अपना हाथ जुदा करते हुए बोल रही थी, 'तुम्हे विनीत याद है क्या?'

विनीत! मुझे झटके से उसकी याद आ गयी। मेरे फूफा का लड़का, मुझसे कोई पांच साल बड़ा, मेरे घर पर रह कर पढाई करता था, मेरी माँ के साथ। उस वक्त में अपने पापा के साथ रहता था जो वायुसेना में थे और मै क्लास ऐट पास करने के बाद उन्ही के साथ रह कर पढता था। घर तो बस गर्मियों की छुट्टियों में ही आता था।

मुझे याद आया जब मै बैंक में ज इनिंग के लिए फिरोजाबाद में था उस वक्त विनीत भईया ने हमारे घर में ही फांसी लगा कर खुदखुशी कर ली थी। मुझे खबर देर से मिली सो मै घर न पहुँच सका था। बाद मै मेरे दोस्त ने बताया था वो किसी लड़की को बहुत प्यार करते थे। पहले वो लड़की भी उन्हें चाहती थी, पर अचानक लड़की के अंदर महत्वकांक्षायें पैदा हो गयी। वो सुंदर तो थी ही बस क्षेत्रिय विधायक के प्रेमपाश में बंधती चली गयी। उसके साथ गाड़ी में टहलना, गिफ्ट लेना और पार्टियों में वो अक्सर जाने लगी।

एक दिन जब भैया बाजार से उसे उसके मिनी स्कर्ट पहन कर घुमने पर समझाने लगे तो उसने सबके सामने भैया को एक थप्पड़ मार दिया। बस भैया यह अपमान सह न सके और उन्होंने उसी रात दुनिया छोड़ दी।

कुछ दिन बाद जब उसी घर में मेरे पापा की हृदय आघात से म्रत्यु हो गयी तो माँ के कहने पर वो घर बेचकर हम इस नए शहर में आ गए। जहाँ मेरा ज ब था। उस वक्त जब मैंने उस लड़की से मिलने की कोशिश की तो मेरे दोस्त ने बताया वो लड़की विधायक के साथ शादी से पहले ही हनीमून मनाने शिमला चली गयी है। मैंने भी उससे मिलने का विचार छोड़ दिया, आखिर मिल के होता भी क्या।

मै अस्मिता के उसी तरह कंधे पकडे हुए बोला, 'विनीत भैया की मौत से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?'

और उस वक्त उसकी नजरे नीचे जमीन को देख रही थी जब उसने कहा- 'ऋषि, वो लड़की मै ही हूँ।'

यूँ लगा जैसे मेरे सर पर क्लस्टर बम गिरा हो और मै अपने अरमानों सहित जमीदोज हो गया होऊं। मैंने तुरंत उसके कन्धों को अपने हाथों की गिरफ्त से अज्जाद कर दिया और बिना एक वहां रुके ड्राइंग रूम में आ के बैठ गया। मै समझ गया था कि अस्मिता माँ के सामने क्यूँ असहज रहती थी। क्यूँ की वो माँ को पहचान गयी थी, पर शायद माँ उसकी दयनीय हालत देख कर उसे पहचान नहीं पाई थी।

वो अस्मिता ही थी जो मेरे पांव के करीब आकर बैठ गयी थी। मैंने अपने पांव खीच लिए थे, और उसे देख कर अपनी आँखे बंद कर ली थी।

मेरी इस बेरुखी पर उसने मुर्दा लहजे में कहा था- 'ऋषि, मैंने तो पहले ही कहा था मेरा अतीत मेरी जिल्लत के सिवा कुछ नहीं है।'

मैंने उसकी बात का सिर्फ इतना जवाब दिया- 'अस्मिता मैंने तुम्हे प्यार किया पर तुम विनीत भैया की मौत की जिम्मेदार हो। जानती हो वो मेरे बुआ-फूफा के इक्लध्ते बेटे थे।'

उसने जमीन पर आगे खिसक कर वापस मेरे पांव के करीब आई इस बार मैंने पैर खिचे नहीं थे। वो यूँही मेरे कदमों के पास जमीन में बैठे हुए बोली- 'ऋषि, हां मैं विनीत की कातिल हूँ, मेरे किये हुए अपमान ने उसकी जान ले ली। मेरी आखों पर विधायक के पैसों की रंगीनी चढ़ी थी। वो शिमला में मुझे हर रात भोगता रहा, एक साल में तीन-तीन अबार्शन हुए मेरे। पत्नी की जगह उसने रखैल बना कर रखा मुझे। और फिर उस रात जब वो मुझे अपने दूसरे विधायेक दोस्त को परोसने की बात कर रहा था, तो मैं मौका देख कर भाग निकली। विधायक के आदमी मुझे ढूंढ़ रहे थे। मैं उनसे बचती फिर रही थी, तभी और मनचले मुझे अपनी हवस से रौदना चाहते थे। घर वापस नहीं जा सकती थी, बस उनसे बचने के लिए भिखारिन का गन्दा रूप रख लिया। और फिर उस हालत में पहुँच गयी जब आप और आपकी माँ मुझे अपनी पनाह में ले आये। और मै मनचलों से बचने के लिए आपकी मा को पहचानते हुए भी आपके घर आ गयी।'

उसके आँखों से बहते हुए नमकीन पानी ने मेरे पांव को गीला कर दिया था। मुझे चुप देख कर वो कमरे में गयी, जब वापस आई तो उसके हाथ में एक बैग था। मेरे पास रुक कर बोली- 'ऋषि,मै तन ढ़कने के लिए आपके दिए कुछ कपडे लेकर कर जा रही हूँ।' मै अब भी खामोश रहा।

वो धीमे-धीमे चल कर दरवाजे पर पहुँच गयी थी? दरवाजा खोल पर वो बाहर न निकली। मैंने नजरे

(शेष पृष्ठ १५ पर)

लघुकथा

पगली

भेड़-बकरी से भरे आटो में नन्हा मुदित पसीने-पसीने हो रहा था। आटो चालक एक और नन्ही कली को ठूस दिया भूसे की तरह। आटो में अब तिल रखने की भी जगह न बची थी। चहकती हुई कली दोपहर की छुट्टी बाद मुरझाई सी घर पहुँची। माँ ने खाना पीना खिला बैठा लिया पढ़ाने। थकी हारी बच्ची खा पी रात में जल्दी ही सो गयी।

एक दिन ऐसा आया आटो में ही कली मुरझा गयी। एक तो भीषण गर्मी दूजे भेड़ बकरी से छोटे से आटो में ठूंसे। नन्हा मुदित भी बेहोश सा हो गया था। बड़े बड़े डाक्टरों के पास रोते बिलखते माता-पिता पहुँचे, पर सब जगह से निराशा हाथ लगी।

अब माँ स्कूल के बाहर खड़े हो उन आटो चालको को सख्त हिदायत देते देखी जाती थी, जो बच्चों को ठूंस ठूंसकर भरे रहते। माता-पिता को भी पकड़-पकड़ समझाती थी। समझने वाले समझ जाते, पर अधिकतर लोग पगली कहकर निकल जाते थे। ट्रैफिक एसपी ने जब देखा उसे आटो को रोकते, तो पहुँच गया डांट लगाने। परन्तु उसका दर्द सुन खुद लग गया इस नेक काम में। आज ज्यादातर स्कूलों में अधिक बच्चे बैठाने पर आटो चालको को फाइन देना होता हैं। कानून के डर ने माँ मंजू के काम को आसान कर दिया था।

-- सविता मिश्रा

लम्बी कहानी (दूसरी और अंतिम किस्त)

वर्तमान का सच

श्याम स्नेही

जब वह स्वतः होश में आयी तो बेटों द्वारा उसे पागल करार देकर डाक्टरी प्रमाण-पत्र के आधार पर रजिस्ट्री मुकम्मल हो चुकी थी, सिर्फ एक कमरे को छोड़कर। बुधिया बदहवाशी की हालत में अपने जिंदा और मानसिक रूप से स्वस्थ होने के सबूत गाँव के पंचायत, थाने से लेकर उच्चाधिकारी और छोटे-बड़े नेता मंत्री तक पहुंचाती रही। मगर सभी उसे सचमुच की पगली समझकर टालते रहे। कोई-कोई तो उसकी व्यथा सुनने के बजाय दुत्कारते-फटकारते रहे और अपनी चौखट से भगाते भी रहे। यहाँ तक कि बच्चे भी चिढ़ाते-कुढ़ाते रहते। कुछ तो लोगों ने और कुछ लल्लन बाबू के गुर्गों ने बुधिया के पागल होने की कई मनगढ़न्त कहानियाँ फैला रखी थीं।

एक दिन थाने के थानेदार का मन पसीजा या आर्थिक लोभवश एक दरख्वास्त बुधिया से लिखवाकर ले लिया। दूसरे ही दिन थानेदार लल्लन बाबू के घर पहुंचा और चाय-पानी के खर्चे का जुगाड़ कर वापस लौट आया। लेकिन पहुंच और पैसे वाले होने का लाभ बराबर मिलते रहने के उद्देश्य से एक मुकदमा तो दर्ज करने की गलती तो थानेदार ने कर ही ली थी। इसके एवज में कई बार अपना तबादला भी रुकवा चुका था। इस कदर सालों-साल तक जांच भी चलती रही। जांच प्रतिवेदन की अप्राप्ति के आधार पर तारीख-दर तारीख साल बीतते रहे। कचहरी के चक्कर लगाते-लगाते बुधिया लगभग टूट सी चुकी थी।

बुधिया जो कभी बड़े घर की बुद्धिमती और अन्नपूर्णा सी एकलौती बहू हुआ करती थी, वही अब बुधिया बनकर सिलाई-कढ़ाई, पापड़-अचार बनाकर अपना गुजारा चलाती और मुकदमे की पैरवी भी करती। वहाँ हाजरी के नाम पर कुछ न कुछ तो खर्च करने ही पड़ते। सुबह जाती तो अंधेरी शाम तक कचहरी से वापस आती, खाना बनाती, कुछ देर रामायण पढ़ती और सो जाती। यही क्रम वर्षों से चल रहा था। उस एक कमरे पर नजर गढ़ाए लल्लन बाबू की नीयत तो उसे भी लपक लेने की थी और बुधिया की नियति भी कुछ और। सहानुभूतिवश कोई कुछ सहायता भी करता तो लल्लन बाबू की प्रताड़ना से छुपाकर।

आखिर एक दिन ऐसा भी आया जब न्यायालय की फटकार के बाद जांच प्रतिवेदन न्यायालय में एकपक्षीय अनुमोदन के साथ दाखिल किया गया। गनीमत ये थी कि पहले दिन के नोटिस पर जब बुधिया कचहरी पहुंची तो वकीलों के बाजार में खुद को पाकर दंग रह गयी। सबने लगभग पागल ही मान लिया और यह कहकर टाल दिया कि उसका कुछ नहीं हो सकता।

नये-नये बने वकील रमेश जी, जो मौन मुद्रा में अपने मुकद्दर को कोस रहा था, तभी बुधिया की आवाज से उसकी तन्द्रा टूटी- "मैं पागल नहीं हूँ और जिंदा हूँ। बेटा, मेरा हक मुझे कानून से दिलवा दो।"

पहले तो रमेश जी ने भी उसे पागल या भीख मांगनेवाली ही समझा। पर, साथ ही एक दया और करुणा का जो भाव बुधिया की आपबीती सुनकर जागा तो आश्वस्त करते हुए वकालतनामे पर दस्तखत लेकर उसका मुकदमा लड़ने को तैयार हो गया। वह भी बिना फीस के। यह जानते हुए भी कि प्रतिपक्ष में नामी-गिरामी वकील इस मुकदमे की पैरवी कर रहे हैं। आखिर रमेश को भी अपनी काबिलियत का लोहा मनवाना था।

रमेश अपने शिक्षाक्रम में हमेशा सर्वोत्कृष्ट स्थान पाने वाला एक गरीब बाप की एकलौता सन्तान था। शायद गरीबी के कारण ही डाक्टर, इंजीनियर तो नहीं बन सका, पर एक वकील बनकर रह गया। सत्यनिष्ठ पिता और कर्मनिष्ठ माँ के खून ने उसे सत्य के पथ से कभी डिगने नहीं दिया। पर, सच को झूठ और झूठ को सच सिद्ध करने के बाजार में, सच को सच बताने का जज्बा बरकरार था। इसलिए भी शायद वह आधुनिक न्याय की दुनिया में सबसे अलग-थलग पड़ गया था। हाँ, अपनी काबिलियत और अध्ययन पर पूरा भरोसा था रमेश जी को।

बुधिया का मुकदमा आठ साल बाद अपने बहस के पहले पायदान पर पहुंच रहा था। बहस-दर-बहस में एक तरफ तो अकेले रमेश जी जबकि प्रतिपक्ष में तीन-तीन, चार-चार बूढ़े खुन्नास वकीलों के तर्कों को अपने तर्कों से काटकर छिन्न-भिन्न करता रहा तो पूरे न्यायालय परिसर में मानो एक ख्याति सी फैल गयी। ये चर्चा आम हो चली कि इस मुकदमे का फैसला रमेश जी के ही पक्ष में जायगा। पर निर्णय के दिन तो नजारा ही बदल गया। जब न्यायाधीश ने फैसला देते हुए रमेश जी के विरुद्ध देते हुए विपक्ष को सही ठहरा दिया।

बुधिया भी अवाक रह गयी। बस, इतना ही बोल सकी कि "बाबू तुमने तो जान लड़ा दी, मगर मेरी किस्मत ही खोटी निकली।" और बुधिया वहीं बेहोश हो गयी। तत्काल पुलिस उसे अस्पताल ले गयी, जहाँ उसे मृत घोषित कर दिया गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में उसके पिछले कई दिनों से भूखा बताया गया था।

न्याय की आकांक्षा से लिपटी फटी-पुरानी, मटमैली चादर में बुधिया के मृत शरीर को रमेश जी और गाँव के कुछेक लोगों ने घर तक पहुंचाया, जिसे अब सूने श्मशान में दाह-संस्कार के लिए ले जाने की तैयारी हो रही थी। ■

(पृष्ठ ७ का शेष)

कहानी- बड़ी बहिन

में ही रहेंगे! फिर बुचिया की मौसी उन्हें अपने घर ले गई। पर गाँव में बर्तन बासन करके किसी भी तरह अपनी रूखी सूखी रोटी जुटाने वाली मौसी कहाँ से खिला पाती शहर में रहने वाले तीन तीन बहन के बच्चों को भर पेट भोजन! अपने भाई बहन का आधा पेट खाना बुचिया से बर्दाश्त नहीं हुआ इसलिए वह फिर बलिया शहर में वापस आ गई! अब दोनों बहन तीन चार घर काम करके अपना गुजारा कर लेती हैं! और भाई को इंग्लिश मीडियम स्कूल में दाखिला करा दिया है!

फिर थोड़ी भावुक होते हुए कहने लगी मुझे सिर्फ इस बात का डर लगा रहता है कि कहीं लड़का शादी के बाद इसे बेच ना दे ! एक लड़का और देखने आया था उसने सामूहिक विवाह तथा कोर्ट की मैरेज करने से तो मना कर ही दिया, मुझसे मिलने से भी मना कर दिया था इसलिए मुझे उस लड़के पर शक हो गया और मैने उस लड़के से बुचिया का विवाह नहीं होने दिया!

फिर कहने लगी अब राम जाने इसके भाग्य में क्या लिखा है। हम तो कोर्ट मैरिज और सामुहिक विवाह के लिए इसलिए कहते हैं कि उसमें लड़के का सब अता पता सही सही लिखा रहता है! तभी बुचिया फिर चाय के साथ साथ पकौड़े भी लेकर आई और कुछ शरमाते हुए कहने लगी, 'आँटी जी ये लड़का बहुत ही अच्छा है मेरे भाई बहन को भी साथ रखने को तैयार है!' मैं सोचने लगी बुचिया के विषय में। बेचारी को अपनी शादी में भी अपने से अधिक अपने भाई बहनों की ही फिक्र है! ■

(पृष्ठ ६ का शेष)

कहानी- बदलते रिश्ते

सुनंदा समझते हुए भी असमर्थ थी। घर में अब उसके लिए वो बात नहीं थी। कभी-कभी अपने भी बोझ समझे जाते हैं, अगर उनके पास कुछ देने को नहीं होता और सुनंदा के पास भी देने को कुछ नहीं था।

सुनंदा की लड़की भी कुपोषण का शिकार होती जा रही थी। लड़की की बिगड़ती हालत सुनंदा से देखी न गयी, तो नौकरी के लिए हाथ पैर मारे और एक स्कूल में पढ़ाने लगी कुछ पैसे आने लगे उसके हाथ में। सुनंदा घर से निकली तो घर से बात भी बाहर निकली कि उसका मायके में गुजारा नहीं चलता। घर में भाभी बात बात पे ताना देती, माँ बाप भी कुछ नहीं कहते। सबको बड़ा आश्चर्य होता कि कैसे लोग हैं।

आज सुनंदा स्कूल से कुछ परेशान सी लौटी घर पे देखा कि उसकी लड़की को तेज बुखार है, तो बिफर गयी कि बेटी के सर पर किसी ने ठन्डे पानी की पट्टी तक न रखी, डाक्टर-वैद्य को दिखाना तो बहुत दूर की बात है। बात बढ़ते-बढ़ते इतनी बढ़ गयी कि सुनंदा घर छोड़ निकल पडी। निकल तो चली मगर कहाँ जाये? कौन है अपना? कहाँ जाये अब?

फिर उसने हिम्मत कर एक कदम आगे बढ़ाया और पति को फोन कर सब बता दिया। योगेन्द्र भी इन दस सालों में भैया-भाभी का असली प्यार समझ चुका था, जो कि उन्हें उसकी तनख्वाह से था। आज दोनों हीं रुआंसे से अपने-अपने को कोस रहे थे और बदलते रिश्तों के मायने ढूंढ़ रहे थे। ■

लम्बी कहानी (तीसरी और अंतिम किस्त)

ममत्व से भरी सुरिचा

सौरभ कुमार दुबे

जब बिन्नी सोकर उठी तो उसे फिर मुंह हाथ धुलाकर घर में ताला लगाकर, मंदिर के पार्क में घुमाने ले गयी जो घर से नजदीक में ही था। वहां ढेरों बच्चे खेलते थे, उनके साथ सुरिचा और बिन्नी भी खेलने लगे। इन सभी प्यारे बच्चों के बीच उसे अनुपम आनंद अनुभूत हो रहा था। बिन्नी उसे बहुत प्यारी लग रही थी, जिसके साथ वो खेल खेलकर कभी नहीं थकती थी। कुछ देर खेलकर फिर दोनों मंदिर में लगे नल के पास गए वहां पैर धोये और रूमाल को गीला कर सुरिचा ने बिन्नी और अपने माथे में पानी लगाया। बिन्नी हलकी सी मुस्का दी और फिर दोनों मंदिर के अन्दर पहुंचे।

भगवान् श्रीकृष्ण और राधा जी की अनुपम छवि को निहारते हुए सुरिचा के मन में एक बात आई कि 'हे ईश्वर तुमने मुझे ममता दी, प्रेम दिया और आज केवल एक दिन के लिए ही सही, पर इस ममता और प्रेम को न्योछावर करने का अवसर भी दे दिया, मैं तुम्हारा लाख लाख धन्यवाद करती हूँ।' ऐसे सोचते हुए धीरे से सुरिचा ने अपनी आँखें पोंछ ली, बिन्नी हाथ जोड़े खड़ी रही। फिर सुरिचा ने बिन्नी को गोद में उठाया और दोनों घर आ गए, कुछ देर टीवी देखने के बाद बिन्नी को लोरी सुनाकर सुला दिया। आज सुरिचा ने पहली बार लोरी गाई थी, जो कभी उसकी माँ उसे सुनाया करती थी।

हाथों से थपकियाँ देते हुए सुरिचा बिन्नी को सुला रही थी, तभी उसका फोन बजा। फोन पर सीता थी, उसने बिन्नी का हालचाल पूछा, कुछ देर बात की और फिर आश्वस्त होकर फोन रख दिया। इसके बाद सुरिचा ने देखा कि बिन्नी सो गयी है, तो वो भी उसके बाजू में लेट गयी, आँखें खोले धीमी जलती हुयी लाइट के बीच में आज बड़े दिनों बाद वो खुश होकर सो रही थी, उसे मानो ऐसा लग रहा था जैसे आज का दिन उसके जीवन का सबसे सुंदर दिन था। उसने अनुभव किया कि उसके जीवन में इस मिठास को आने में भले ही देर हुई, लेकिन उसे यह सुख प्राप्त जरूर हुआ। ऐसा सोचते हुए उस रात सुरिचा सो गयी।

सुबह हुई। भोर का सूरज निकलने से पहले सुरिचा की नींद टूटी और उसने देखा कि खिड़की से आते हुए प्रकाश से बिन्नी का चेहरा कैसा खिल सा रहा है, उसमें कितना तेज है, कैसी चमक है, कितना आकर्षण है, कितना प्रेम से भरा हुआ है, कितना प्यारा है। यह देखकर सुरिचा ने फिर झुकते हुए बिन्नी को चूमा और फिर उठकर बाहर आ गयी। सारे काम निपटाकर फिर बिन्नी को उठाया और उसे तैयार किया। एक प्यारी सी बच्ची जो अभी अभी बोलना सीख रही थी तुतलाती हुयी उससे बातें करती थी, तो सुरिचा के मन को बड़ी प्रसन्नता होती थी। इस तरह दोपहर तक खेल खेल में बीता और फिर बिन्नी को खाना खिलाकर सुरिचा गोद में बिठाए उसी खिड़की के पास बैठ गयी। फिर उन उड़ते हुए बादलों को देखकर उसे परियों की कहानी सुनाने लगी, कहानी सुनाते हुए सुरिचा की आँखें और मन दोनों भर आये। बिन्नी उसकी गोद में ही सो गयी जिसे देखकर सुरिचा ने आँखें पोंछी और मुस्करा दी। इतनी अधिक भावुक और खुश वो कभी नहीं हुयी थी जितना इन डेढ़ दिनों में उसने इस नन्ही परी के साथ रहते हुए महसूस किया था।

शाम के वक्त फिर घर में ताला लगाकर बिन्नी और सुरिचा मंदिर चले गए। वहां पहुंचकर उन बच्चों के साथ वो खेली और फिर कुछ देर मंदिर में शांत बैठी रही। कुछ ही क्षण में उसे होश आया कि अरे आज शाम तो सभी लोग वापस आ रहे हैं। तुरंत उसने बिन्नी को गोद में उठाया और घर की ओर निकली। वह थोड़ी घबराई हुई थी, कुछ परेशान थी, तेजी से चल रही थी, गोदी में बैठी बिन्नी तो बेखबर थी, और जब वो घर पहुंची, तो इधर सीता सलिला देवी जी से चिल्लाकर रोते हुए कह रही थी, 'देखा माँ मैं कहती थी मेरी बेटी को इसके साथ मत छोडो जाने कहाँ ले गयी मेरी बच्ची को, फोन भी नहीं उठा रही है, कहीं मेरी बेटी को मुझसे छीन तो नहीं लेगी न, कहीं वो उसे लेकर भाग तो नहीं जायेगी न।'

इधर धर्मप्रकाश ने आलोक से बहु को समझाने को कहा, और वो चुपचाप बरामदे की सीढ़ियों पर बैठ गए, गुल्लू को गोद में लिए हुए। दूर से ही सुरिचा इस नजारे को देख रही थी, सलिला देवी ताव में लाल हो रही थीं, आलोक सीता को चुप रहने की नसीहत दे रहे थे। तभी गेट की तरफ देखते हुए गुल्लू चिल्लाया- 'चाची' और दौड़कर वहां पहुंचा। सीता भी उधर 'मेरी बेटी मेरी बच्ची' करती हुयी दौड़ी। इसी बीच सुरिचा ने बिन्नी को गोदी से उतारा। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे पराये धन का सुख लेने के बाद वो उसे छोड़ रही थी। किन्तु फिर मन में एक संतोष का भाव उठता, सोचती शायद परमात्मा ने इतने दिन ही उसके प्रेम को बांटने के लिए दिए थे, उसने गेट खोला मुस्कराते हुए अन्दर आई, और फिर सभी को बताया कि वो मंदिर गयी थी।

सीता अवाक होकर सुरिचा को देखती रह गयी, सासू माँ ने थोड़ी कहा-सुनी की, फिर ताला खोला गया, और सब अपने अपने कमरे में चले गए। बिन्नी और गुल्लू सीता के पास कमरे में खेलने लगे और इधर सुरिचा चौके में जाकर सबके लिए चाय तैयार करने लगी, फिर चाय लेकर उसने हाल में बैठे अपने सास ससुर को दी और फिर सीता के कमरे में चाय लेकर गयी, जब वो चाय लेकर सीता के कमरे में पहुंची तो उसने देखा सीता आईने के सामने खड़ी रूहांसी सी हो रही थी शायद उसे अपनी किसी कमजोरी काएहसास हो चूका था, शायद उने उस पल अपनी खामी को तजने का फैसला किया हो।

तभी सुरिचा ने अंदर आते हुए मुस्कराकर कहा 'भाभी चाय' और एक पल के लिए सीता मुड़ी, सुरिचा ने चाय की ट्रे नीचे रखी और सीता ने सुरिचा को गले से लगा लिया, वो फूट फूटकर रोने लगी और कहती जाती थी 'मुझे माफ कर दो, मुझे माफ करदो'। सुरिचा की आँखों में भी आंसू थे, जैसे उसने इस आलिंगन में सब कुछ पा लिया था, उसकी आँखों में चमक थी और उन दोनों को देख बिन्नी धीरे धीरे मुस्करा रही थी! ■

(पृष्ठ १३ का शेष)

कहानी- अतीत

उठा कर देखा तो दरवाजे के उस तरफ माँ खड़ी थी।

माँ को आया देख कर मै उठ कर खड़ा हो गया। मेरी तरफ देखते हुए माँ ने अस्मिता से कहा- 'कहाँ जा रही हो अस्मिता?'

उसने कोई जवाब नहीं दिया। माँ ने अंदर आके दरवाजा बंद कर दिया। अस्मिता को मेरे बगल में सोफे पर बैठाते हुए वो बोली- 'मै तुम्हे उसी दिन पहचान गयी थी बेटी जिस दिन तुम मुझे मिली थी। मै तुम्हे घर लायी ही इसलिए थी कि तुम यहाँ रह सको।'

'नहीं माँ जी मेरा अतीत बहुत घिनौना है। वो मुझे यहाँ रहने न देगा।'

'देखो अस्मिता जो अतीत से सीख लेकर सुधर जाते है उनका वर्तमान और भविष्य दोनों सुधर जाते है। मुझे उम्मीद है तुम अपना अतीत भुला कर आगे कदम बढ़ोगी।' माँ ने अस्मिता को समझाते हुए कहा।

इतना कह कर माँ उठकर अपने कमरे में चल दी, फिर रुक कर बोली 'मुझे लगता है तुमने अपना अतीत ऋषि को बता दिया होगा, अगर वो इजाजत दे तो मेरे लिए चाय बना कर ले आना।' इतना कह कर माँ अपने कमरे में चली गयी।

अस्मिता खड़ी थी, मैंने उठ कर उसकी तरफ अपनी दोनों बांहे फैला दी और वो अतीत से भविष्य की तरफ भागती हुई मेरी बांहों में समा गयी। (समाप्त)

प्रेम की परिभाषा कभी विरह तो कभी मिलन
नए तराने नए अफसाने वो उलझे रिश्ते
आये न जो तुम कभी सुलझाने
वो भूले गीत वो भूली यादें
एक पल हँसना पल में रूठ जाना
चिंतन तो कभी घुटन वो पुराने किस्से
कुछ कहे तो कुछ अनकहे
आये न जो तुम कभी सुनने सुनाने
खामोशी का दर्द/नासूर बन जीवन भर सालता रहा
आये न जो तुम कभी मरहम लगाने
मिला तुमसे जिन्दगी में कभी दर्द तो
कभी अथाह प्रेम आये/न जो तुम कभी जतलाने

-- गुंजन अग्रवाल

लघुकथा

आँखें

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

रौशनी पंद्रह सोलह वर्ष की एक खूबसूरत लड़की तो थी ही, मगर इससे भी ज्यादा फुर्तीली, काम काज में माहिर और गाने में सुरीली आवाज की मालिक थी। हर सुबह वह माँ के साथ बाबा नानक जी की फोटो के सामने खड़ी होकर अरदास में शामिल होती, फिर वह बगीचे में जाकर फूलों को पानी देती, उनको सूँघकर उनसे बातें करती, जैसे वह फूल उसकी बात समझ रहे हों। फिर वह चिड़ियों को दाने फेंकती जो शायद पहले ही उसकी इंतजार में बैठी हों। और आखिर में जाती अपनी सखी गाय के पास, जिस का नाम उसने गौरी रखा हुआ था। उसको आटे का पेड़ा खिलाती, उसके सींगों को हाथ से सहलाती। घर के काम बहुत अच्छे ढंग से करती। सही मानों में वह घर की रौशनी ही थी।

बस एक ही बात थी, कुदरत ने उसके साथ इन्साफ नहीं किया था, वह अंधी थी। लेकिन रौशनी को इसकी कोई परवाह नहीं थी, भले ही उसकी माँ अंदर से दुखी हो। जब वह दो महीने की थी तो चारपाई से गिर गई थी और बहुत देर बाद माँ को पता चला था कि रौशनी तो देख नहीं सकती थी। उस की खूबसरती को देखकर ही माँ ने उसका नाम रौशनी रखा था। बहुत इलाज कराया गया था लेकिन रौशनी की आँखों में रौशनी की बजाए अँधेरा ही रह गया।

बड़े भइया की शादी थी और रौशनी अपनी सहेली पुष्पा के साथ बैठी प्याज काट रही थी। पिआजों का टोकरा उनके पास था। वोह काट रही थीं और साथ साथ गा भी रही थीं। प्याज बहुत कड़वे थे और दोनों की आँखों से पानी बह रहा था और इस पर वह हंस रही थीं। आधा टोकरा खत्म हो गया था, तभी रौशनी को कुछ अजीब सा महसूस हुआ, कुछ धुन्धला सा दिखाई देने लगा। वह पुष्पा की तरफ देखने लगी और कुछ ही मिनटों में उसे साफ दिखाई देने लगा।

उसने कमरे के चारों ओर देखा, छत पर घूमता हुआ पंखा देखा, वह उठकर बाहिर की ओर भागी। पुष्पा चिल्लाई, "रौशनी क्या कर रही हो, धीरे चल, गिर जायेगी।" बाहर निकल कर रौशनी ने आसमान की तरफ देखा, इर्द गिर्द के मकानों की ओर देखा। फिर वह बगीचे की तरफ चली गई, एक एक फूल को ध्यान से देखने और उन से बातें करने लगी, " ओह! तो तुम ऐसे हो, तू कौन सा रंग है, अरे तू कितना खूबसूरत रंग है, तेरा क्या रंग है?" बातें करती करती भूल ही गई कि उसे तो प्याज काटने थे। आँगन के पेड़ पर बैठी चिड़िओं की ओर देखने लगी। उनकी आवाज से ही उस को पता चल गिया कि जिनको इतने वर्षों से दाने डालती आई थी, वह ऐसी थी। रौशनी चिड़िओं को ध्यान से देखने लगी और उनसे बातें करने लगी।

अब उस को याद आया अपनी सखी गौरी का। गाय की तरफ गई और उस को देखती ही रही। गौरी ने रौशनी की तरफ देखा जैसे उस को पता चल गिया हो कि रौशनी अब उसे देख सकती है। रौशनी गौरी के गले लिपट गई, उसके मुंह पर अपने हाथ चलाने लगी। अचानक माँ आ गई और बोली, "अरे रौशनी तू यहां क्या कर रही है? पुष्पा अकेले ही प्याज काट रही है, जा जाकर उसका हाथ बंटा ".

रौशनी ने माँ की तरफ देखा, और फिर माँ के मुंह को अपने हाथों से सहलाने लगी। "यह क्या कर रही हो रौशनी?" माँ ने डांटा। रौशनी ने माँ के कपड़ों पर छपे फूलों की ओर देखा और एक दम माँ के गले लिपट गई और ऊंची-ऊंची रोने लगी। रौशनी के पिता भइया और पुष्पा भी आ गए थे। रौशनी रोये जा रही थी और बोले जा रही थी, "माँ, मुझे दिखाई देने लगा है, ओह माँ, आँखें ऐसी होती हैं? यह तो मुझे आज पता चला, मैं तो अँधेरे में ही जीती रही, ओह माँ, स्वर्ग यहां ही है, और कहीं नहीं। माँ! मेरे मरने के बाद मेरी आँखें दान कर दो ताकि किसी को रौशनी मिल जाए।"

"मरें तेरे दुश्मन" अब माँ भी हैरान हुई बोलने लगी। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि जो रौशनी बोल

(शेष पृष्ठ १७ पर)

लक्षमन तो चले गये/भाई भाभी के संग
अपना फर्ज निभाने/मुझे यहाँ छोड़ गये
मेरे फर्ज के लिये/सब फर्ज निभाती हूँ
जो उन्होने कहा/और जो कहना भूल गये
लेकिन मेरे प्रति किसी को कोई/फर्ज याद न आया
न ससुराल वालों को/और न ही पति को
खुद ही अपना फर्ज भी निभाती हूँ/कंद मूल खाती हूँ
उन के बिना पकवान कैसे खाऊं
वो भी तो कंदमूल से/ही पेट भरते होंगे
कुश की चटाई पर सोती हूँ/उन्हे बिस्तर कहाँ मिलेगा
वो सारी रात/भाई भाभी की रक्षा के लिये जगते होंगे
मैं उनकी याद में/सारी रात तकिया भिगोती हूं
उन्हे उनके कर्म से नहीं रोकती
मैं चुपचाप अपना कर्म निभाती हूँ
जानती हूँ मुझे कोई याद नही करेगा
लेकिन जब जब उनका नाम आयेगा
मैं उसमें छिपी हुई नजर आउंगी
कोई जाने न जाने
मैं बस अपना फर्ज निभाउंगी

-- रमा शर्मा, कोबे, जापान

दिल से उठते हैं ये बुलबुले/एहसासों का सैलाब लिये
उड़ना चाहते हैं ये/खुले आसमान पर
मगर दिल के बंद दरवाजों से टकरा/चटक जाते हैं
और हम लग जाते हैं उन्हें समेटने/कहीं मैले न हों
या कोई झांक न ले इनमें/जानते हो ना
दीवारों के भी कान होते हैं/मगर कुछ बच पाते हैं
और कुछ बिखर जाते हैं/और हम खो जाते हैं
झोली में बचे एहसासों में/और बह जाते हैं
भावनाओं के दरिया में/दो किनारों की धारा जैसे
एक किनारा कुछ मिठास लिये
दूसरा दर्द का एहसास लिये
अनजाने लग जाते हैं किसी एक किनारे
फिर शुरू होता है
एक बवंडर तेज गर्म हवाओं का
या पुरवाई सी ठंडी घटायों का
और हम जी लेते हैं वोह लम्हा
क्यों कि जी चुके हैं हम हरदिन
ये अनगिनत बार
तेरे एहसास

-- मोहन सेठी इंतजार, आस्ट्रेलिया

एक अजनबी देश में था मैं/तो सोचा क्या जगह है ये
लोग अलग हैं/भाषा अलग है/बोली अलग है
रंग रूप अलग है/भगवान तक अलग हैं
सारी दुनिया तो एक थी/फिर क्यों सबने हिस्से कर दिये
अपनी अपनी अलग जगह बना ली
और अपने रास्ते अलग कर लिये
सालों बाद सब ने/उन जगहों को देश का नाम दे डाला
जमी वही रही/लेकिन दुनिया के हिस्से हो गये
अब एक जगह से दूसरी जगह जाने पर
पाबंदियां लग गईं/वीसे लग गये
मैं हिंदोस्तानी से/जापानी बन गया
क्योंकि यहाँ जन्मा था
लेकिन जापानियों की नजर में
मैं हिंदोस्तानी और
हिंदोस्तानियों की नजर में
मैं जापानी बन गया

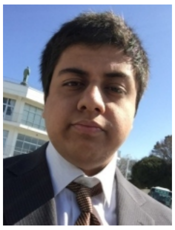

-- अक्षित शर्मा, जापान

पापा की जब याद आती है !
चेहरे पे वो बच्चपन की यादो की मुस्कान आती है
वो आँगन में पायल की झंकार!
सुनकर पापा के दिल में उमड़ता हुआ वो प्यार
खाकर ठोकर वो दहलीज के पत्थर पर लुढ़क जाना
अगले पल पकड़ के पापा की उँगली फिर से संभल जाना
आज एक बार फिर से उनकी याद से आँखे भर आई हैं
कठिन दौर में भी उनके मुस्कुराने वाली वो तस्वीर
फिर से याद आई है!!
मेरी जीत के लिए सौ बार
हारने वाले उस सख्स की!
"हाँ बेटा जी" लफ्जों की आवाज
दूर देश से एक बार फिर
कानों में टकराई है!!

-- मंजू, आस्ट्रेलिया

लघुकथा

विज्ञान के चमत्कार

मनजीत कौर, लंदन

उस वक्त की बात है जब कंप्यूटर इस्तमाल में नहीं आये थे। सविता देवी की बेटी पूनम की शादी विदेश में हुई थी। उसने अपनी लाड़ली को इतनी दूर ब्याहने के बारे में उसने कभी सोचा भी नहीं था पर, जैसे कहते हैं न! यह सब संयोग की बात होती है। इस पर किसी का बस नहीं चलता। इसी तरह पूनम की शादी भी सात समुद्र पार हो गई और ममता आंसू बहाती रह गयी। पूरे १५ साल हो गए थे, अपने जिगर के टुकड़े को ससुराल भेजे हुए। पर गृहस्थी की जिम्मेदारी और ससुराल की खिदमत में बेटी को वतन वापिस आने का समय ही नहीं मिला। सविता देवी को नाती-नातिन के जन्म की खबर भी फोन पर ही मिली थी। पूनम द्वारा भेजी गई उनकी तस्वीरों को ही गले लगा कर खुश हो लेती। पूनम महीने में कभी कभार, चिठ्ठी के जरिए या टेलीफोन के जरिये अपनी कुशल-मंगल देती, तो माँ के दिल को ठंडक मिल जाया करती।

सविता देवी की दो औलादें एक बेटा और बेटी थी। बेटे की भी शादी हो चुकी थी। भरा-पूरा परिवार था उसका। वैसे तो पोते-पोतियों के संग दिल लगाये रखती, पर बेटी को याद करके उदास हो जाती। वह आंखों से दूर, सात समंदर पार जो रहती थी! अपने दिल के टुकड़े को विदेश विवाह कर खुद को कोसती, 'काहे बिहाई बिदेस' गीत सुनकर जार-जार रो पड़ती। बेटी और नाती-नातिन की तस्वीरों को घंटों निहारती, चूमती, सीने से लगाती। पोती को गले लगा कहती "चिड़िया रे चिड़िया तुझे भी इक दिन उड़ जाना। फिर बेटी की प्यार भरी चिट्ठियों को बार-बार पढ़ती।

एक चिठ्ठी में लिखा था "माँ आज फिर चिठ्ठी लिखने को देर हो गयी। अपनी इस बेटी को माफ कर देना, यही तो मजबूरी है हम बेटियों की, एक दिन हमें माता-पिता का घर छोड़ जाना पड़ता है। हम बेटियां अपने ससुराल में अपनी दुनिया बनाने के लिए अपना सारा जीवन लगा देती हैं। यही तो आप ने भी किया, नानी, दादी ने भी किया और आगे आपकी नाती और पोती भी यही करेंगी। मैं भी अपनी गृहस्थी में इसी तरह से व्यस्त हो गई। सुबह एक फैक्टरी में काम करने जाती हूं। आपके दामाद भी दिन-रात काम पर रहते हैं, बच्चे स्कूल जाते हैं। उनकी परवरिश और सास-ससुर की सेवा में कब दिन से कब रात हो जाती है पता ही नहीं चलता, पर माँ इसका ये मतलब नहीं, कि मैं आपको याद नहीं करती। आपके दिल का टुकड़ा सदा आपसे मिलने को तड़पता है चाहे सात समुद्रों की दूरी है, पर दिल से आप दूर नहीं।" सविता देवी चिठ्ठी को पढ़कर आँखे नम करके कहती, "बिटिया तू अपने घर में सुखी रहे खुश रहे, मुझे और क्या चाहिए?"

कुछ और समय बीता, विज्ञान ने और तरक्की कर ली। इंटरनेट का जमाना आ गया। घर-घर में कंप्यूटर आ गए। सबका जीवन कंप्यूटर से जुड़ गया। एक दिन सविता देवी के पोता और पोती उसके पास आये। गले में बाहें डाल कर दादी को कंप्यूटर रूम में ले गए। उन्होंने दादी के लिए कोई सरप्राइज प्लैन किया था। पोती नेहा ने दादी की आँखों पर हाथ रख दिए और कंप्यूटर आन करके दादी की आँखों से हाथ हटाये तो सामने विडिओ कॉल के जरिये, कंप्यूटर पर अपनी बेटी पूनम को देख हैरान रह गई।

बरसों से बिछुड़ी हुई बेटी पूनम को सामने देख खुशी से झूम उठी और बोली "बेटी मैं तो तुझे देख सकती हूं। तू तो मेरे सामने है, ये कैसा चमत्कार है! माँ बेटी दोनों की आँखों से खुशी के आंसू बहने लगे। पोती नेहा दादी के गले में बाहें डालकर कहने लगी "दादी माँ अब उदास नहीं होना। अब आप जब जी चाहे बुआ से मिल सकती हैं।" दोनों परिवार एक दूसरे से मिलकर खुश हुए। वह पूनम के सारे परिवार से मिली। अपनी बेटी, दामाद, नाती-नातिन से ढेरों बातें की। बेटी ने अपना सारा घर दिखाया। अब जब जी चाहे अपनी बेटी को देखकर सविता देवी खुश रहने लगी और साइंस को शुक्रिया करती हुए कहती "बहुत करामाती है ये विज्ञान, इस ने सात समुद्रों की दूरी को खत्म कर दिया है। इसके नित नए अद्भुत आविष्कारों ने इंसान के जीवन को कितना सरल, सुखद और सुन्दर बना दिया है।" वो दिन तो बहुत खूबसूरत था जब पूनम ने माँ को बताया, कि वो अपने परिवार समेत इंडिया आ रही है। ■

भैया, काश तुम समझ पाते
पापा की झिड़कियों मे था/तुम्हारा ही भला
उनके गुस्से मे छुपे/प्यार को जो देख पाते
तो शायद/तुम घर छोड़ के नही जाते
पापा के ठहाकों से/जो गूंजता था घर कभी
आज उनकी/बोली को तरस जाता है
तुम्हारे कमरे में/बैठे न जाने क्या देखते रहते हैं
अकेले में कई बार/बातें करते हैं/पापा बुझ से गए हैं
उनकी डांट को/गांठ बाँध लिया
पर न देखा की/तुम्हारी सफलता को
मेरे बेटे ने किया है/बेटे को मिला है कह के
सब को कई बार बताते थे/तुम्हारे सोने के बाद
तुम्हें कई बार/झांक आते थे
क्यों नहीं देखा तुमने/कि खीर पापा कभी
पूरी कटोरी नहीं खाते थे
तुम्हारी पसंद के फल लाने
कितनी दूर जाते थे
आपने वेतन पे लिया कर्ज
तुम्हारी मोटर साईकिल लाने को
काम के बाद भी किया काम
तुम्हें मुझे ऊँची शिक्षा दिलाने को
तुमने उन्हें दिया/मधुमेह, उच्च रक्तचाप
छुप के रोती/आंखों को मोतिया/लेली उनकी मुस्कान
उनकी बातें/उनका गर्व से उठा सर/और सम्मान
यदि तुम ये सब जानते/तो शायद नही जाते
आ जाओ/इस से पहले कि कहीं देर न हो जाए
पिता को बेटे का उपहार दे जाओ/तुम आ जाओ

-- रचना श्रीवास्तव, अमेरिका

ग़ज़ल

तू मसीहा है मेरा या कि फरिश्ता तू है
हाँ अजल से ही मेरी रूह में रहता तू है
बेवफा सब हैं मेरे वास्ते इस दुनिया में
बावफायी को मगर देखूं तो दिखता तू है
जख्म सहराओं कि मानिंद मेरे है लेकिन
मेरी रग रग में यह लगता है कि बहता तू है
हाथ फैला के तेरे आगे खुदा क्या मांगूं
जो भी दिल से कभी माँगा उसे देता तू है
मेरे होंटो के तरानों में लिखी खामोशी
ऐसी खामोशी जिसे गौर से सुनता तू है
जिंदगी तेरी स्याह रातों में डर लगता था
बन् के आया है जो सूरज का उजाला तू है
दर्द कि धुन में ही डूबी थी ये दुनिया मेरी
प्यार में डूबा हुआ कोई तराना तू है
धूप तीखी थी न साया था कोई रस्ते में
प्रेम के सर पे रहा बन के जो साया तू है

-- प्रेम लता शर्मा

(पृष्ठ १६ का शेष)

लघुकथा : आंखें

रही थी वोह सच्च था। रौशनी भीतर जा कर बाबा नानक देव जी की तस्वीर के सामने जा खड़ी हुई और हाथ जोड़ कर बाबा जी का धन्यवाद करने लगी। रौशनी के पीछे सभी लोग हाथ जोड़ कर खड़े थे। ■

किनारों पे चलते कदमों ने लहरों से, वादा करने की ठानी है
कदम चूमकर लहरों ने कहा, ये राहगीरों की आदत पुरानी है
पेड़ों के नीचे कुल्हाड़ी ने, अब कुछ सुस्ताने की ठानी है
थपथपाकर कटी डाली ने कहा, कातिल की ये अदा पुरानी है
अपने खेतों में किसानों ने अपने जिस्म बोने की ठानी है
इसकी लागत के अनुपात में सरकार ने फसल की कीमत मांगी है
दुआओं ने अब खुदा से, रिश्ता तोड़ने की ठानी है
पैसे के बदले ही पैसा मिलेगा, तेरे दर की भी यही कहानी है
हर पड़ोसी ने बगल की, खिड़की बंद करने की ठानी है
हर लिबास में इंसान ही है,
ये बात मजहब ने नहीं मानी है
हवाओं को भी गुब्बारों ने,
कैद में रखने की ठानी है
हवा में उड़ने वालों ने अभी,
सुई की औकात नहीं जानी है

-- सचिन परदेशी 'सचसाज'

ताजमहल वास्तव में एक प्राचीन शिव मंदिर

विश्व के सात प्रमुख आश्चर्यों में शामिल आगरा का ताजमहल वास्तव में शिव मंदिर है, इसमें कोई संदेह नहीं है। मंदिर हिन्दुओं की श्रद्धा और शक्ति के केन्द्र होते थे। मुगल आक्रमणकारियों ने जब भारत पर आक्रमण किया तो उन्होंने सबसे पहले यहां के श्रद्धा और प्रेरणा के केन्द्र हिन्दू मंदिरों को ही निशाना बनाया। किसी भी देश के नागरिक अपने राष्ट्र के इतिहास से ही प्रेरणा लेते हैं। इसीलिए मुगलों ने सबसे पहले यहां के इतिहास को मिटाने का काम किया।

कुछ लोग तर्क देते हैं कि मुस्लिमों ने लूट के लिए मंदिरों पर हमला किया था। लेकिन अगर उनकी मंशा केवल मंदिर के धन को लूटने तक होती तो वे मंदिरों को तहस-नहस कर जमीदोंज नहीं करते। भारत में हजारों मंदिर हैं जिनको मुगलों ने तोड़कर मंदिर के मलबे से ही मस्जिद खड़ी करायी। अयोध्या का श्रीराम जन्मभूमि मंदिर, वाराणसी का काशी विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का श्रीकृष्णजन्मभूमि और गुजरात के सोमनाथ मंदिर इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। इसी तरह भारत में हजारों मंदिरों के प्रमाण हैं जिन्हें तोड़कर मस्जिद बनायी गयी।

ऐसा ही इतिहास आगरा स्थित ताजमहल का है। मुगलों ने इसे प्रचारित किया कि बादशाह शाहजहां ने अपनी बेगम मुमताज महल की याद में ताजमहल का निर्माण कराया था। लेकिन यह पूर्णतया आधारहीन तथ्य है। पहली बात तो यह है कि शाहजहां के बेगम का नाम मुमताज महल था ही नहीं, उसका नाम मुमताज-उल-जमानी था। शाहजहां और यहां तक कि औरंगजेब के शासनकाल तक में भी कभी भी किसी शाही दस्तावेज एवं अखबार आदि में ताजमहल शब्द का उल्लेख नहीं आया है। ताजमहल को ताज-ए-महल समझना हास्यास्पद है।

पी.एन. ओक ने अपनी पुस्तक ''ताजमहल इज ए हिन्दू टेम्पल प्लेस'' में ऐसे ही १०० से भी अधिक प्रमाण और तर्कों का हवाला देकर दावा किया है कि ताजमहल वास्तव में शिव मंदिर है जिसका असली नाम तेजोमहालय है। ताज में संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ने के पहले जूते उतारने की परंपरा शाहजहां के समय से भी पहले की थी जब ताज शिव मंदिर था। यदि ताज का निर्माण मकबरे के रूप में हुआ होता तो जूते उतारने की आवश्यकता ही नहीं होती क्योंकि किसी मकबरे में जाने के लिये जूता उतारना जरूरी नहीं होता। इसी तरह संगमरमर की जाली में १०८ कलश चित्रित उसके ऊपर १०८ कलश आरूढ़ हैं, हिंदू मंदिर परंपरा में १०८ की संख्या को पवित्र माना जाता है।

भारत में १२ ज्योतिर्लिंग हैं। ज्ञानियों के अनुसार ताजमहल उनमें से एक है जिसे नागनाथेश्वर के नाम से जाना जाता था क्योंकि उसके जलहरी को नाग के द्वारा लपेटा हुआ जैसा बनाया गया था। जब से शाहजहां ने उस पर कब्जा किया, उसकी पवित्रता समाप्त हो गई।

बृजनन्दन यादव

आगरा के निवासियों की सदियों से दिन में पाँच शिव मंदिरों में जाकर दर्शन व पूजन करने की परंपरा रही है विशेषकर श्रावन के महीने में।यहां के भक्तजनों को बालकेश्वर, पृथ्वीनाथ, मनकामेश्वर और राजराजेश्वर नामक केवल चार ही शिव मंदिरों में दर्शन-पूजन उपलब्ध हैं। वे अपने पाँचवें शिव मंदिर को खो चुके हैं जहां जाकर उनके पूर्वज पूजा पाठ किया करते थे। स्पष्टतः वह पाँचवाँ शिवमंदिर आगरा के इष्टदेव नागराज अग्रेश्वर महादेव नागनाथेश्वर ही हैं जो कि तेजोमहालय मंदिर उर्फ ताजमहल में प्रतिष्ठित थे।

पी.एन. ओक की पुस्तक ताजमहल इज ए हिन्दू टेम्पल प्लेस के अनुसार सन् १६६२ में औरंगजेब द्वारा अपने पिता को लिखी गई चिट्ठी में उसने खुद लिखा है कि मुमताज के सातमंजिला दफन स्थान के प्रांगण में स्थित कई इमारतें इतनी पुरानी हो चुकी हैं कि उनमें पानी चू रहा है और गुम्बद के उत्तरी सिरे में दरार पैदा हो गई है। इसी कारण से औरंगजेब ने खुद के खर्च से इमारतों की तुरंत मरम्मत के लिये फरमान जारी किया और बादशाह से सिफारिश की थी कि बाद में और भी विस्तारपूर्वक मरम्मत कार्य करवाया जाये। यह इस बात का साक्ष्य है कि शाहजहाँ के समय में ही ताज प्रांगण इतना पुराना हो चुका था कि तुरंत मरम्मत करवाने की जरूरत थी। शाहजहां ने ताजमहल पर कुरान की आयतें खुदवाने के लिए मरकाना के खदानों से संगमरमर पत्थर और उनको तराशने वाले शिल्पी भिजवाने के लिए जयपुर के शासक जयसिंह को फरमान जारी किये थे।

शाहजहां के ताजमहल पर जबरदस्ती कब्जा कर लेने के कारण जयसिंह इतने कुपित थे कि उन्होंने शाहजहां के फरमान को नकारते हुये संगमरमर पत्थर तथा शिल्पी देने के लिये इंकार कर दिया। जयसिंह ने शाहजहां की मांगों को अपमानजनक समझकर पत्थर देने के लिये मना कर दिया, साथ ही शिल्पियों को सुरक्षित स्थानों में छुपा दिया था। इससे स्पष्ट है कि मंदिर को अपवित्र करने, मूर्तियों को तोड़ कर छुपाने और मकबरे का रूप देने में ही उसे २२ वर्ष लगे थे।

पी.एन. ओक की पुस्तक के अनुसार ताज के नदी के तरफ के दरवाजे के लकड़ी के एक टुकड़े की एक अमेरिकन प्रयोगशाला में किये गये कार्बन १४ जाँच से पता चला है कि लकड़ी का वो टुकड़ा शाहजहां के काल से ३०० वर्ष पहले का है, क्योंकि ताज के दरवाजों को ११वीं सदी से ही मुस्लिम आक्रामकों के द्वारा कई बार तोड़कर खोला गया है और फिर से बंद करने के लिये दूसरे दरवाजे भी लगाये गये हैं, ताज और भी पुराना हो सकता है। असल में ताज को सन् ११९५ में अर्थात् शाहजहां के समय से लगभग ५०० वर्ष पूर्व बनवाया गया था।

चार कोणों में चार स्तम्भ बनाना हिंदू विशेषता रही है। इन चार स्तम्भों से दिन में चौकसी का कार्य होता था और रात्रि में प्रकाश स्तम्भ का कार्य लिया जाता था। ताजमहल के गुम्बद के बुर्ज पर एक त्रिशूल लगा हुआ है। इस त्रिशूल का का प्रतिरूप ताजमहल के पूर्व दिशा में लाल पत्थरों से बने प्रांगण में नक्काशा गया है। त्रिशूल के मध्य वाली डंडी एक कलश को प्रदर्शित करती है जिस पर आम की दो पत्तियाँ और एक नारियल रखा हुआ है। यह हिंदुओं का एक पवित्र रूपांकन है। इसी प्रकार के बुर्ज हिंदू मंदिरों में होते हैं।

ताजमहल के चारों दशाओं में बहुमूल्य व उत्कृष्ट संगमरमर से बने दरवाजों के शीर्ष पर भी लाल कमल की पृष्ठभूमि वाले त्रिशूल बने हुये हैं। सदियों से लोग इन त्रिशूलों को इस्लाम का प्रतीक चांद-तारा मानते आ रहे हैं और यह भी समझा जाता है कि अंग्रेज शासकों ने इसे विद्युत चालित करके इसमें चमक पैदा कर दिया था। जबकि सच्चाई यह है कि यह हिंदू धातुविद्या का चमत्कार है क्योंकि यह जंगरहित मिश्रधातु का बना है और प्रकाश विक्षेपक भी है। त्रिशूल के प्रतिरूप का पूर्व दिशा में होना भी अर्थसूचक है क्योकि हिंदुओं में पूर्व दिशा को, उसी दिशा से सूर्योदय होने के कारण, विशेष महत्व दिया गया है। गुम्बद के बुर्ज अर्थात् (त्रिशूल) पर ताजमहल के अधिग्रहण के बाद अल्लाह शब्द लिख दिया गया है जबकि लाल पत्थर वाले पूर्वी प्रांगण में बने प्रतिरूप में अल्लाहश् शब्द कहीं भी नहीं है।

इसके अलावा आश्चर्य की बात है कि बिना मीनार के भवन को मस्जिद बताया जाने लगा। वास्तव में ये दोनों भवन तेजोमहालय के स्वागत भवन थे। उसी किनारे में कुछ गज की कुछ दूरी पर नक्कारखाना है जो कि इस्लाम के लिये एक बहुत बड़ी असंगति है क्योंकि शोरगुल वाला स्थान होने के कारण नक्कारखाने के पास मस्जिद नहीं बनायी जाती। इससे जाहिर होता है कि वह शिव मंदिर ही है। हिंदू मंदिरों में ही सुबह शाम आरती में घंटे, घड़ियाल और नगाड़े बजाये जाते हैं।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

कई मायनों में ऐतिहासिक रहा बजट सत्र

मृत्युंजय दीक्षित

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार के लिए बीता हुआ बजट सत्र कई मायनों में ऐतिहासिक व उपलब्धियों वाला रहा है। यदि क्रिकेट की भाषा में कहा जाये तो इस बार पक्ष और विपक्ष दोनों ओर से सधी हुई गेंदबाजी और कभी-कभी आक्रामक व सधी हुई बल्लेबाजी का खेल चलता रहा। संसद का बजट अधिवेशन दो सत्रों में होता है। लोकसभा में मोदी सरकार को पूर्ण बहुमत प्राप्त है तथा वहां पर सदस्य संख्या के बल पर सरकार अपने विधेयक आसानी से पारित करवा कर सकती है। लेकिन सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती राज्यसभा बन गयी है जहां पर विपक्ष बहुमत में है। विपक्ष इसी का लाभ उठाकर लोकसभा में पूर्ण बहुमत की सरकार को दबाव में लाकर पटरी से उतारने का खेल खेल रहा है। राज्यसभा में विपक्ष ने जिस प्रकार से सरकार को घेरने का खाका तैयार किया वह विकास विरोधी व सरकारी कामकाज में रोड़ा अटकाने वाला रहा है। विपक्ष की भूमिका विकास के खलनायक की बन रही है।

मोदी सरकार बनने के बाद जो पहला सत्र हुआ था वह तो केवल पिछली सरकार के रुके हुए काम व शेष अवधि के लिए बजट आवंटन करवाने के लिए ही हुआ था। मोदी सरकार के असली कामकाज की समीक्षा तो अब की जायेगी, साथ ही विपक्ष की भी। संसद के बजट सत्र में मोदी सरकार का पहला पूर्ण आम बजट व रेल बजट पेश किया गया। इस बजट सत्र में पहली बार मोदी सरकार का वास्तविक राष्ट्रपति का अभिभाषण भी संपन्न हुआ। सरकार की ओर से पेश किये गये रेल बजट की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि रेल मंत्री सुरेश प्रभु ने किसी नयी रेल परियोजना की घोषणा नहीं की। उनका पहला लक्ष्य यही है कि किसी प्रकार से विगत तीस वर्षों से कागजों में व धनाभाव के चलते लम्बित पड़ी योजनायें पूर्ण हो सकें। इस रेल बजट का स्वागत सभी के द्वारा किया गया।

वित्तमंत्री अरुण जेतली का आम बजट भी नये तरीके से पेश किया गया, हालांकि उसके कुछ प्रावधान पुरानी सरकार के ही थे। मोदी सरकार के पहले पूर्ण बजटों से यह साफ संकेत गया कि मोदी सरकार पिछली सरकारों की ओर से चलायी जा रही किसी भी योजना को फिलहाल बंद नहीं करेगी अपितु वह सभी योजनाओं को और अधिक कारगर ढंग से लागू करने जा रही है। लेकिन राष्ट्रपति के अभिभाषण पर सरकार को राज्यसभा में उस समय तगड़ा झटका लगा, जब विरोधी दल मोदी सरकार के खिलाफ कालाधन वापस लाने की नाकामी के प्रस्ताव को पास कराने में सफल हो गये। देश के संसदीय इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि राष्ट्रपति के अभिभाषण में विपक्ष का कोई प्रस्ताव पास हो गया हो। लेकिन इसे सरकार की संसदीय उदारता का ही परिणाम भी माना जाना चाहिए।

सरकार के लिए बजट सत्र का पहला भाग इस मायने में भी ऐतिहासिक रहा कि इसमें सरकार तीन प्रमुख अधिसूचनाओं को पारित करवाने में कामयाब रही। जिसमें बीमा विधेयक, कोयला विधेयक और खान व खनिज नियमन से जुड़ा विधेयक शामिल है। दोनों सदनों में रिकार्ड २४ विधेयक पारित कराने में व विगत वर्षों में सबसे अधिक काम का रिकार्ड भी बन गया।

लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन के काम करने व करवाने का तरीका सभी को रास आ रहा है। यही कारण है कि आज प्रश्नकाल व शून्यकाल दोनों ही नियमानुसार चल रहे हैं तथा प्रश्नकाल में प्रश्नों की संख्या में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है। अब जो विपक्षी सांसद यह आरोप लगाते हैं कि उन्हें बोलने के लिए समय ही नहीं दिया जा रहा वह केवल राजनैतिक विद्वेष की भावना से लगाया जा रहा है। यदि विपक्ष पर नजर डाली जाये तो लोकसभा में कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी पहले सत्र में राजनैतिक चिंतन करने के नाम पर अवकाश पर चले गये थे, जिसकी राजनैतिक गलियारे में खूब चर्चा रही तथा राहुल गांधी मजाक के पात्र बन गये थे। राहुल गांधी की अनुपस्थिति के कारण कांग्रेस पार्टी गहरे दबाव में थी। सत्तापक्ष विपक्ष पर कटाक्ष कर रहा था।

लेकिन संसद का दूसरा चरण प्रारम्भ होते ही कांग्रेसी युवराज राहुल गांधी ५६ दिनों के राजनैतिक वनवास के बाद तरोताजा होकर वापस आ गये। कांग्रेस व विपक्ष में नया उत्साह आ गया। श्रीमती सोनिया गांधी व युवराज राहुल गांधी के नेतृत्व में मोदी सरकार को नये सिरे से घेरने की रणनीति तैयार होने लगी, जिसमें राज्यसभा में सरकार के बहुमत में न होने को भी हथियार बनाया गया। सरकार को घेरने के लिए मां-बेटे की जुगलबंदी कुछ सीमा तक मीडियाई आकर्षण चुराने में सफल रही। राहुल गांधी शून्यकाल में रोज कुछ न कुछ नया बोलने लग गये। कभी किसान, कभी युवा तो कभी सूचना का अधिकार के दुरुपयोग व फिर अमेठी में फूड पार्क परियोजना को रद्द करने का झूठा आरोप ही सरकार पर मढ़ डाला।

अमेठी में फूड पार्क को लेकर राहुल गांधी के बयान पर वे स्वयं ही फंसते चले गये व उनका साफ झूठ उजागर हो गया। देश के संसदीय इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है कि किसी नेता के बयान के बाद सरकार की ओर से पांच मंत्रियों ने बयान दिये हों। राहुल गांधी में एक जिम्मेदार व परिपक्व नेता का घोर अभाव स्पष्ट नजर आया। वह संसद में झूठ का पुलिंदा ही बोल रहे थे। उनकी हर बात की काट सरकार के पास मौजूद थी। राहुल गांधी ने वर्तमान सरकार पर उनके फूड पार्क के प्रोजेक्ट को समाप्त करने का आरोप लगाया, परन्तु यह स्पष्ट हो गया कि वह योजना पिछली सरकार के समय ही समाप्त हो चुकी थी। सरकार यदि दबाव में आ रही थी तो वह केवल राज्यसभा में बहुमत न होने के कारण। बस इसी कारण राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्ष उछल रहा था। राहुल के बयान पूरी तरह से उद्दंड मानसिकता के प्रतीक थे। इनसे स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस व गांधी परिवार के लोग केवल मोदी सरकार को झूठे आरोपों के सहारे बदनाम करने की साजिश रच रहे हैं।

वहीं सरकार के लिए यह सत्र चुनौतियों के साथ सफलतादायक भी रहा। हालांकि कुछ गलतियों व उदारता के कारण कुछ विधेयक प्रवर समिति को भेजने ही पड़ गये, फिर भी सरकार दूसरे सत्र में वित्त विधेयक, कंपनी संशोधन विधेयक, विदेशों में छिपाए गये काले धन पर रोक लगाने सम्बंधी विधेयक को मंजूर करवाने में सफल रही। सरकार के लिए सबसे अहम सफलता भारत बांग्लादेश के साथ भूमि समझौते संशोधन विधेयक पर संसद की मुहर लग गयी। यह वह विधेयक है जिसका कभी बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी सहित भाजपा व संघ परिवार कड़ा प्रतिवाद करता था। लेकिन मोदी सरकार बनने के बाद यह कानून बन चुका है। इससे बांग्लादेश और भारत दोनों को ही लाभ होगा।

सदन में भ्रष्टाचार के खिलाफ कई संशोधन पारित हुए तथा कई पर चर्चा भी प्रारम्भ हो गयी है। यह अब अगले सत्र में पारित हो जाने की पूर्ण संभावना हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बिल जीएसटी व भूमि अधिग्रहण बिल को सरकार को मजबूरी में संसद की स्थायी समितियों को वापस भेजना पड़ गया। संसद सत्र के दौरान नेपाल व उत्तर भारत कम से कम दो बार भूकम्प के झटकों से दहला लेकिन इतनी व्यस्तता के बावजूद प्रधानमंत्री मोदी ने जिस तत्परता व तेजी के साथ भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए कदम उठाये उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है।

संसद सत्र की समाप्ति के बाद वित्तमंत्री अरूण जेटली का एक साक्षात्कार में यह कथन उचित ही है कि, “राज्यसभा की अड़चनें संसदीय व्यवस्था के लिए एक जबर्दस्त चुनौती हैं। राज्यसभा में वे सदस्य आते हैं जो परोक्ष वोटों से चुने जाते हैं। वे सीधे वोट से चुने गये प्रतिनिधियों यानी लोकसभा के फैसलों पर प्रश्न उठा रहे हैं। ऐसा एक दो बार राजनैतिक वजहों से हो तो बात समझ में आती है लेकिन यह तो हर विधेयक पर ही ऐसा हो रहा है।”

अगर राजनैतिक कारणों से राज्यसभा में आगे भी ऐसा ही चलता रहा, तो फिर राज्यसभा अपनी गरिमा और मर्यादा खो भी सकती है तथा उसको देशहित में विभिन्न देशों का हवाला देकर समाप्त भी किया जा सकता है। राज्यसभा को विपक्ष ने अपनी घटिया राजनीति चमकाने का हथियार बना लिया है यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। ■

विपिन किशोर सिन्हा

परिचय

नाम - विपिन किशोर सिन्हा
पता - लेन नं. ८सी, प्लाट नं. ७८, महामनापुरी, पो.- बी.एच.यू., वाराणसी, फोन नं. - ९४१५२८५५७५,, ई-मेल - bipin.kish@gmail.com

जन्मस्थान - ग्राम - बाल बंगरा, पो. - महाराज गंज, जिला - सिवान, बिहार

जन्मतिथि - १.६.१९५४

शिक्षा - बी. टेक (मेकेनिकल), आई.आई.टी., काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

व्यवसाय - मुख्य अभियन्ता (सेवा निवृत्त), उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन लि., वाराणसी

साहित्यिक कृतियां- कहो कौन्तेय (महाभारत पर आधारित उपन्यास), स्मृति (सामाजिक उपन्यास), क्या खोया क्या पाया (सामाजिक उपन्यास), फैसला (कहानी संग्रह), संदर्भ, अमराई एवं अभिव्यक्ति (कविता संग्रह), शेष कथित रामकथा (रामायण पर आधारित उपन्यास), राम ने सीता का परित्याग कभी किया ही नहीं (शोध पत्र), यशोदानंदन (पुराणों पर आधारित कृष्ण-कथा)

सम्मान- 'सारस्वत सम्मान' (संस्कृति, वाराणसी द्वारा), 'प्रवक्ता सम्मान' (प्रवक्ता.काम, नई दिल्ली द्वारा)

आत्म कथ्य

मात्र लेखन ही मेरा उद्देश्य नहीं है. जो लेखन समाज के काम न आ सके वह व्यर्थ है. रामायण और महाभारत मेरे प्रिय ग्रन्थ हैं. मैं यह मानता हूँ कि इन ग्रंथों से श्रेष्ठ विश्व में कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है. आधी-अधूरी जानकारी रखने वाले कुछ तथाकथित कथा-वाचकों और लेखकों ने इन दोनों ग्रंथों के विषय में ढेर सारी भ्रांतियां फैला रखी हैं. रामायण तो कम लेकिन महाभारत असंख्य भ्रांतियों का शिकार रहा है. मैंने नए सिरे से उपन्यास की विधा में रामायण- 'शेष कथित रामकथा' और महाभारत -'कहो कौन्तेय' लिखा है जो प्रकाशित भी हो चुके हैं. मेरा दावा है कि इन उपन्यासों में महर्षि बाल्मीकि, गोस्वामी तुलसीदास और महर्षि वेद व्यास द्वारा वर्णित तथ्यों से तनिक भी विचलन नहीं है. इसी कड़ी में 'यशोदानंदन' भी लिखा गया हाई, जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है. अगले उपन्यास 'देवकीनंदन' पर काम चल रहा है.

मुझे लेखन की प्रेरणा अपनी स्वर्गीय पत्नी गीता, स्व. पिता देवेन्द्र किशोर सिन्हा और चचेरी बहन स्व. तारा रानी श्रीवास्तव से मिली. स्व. तारारानी एक महान

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थीं. बिहार के महाराजगंज थाने में १६ अगस्त १९४२ को तिरंगा फहराते समय उनके पति स्व, फुलेना प्रसाद को अंग्रेजों ने गोली मार दी. आठ गोली सीने पर खाकर फुलेना बाबू शहीद हो गए. आज भी महाराजगंज के मध्य में बना अमर शहीद फुलेना प्रसाद शहीद स्मारक उनके बलिदान की गाथा कहता है.

उनके बलिदान के बाद उनकी पत्नी और मेरी दिदिया तारा रानी श्रीवास्तव को असंख्य यातनाएं झेलनी पड़ीं. उन्हें अंग्रेजों ने जेल में डाल दिया. वे १९४६ में जेल से बाहर आ पाई. उन्होंने ही मुझे देशभक्ति का पाठ पढ़ाया और मेरे लेखन को परिष्कृत किया. वे स्वयं एक उच्च कोटि की लेखिका थीं. डा. राजेन्द्र प्रसाद और जय प्रकाश नारायण उनके कारण अक्सर हमारे घर आया करते थे. मेरा संपूर्ण लेखन मेरी दिदिया स्व. तारा रानी को समर्पित है. ■

(पृष्ठ ६ का शेष)

कहानी- गुरु की धरोहर

कि मैं पिता की मदद करूं, पर अपनी पढाई बंद करके नहीं, मैं ट्यूशन पढ़ाकर पिताजी की मदद करने के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखूँगा।" अब पढ़ने के साथ सोहन पिताजी की मदद भी करने लगा था। पन्ना खुश था बेटे से मदद पाकर।

एक दिन प्रिंसिपल साहब ने सोहन से कहा "तुम जितना चाहो पढ़ो, कभी इंकार नहीं करूंगा, पर मेरी एक छोटी सी इच्छा है वो तुम्हें पूरी करनी है।" "जी, कहिये क्या करना है आपके लिए।" "इच्छा सिर्फ इतनी सी है कि जब तुम पढ़-लिख कर कुछ बन जाओ, तो अपनी जात-बिरादरी, भाई, बहन और परिवार जन को भूल तो नहीं जाओगे? जो गरीब और आर्थिक रूप से पीड़ित हों उनकी मदद जरूर करना, अपनी पढाई को अपने करियर तक सीमित मत रखना। सबको तुम्हारी पढ़ाई का फायदा मिलना चाहिये।"

सोहन ने कभी नहीं सोचा कि प्रिंसिपल ऐसी कोई इच्छा उसके सामने रखेंगे। इसमें उनका तो कोई निजी फायदा भी नहीं था। अगर मै हां बोलू, तो उनको आत्मसंतुष्टि होगी, और यही वो शायद मुझसे चाहते हैं। बहुत मायने रखती थी उनकी ये इच्छा सोहन के लिए। थोड़ी देर सोचने के बाद बोला "सर, मैं पूरी कोशिश करूँगा आपकी इच्छा पूरी करने की।" प्रिंसिपल साहब आश्वासन पाकर खुश हो गये। ढेरों आशीर्वाद दिया- "तुम्हारी शिक्षा का लाभ सबको मिले, नहीं तो सब बेकार हो जायेगा। कोशिश यही करना, प्रतिभा संपन्न बच्चों की हर तरह से मदद करना। मैंने देखा है कि तुम्हारी जाति-बिरादरी के लड़के-लड़कियां बहुत पिछड़े हुए हैं।" सोहन ने 'हां' कहा।

अगले तीन सालों में ग्रेजुएसन हो गयी। एम.बी.ए. के लिए सोहन ने आई.आई.एम बंगलौर में फार्म भरा हुआ था, चयन तो होना ही था। सोहन ने बैंगलोर जाकर वहां की युनिवर्सिटी के बारे में अपने सर, प्रिंसिपल साहब को सब बताया और उनका आशीर्वाद लेकर अपनी पढाई में व्यस्त हो गया। दिन, महीने, साल बीतते गये। अब प्रिंसिपल साहब को बुढ़ापा-जनित रोगों ने घेर लिया था। वो रिटायर होकर अपने गाँव चले गये थे। उनका बेटा प्रशांत उनकी अच्छी तरह सेवा-चाकरी कर रहा था। पर थोड़ा ठीक होते ही वो समाज-सेवा को निकल जाते थे।

कुछ ही समय बाद सोहन सबका चहेता बन गया क्योंकि हर सेमेस्टर में अव्वल आता था। यूनिवर्सिटी में ही पढ़ाने का आफर मिला सोहन को और उसी वक्त फोरेन की टाप कंपनी से आफर आया। सोहन ने अच्छा पैकेज और विदेश में रहने के लालच से उस कंपनी का आफर स्वीकार कर लिया और प्रिंसिपल साहब को पत्र द्वारा सूचना भेज दी। पत्र पाकर खुश हुए प्रिंसिपल साहब की खुशी यह पढ़ कर गायब हो गयी कि 'सर मैं विदेश जाब के लिए जा रहा हूँ।' "ओह नो! इतना बड़ा धोखा मेरे साथ किया सोहन ने, कोई बात नहीं! पर मैंने तुमसे ये तो नहीं चाहा था। अब आगे कुछ नहीं कहूँगा और वो उदास हो गये थे।

उन्होंने सोहन को एक पत्र लिखा "तुम मुझे धोखा कैसे दे सकते हो? तुमने मुझसे मेरी इच्छा पूरी करने का वादा किया था। पर कोई बात नहीं अब से तुम अपने फैसले खुद ले सकते हो। मै अब कुछ नहीं कहूँगा।" पत्र पढ़कर सोहन को जैसे एक झटका सा लगा, प्रिंसिपल का चेहरा आँखों के सामने घूमने लगा और वो सब याद आया जो उसे सर ने कहा था। मन ही मन में कुछ तय करते हुए सबसे पहले उस विदेशी कंपनी को अपने नहीं आने की सूचना भेजी और प्रिंसिपल साहब को लिखा "सर, मुझे माफ करना मैं लुभावने पैकेज के लालच में आ गया था। अब अपने घर आ रहा हूँ, अपने पिताजी की और आपकी इच्छा जो पूरी करनी है। जब सोहन का पत्र प्रिंसिपल साहब के घर पहुंचा उनके बेटे ने उनको पढ़कर सुनाया। उन्होंने पत्र को अपने हाथ में लिया और काँपते हाथों से उस पर लिखा "शाबाश बेटे, मुझे तुमसे यही तो आशा थी।" और ढेरों आशीर्वाद दिया।

अंत में प्रिंसिपल साहब ने सोहन के आ जाने के बाद उसे बहुत कुछ समझा कर, उससे जी भर कर बातें कर लेने के बाद अंतिम साँस ली। सोहन रो पड़ा। सामाजिक सरोकार के कारण सोहन दस दिन तक प्रिंसिपल साहब के बेटे के साथ रहा और फिर अपने घर अपने गुरु प्रिंसिपल साहब से किये गये वादे को पूरा करने आ गया था। साथ में उनका लिखा वो पत्र भी ले कर आया, जो सोहन के लिए प्रिंसिपल साहब की धरोहर के रुप में था और हमेशा उसके पास रहेगा। उनकी धरोहर को संभालना अब सोहन के लिए उसके जीने का उद्देश्य बन गया था। ■

बाल कहानी

बदल गयी ईशा

अरविंद कुमार साहू

ईशा बड़ी नकचढ़ी लड़की थी। उसकी अपनी किसी भी सहेली से ज्यादा दिन तक पटरी नहीं बैठती थी। जरा-जरा सी बात पर तुनकती रहती।जब भी घर में आती, मम्मी से किसी न किसी सहेली की शिकायत जड़ देती- 'रेशू ने मेरे सामने अपनी गुड़िया की इतनी तारीफ की, जैसे किसी के पास इतनी अच्छी गुड़िया नहीं है। मेरी गुड़िया उससे खराब है क्या? उसकी नयी आयी है इसीलिए भाव खा रही है।' मम्मी समझाती- 'बेटी, उसने तेरी गुड़िया की बुराई तो नहीं की। सिर्फ अपनी नई गुड़िया की तारीफ की, तो इसमें गलत क्या है?'

'मेरी गुड़िया की बुराई करती तो उसका मुंह नोच लेती मैं।' ईशा गुस्से में बोली- 'बड़ी आई नयी गुड़िया वाली'। मम्मी फिर समझाती- 'गलत बात है बेटा, तुम भी तो जब पापा के साथ जाकर अपनी नयी गुड़िया लायी थी तो कितनी खुश थी। अपनी सारी सहेलियों से उसकी तारीफ करते नहीं थक रही थी। आखिर रेशू भी तुम्हारी ही तरह छोटी लड़की है।'

'हुंह, पर मैंने तो उसे अपनी गुड़िया के बारे में नहीं बताया था। वह क्या सोचती है कि मेरे पास उससे अच्छी गुड़िया नहीं है। मेरी गुड़िया देख ले तो उसकी गुड़िया की तारीफ रखी रह जाएगी।'

'पर बेटी इसमे इतना भुनभुनाने की क्या बात है। उसने तुम्हें तो कुछ कहा नहीं।'

'आप भी उसी की तरफ बोलती हैं। जाइए मैं आपसे भी नहीं बोलूंगी। कुट्टी...!' और ईशा दनदनाती हुई अपने कमरे में चली गयी। मम्मी बोली- 'उफ..., ये लड़की भी कितनी नादान है? आखिर कब समझेगी?'

ये ईशा का रोज का काम था। कल वो शालू से अपनी नई पेंसिल बाक्स के लिए चिढ़ गयी थी। कारण कुछ खास नहीं था। बस, शालू ने उसकी नई पेंसिल बाक्स की तारीफ नहीं की थी। परसों, आन्या से बैडमिंटन की रैकेट के लिए गुस्सा हो गयी थी। उसने ईशा से सिर्फ इतना कहा था कि दीदी आपकी रैकेट मुझसे पकड़ते नहीं बनती। शायद थोड़ा सा बड़े साइज की है। बस ईशा बिफर गयी- 'क्या मैंने तुम्हारे लिए, तुम्हारे नाप का रैकेट खरीदा है? बड़ी आयी बड़ा छोटा बताने वाली। जाकर अपनी नाप के रैकेट से ही क्यों नहीं खेलती? मेरा क्यों छूती है। मैंने तुझसे अपने साथ खेलने के लिए तो नहीं कहा?' ऐसी जली-कटी सुन कर आन्या सन्न रह गयी और उदास वहाँ से चली गयी।

ईशा को इस नए शहर की कालोनी में आए हुए लगभग एक महीना हो रहा था। उसके पापा का यहाँ तबादला हुआ था। पिछले शहर में भी ईशा ऐसा अक्सर करती रहती थी। ये उसकी आदत बन गयी थी। पिछले पन्द्रह दिन तो उसे कालोनी के बच्चों से दोस्ती करने में लग गए थे। अब बाकी के पन्द्रह दिनो में ही उसकी सबसे कुट्टी होने लगी थी। कोई उसे समझाता तो वह उससे भी रूठ जाती थी। अपने मम्मी-पापा और बड़े भाई से भी। उसकी इसी आदत से धीरे-धीरे मुहल्ले के सभी बच्चे उससे कन्नी काटने लगे थे। कोई भी बच्चा उसके साथ खेलने-घूमने का मन नहीं बना पाता था।

कुछ दिन बाद तो ऐसा माहौल हो गया कि ईशा कालोनी में अकेली पड़ने लगी। वह घर से बाहर निकलती तो बच्चों का झुंड विपरीत दिशा में घूमने चल देता। पार्क में जाती तो बच्चे उससे दूर खेलने लगते। यहाँ तक कि स्कूल की कक्षा में भी कोई सहेली उसके पास नहीं बैठती थी। उसके अगल-बगल खाली सीट पर वो नए बच्चे बैठने लगे थे, जिनसे ईशा की कभी न दोस्ती हुई थी, न बोल-चाल होती थी। अब ईशा को बड़ा अजीब सा लगने लगा था।

खाली समय काटने को दौड़ता था। वह कभी किताब लेकर बैठती तो ऊब जाती। खेलने निकलती तो सिर्फ अकेले वाला खेल जैसे रस्सी आदि कूद कर संतोष करना पड़ता। घूमने निकलती तो अकेले चुपचाप टहलती रहती। गुमसुम फूलों-पत्तियों को निहारते-छूते हुए गुजर जाती। जबकि थोड़ी ही दूरी पर अनेक बच्चे एक साथ हँसते-खेलते ठहाके लगते रहते थे। लेकिन ईशा को अब भी समझ नहीं आता था कि इतने सारे बच्चे इस तरह उससे दूरी क्यों बनाते जा रहे हैं। एक दिन तो वह अपने छोटे भाई आयुष पर तुनक गयी, जिसके साथ वह अकसर लूडो या साँप-सीढ़ी खेल लिया करती थी। भाई भी गुस्से मे उठकर चला गया तो उसे अकेले ही दोनों तरफ से खेलकर समय बिताना पड़ा। उसे बिलकुल भी मजा नहीं आ रहा था। पर वो करती भी क्या?

वह बहुत उदास रहने लगी थी। अब अकेलापन उसे काटने को दौड़ता था... और एक दिन तो वह बीमार ही पड़ गयी। मम्मी-पापा ने डाक्टर अंकल को बुला लिया। उन्होने देखा और जाँच करने के बाद आश्चर्य से कहा- 'ईशा को तो कोई बीमारी नहीं हैं। हाँ, यह कुछ सुस्त और उदास जरूर दिख रही है। ऐसा अकेलेपन और अवसाद के कारण हो सकता है।'

डाक्टर अंकल ने बड़े प्यार से ईशा का सिर सहलाया और पूछा- 'इतनी सुंदर और अच्छी बच्ची के पास अकेलापन और उदासी कहाँ से आ गयी? आखिर क्या बात है बेटी!' डाक्टर अंकल की बात सुनकर ईशा फफक पड़ी। उसने बताया कि मेरे साथ कोई खेलना-बैठना-पढ़ना नहीं चाहता। मेरा भाई भी नहीं। मैं बहुत ऊब जाती हूँ।

'लेकिन ऐसा होता क्यों हैं? तुम तो बहुत अच्छी लड़की हो।'

'मैं अच्छी हूँ, पर... शायद ऐसा कोई और नहीं मानता। मेरा बड़ा भाई भी नहीं। मुझे अकेले ही लूडो खेलना पड़ा। उसकी चाल भी चलनी पड़ी। तब खेल खत्म हो सका। मैं क्या करती? कल मेरा जन्मदिन भी है। कोई बच्चा नहीं आएगा। मैं अकेले कैसे मनाऊंगी? अंकल! मुझे बिलकुल भी अच्छा नहीं लग रहा।'

डाक्टर अंकल को सारी बात समझते देर न लगी। वे बोले- 'जब तुम उन बच्चों को जाकर प्यार और अपनेपन से बुलाओगी तो वे जरूर आएंगे।' इतना सुनते ही ईशा फिर से तुनक गयी- 'मैं क्यों बुलाने जाऊँ? मेरी गलती थोड़े है। वे लोग खुद ही मुझे नहीं बोलते।'

डाक्टर अंकल ने प्यार से समझाया- 'देखो बेटी! तुम शायद नहीं जानती कि तुम्हारी समस्या क्या है? ये तुम्हारा 'ईगो' है। ईशा का ईगो, ईशा का बड़बोलापन। दूसरे की बातें और उसकी भावनाएं न समझने की गलती। अपनी बात आगे और ऊंची रखने की गलती। तुरन्त किसी की बात पर बिना सोचे-समझे कड़वी प्रतिक्रिया देने की गलती। तुम्हें अपना व्यवहार बदलना होगा। सभी की बातों को धैर्यपूर्वक सुनना और उनकी भावनाओं को समझना होगा। जैसे वो तुम्हारी बातों को सुन लेते हैं और बिना झगड़ा किए चले जाते हैं। वैसे ही तुम्हें भी सब से प्रेम से बिना गुस्सा किए हुए बात करना चाहिए। तुम ऐसा करके देखो। वो सब जो तुमसे अभी बात तक नहीं करते, वही तुम्हारे सबसे अच्छे दोस्त बन जाएंगे।'

मम्मी-पापा की बातें भी न समझने वाली ईशा पर डाक्टर अंकल की बातों ने जैसे जादू किया। उसकी आँखों में आशा की चमक आ गयी- 'क्या ऐसा सच में हो जाएगा अंकल?'

डाक्टर अंकल मुस्कराये- 'बिलकुल बेटी! तुम आजमाकर देख लो। एकदम मुफ्त का इलाज है।'

ईशा ठठाकर हंस पड़ी। बोली- 'अभी देखती हूं।' सामने ही उसका भाई आयुष आश्चर्य भरी निगाहों से चुपचाप पीछे हाथ बांधे खड़ा देख रहा था। ईशा प्यार से बोली- 'भाई! मेरे साथ लूडो खेलेगा? अब मैं किसी की बात का बुरा नहीं मानूँगी। आ जा मेरे अच्छे भैया।' आयुष तुनक कर बोला- 'पर मैं तो बुरा मान गया।'

'क... क... क्यों?'- ईशा आश्चर्य से डाक्टर अंकल की ओर देखते हुए बोली।

आयुष ठहाका लगाकर हंस पड़ा- 'ईशा पगली! तेरी नहीं डाक्टर अंकल की बात का। मैंने तो सोचा था कि तुझे चार-पाँच सुइयां लगेगी और ढेर सारी कड़वी-कड़वी दवाइयाँ खानी पड़ेंगी, तभी अक्ल ठिकाने आएगी।'

'तूने मुझे पगली कहा, तू मुझे सुई लगवाना चाहता था। ठहर तुझे अभी बताती हूँ।'- ईसा तुनक कर बिस्तर से उठी और आयुष को पकड़ने दौड़ी। अब

(शेष पृष्ठ २२ पर)

बाल कविताएँ

सूरज चाँद में हुई लड़ाई, खूब हुई थी हाथापाई
घमंडी चाँद बोला अकड़कर, तुमसे प्रकाश न लूंगा दिनकर
सूरज चाँद से छिना सवेरा, चारों ओर छा गया अंधेरा
चाँद बहुत ही था निराश, छँटती नहीं अमावस-रात
जा तारों से हाथ मिलाया
फिर भी नहीं उजाला आया
एक उपाय बस था बाकी
जाकर सूरज से माँगी माफी
रवि मेरा मिटा अंधकार
तुम जीते मैंने मानी हार

-- दीपिका कुमारी दीप्ति

नानाजी की छड़ी

नानाजी के घर में पहली बार हुई
चुन्नु-मुन्नू के बीच में तकरार हुई
मुन्नू की गाड़ी लेकर चुन्नु दौड़ गया
फिर मुन्नू भी चुन्नु का घोड़ा तोड़ गया
दोनों के इस झगड़े से घर में छिड़ गया घमासान
कहीं गिरे बरतन, गुलदस्ते, बिखरा घर, सारा सामान
बिखरी प्लेटें, बिखरे कप और गिरी घड़ी
नानाजी की चुन्नु-मुन्नू को दिखी छड़ी
नानाजी की छड़ी देख दोनों का मन घबराया
बिखरा था सामान फटाफट अपनी जगह जमाया
चुन्नु ने लगाई झाड़ू और मुन्नू ने लगाया पोंछा
कर दें पूरे घर की सफाई दोनों ने यह सोचा
नानाजी आए देखा घर कुछ बदला बदला था
चारों कोने चमक रहे थे
आँगन उजला उजला था
चुन्नु को पूछा नाना ने
किसने घर की की ये सफाई?
मुन्नू ने नानाजी को उनकी
लम्बी छड़ी दिखाई
जादुई छड़ी का किस्सा जब मुन्नू ने उन्हें सुनाया
नानाजी ने बैठ पलंग पे एक ठहाका लगाया...

-- सूर्यनारायण प्रजापति

दोहे

आँखों में मेरी बसा,
माँ का सुंदर रूप
हमको देती थी खुशी,
वो मेरे अनुरूप
राम कृष्ण ना जानती, मैं बस जानूँ मात
जिसने हमको है दिया, सुघर सलौना गात
धरती से भारी बनी, गलती करती माफ
उसके मुखड़े पर दिखे, प्यारा ईश्वर साफ
मेरे जीवन को दिया, जिसने नव आकार
उसके आँचल में हुए, सब सपने साकार
आँगन बचपन का बसा अब भी मेरी साँस
छोर पकड़ के चली थी, यादें हैं वो खास

-- कल्पना मिश्रा बाजपेई

एक सुबह फौजी चाचा, गए घूमने बागीचा
सुना वहाँ पर ये चर्चा, पड़ा रो रहा एक बच्चा
कदम बढ़ा कर जा पहुंचे, बच्चे को चूमा पोंछा
लेकिन फिर सन्देह हुआ, बच्चे को किसने फेंका
असली जैसा गुड्डा था, जरा ध्यान से जब देखा
टेप मे थी आवाज भरी, समझ गए ये है धोखा
टिकटिक की आहट सुनकर, दूर उठा कर झट फेंका
हुआ धमाका जोरों का, उसमें था एक बम फूटा
वो आतंकी साजिश थी, घटना की तैयारी से
लेकिन सबकी जान बची, फौजी की होशियारी से
लावारिस कोई चीज मिले, बच्चों उसको मत लेना
लालच मे तुम मत पड़ना, खबर पुलिस को कर देना
जिसने भी यह काम किया, वह आतंकी था टुच्चा
सावधान हरदम रहना, तब सब कुछ होगा अच्छा

-- अरविंद कुमार साहू

चाँद सो गया रात में, देखा सपना प्रात में
चाँद की मम्मी सुला रही थी, प्यारी लोरी सुना रही थी
सो जाओ मेरे लाल अभी, आने वाली प्रात अभी
कलरव करते नभ में विहंग
झुंड-झुंड में उड़े विहंग
मातु गीत सुनाय रही है
चाँद को आज सुलाय रही है
गीत संग में प्यारी थपकी
रात चाँद ले रहा है झपकी

-- राजकिशोर मिश्र

शिशु गीत

१. टीवी

चुटकी, भीम, कालिया, राजू, सबसे हमको मिलवाता
डोरेम न, घसीटा, मोटू,पतलू के घर ले जाता
डिस्कवरी चैनल टीचर सा, बातें नयी बताता है
छुट्टी मिलते टीवी देखो, मजा बहुत ही आता है

२. चाकलेट

चाकलेट से बढ़िया कुछ ना, तुम भी दिनभर खाओ जी
पाकिट मनी मिले जितनी भी, सारे की ले आओ जी

३. टीचर

हमको रोज पढ़ाते हैं, अच्छी बात बताते हैं
नहीं मारते कभी हमें, होमवर्क दे जाते हैं

४. तारे

तारे कितने सारे हैं, दीपक से उजियारे हैं
गिन-गिनकर थक जाता हूँ, जाने कब सो जाता हूँ

५. पेंसिल

धड़-धड़, धड़-धड़ चलती है
लिखता ही मैं जाता हूँ
१० में १० नंबर हर बार
परीक्षाओं में लाता हूँ

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(पृष्ठ २१ का शेष)

बदल गयी ईशा

आयुष अपने दोनों हाथ आगे करके खड़ा हो गया- 'लेकिन ईशा! मैं तो कब से तेरे साथ खेलने के लिए लूडो हाथ मे पकड़े खड़ा हूँ।'

कमरे मे जोर का ठहाका गूँजा। मम्मी- पापा समेत सभी हंस पड़े थे। अगली सुबह ईशा और आयुष मिलकर सभी से पिछली बातों की माफी मांगते हुए जन्मदिन का निमंत्रण बाँट रहे थे और शाम को सारे बच्चे मिलकर जन्मदिन की खुशियाँ बाँट रहे थे। 'हैप्पी बर्थ डे टू यू ईशा, जन्म दिन बहुत- बहुत मुबारक हो।'- ... और ईशा?, मानो उसका नया जन्म ही हो रहा था। आज से वह सचमुच बदल गई थी। ■

लघुकथा

कदम

बहुत मुश्किल में फस गया विवेक। एक एक घडी उसे बेचैन किये जा रही थी। जिस समस्या से वो बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था, कोई भी रास्ता सूझ नहीं रहा था और बिना समाधान के वो इस समस्या से बाहर कैसे निकलेगा। उसके कदम कामयाबी की राह पर रुक से गए थे। चाहते हुए भी वह आगे बढ़ने में असमर्थ महसूस कर रहा था। अपना आत्म विश्वास खोने लगा था वो।

बहुत कोशिश की उसने अपने दिल दिमाग पर काबू पाने की और एक बात जो शिद्दत से काम कर ले कामयाब हो ही जाता है। समस्या को पार्श्व में रख समाधान पर उसने अपना ध्यान केंद्रित किया।

एक योजना बनायीं उसने और उसके तीन चरण रखे। पहला चरण समस्या को एवं उसके उत्पन्न होने के मूल कारण सहित उसकी खामियों पर भी गौर किया।

दूसरे चरण के तहत उसने अपने कदम पिता जी के कमरे की ओर बढ़ा दिए। वह अपने पिता जी के अनुभव से मिलने वाले समाधान को भी उतना ही महत्व दे रहा था। पिता जी से उसने अपने पहले चरण के बारे में विचार विमर्श किया। सब कुछ सुनने और समझने के बाद उन्होंने विवेक को अपने अनुभव के लाभ देते हुए समाधान सुझा दिया। दूसरा चरण सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ।

तीसरे चरण में उसने उपलब्ध समाधान को अपनाने से होने वाले फायदे और नुकसान की कसौटी पर परखा और एक अंतिम निर्णय ले ही लिया। यह वह फैसला था जो उसके रुके हुए कदम को आगे बढ़ने में मदद करता वरन मंजिल की ओर उसकी गति भी बढ़ा देता। उसने अपना खोया हुआ आत्म विश्वास वापस पा लिया और अपने आप को मजबूत महसूस कर रहा था। इस तरह उसने समस्या की देहलीज पार की और बढ़ा दिया अपना कदम अपनी मंजिल की ओर।

-- मनीष मिश्रा मणि

ए भाई, जरा देख के!

शरद सुनेरी

भ्राता, भाऊ, बिरादर, पाजी, भैया, दादा, अन्ना, चेट्टन आदि भारतीय भाषाओं में 'भाई' शब्द के पर्यायवाची हैं। मेरी तार्किक बुद्धि आधुनिक समाज शास्त्र और अर्थशास्त्र का अनुगमन करती हुई कहती है कि एक ही दंपति से उत्पन्न अनेक पुल्लिंग संतानें जो उस दंपति द्वारा संचित और अर्जित संपत्ति के लिए आपस में वाद-विवाद, मारकाट और युद्ध करती है उसे 'भाई' कहते हैं।" यानि भाई वह जो-लड़ें। एक बात इस संदर्भ में गौर करने वाली है। आजाद भारत में सांप्रदायिक दंगे अधिक हुए हैं। इसका कारण है किसी विद्वान का यह जुमला- 'हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, सब आपस में भाई-भाई।' जब सब आपस में भाई-भाई हैं तो लड़ाई तो होगी ही ना! अब भुगतो!

हमारे बुजुर्ग भी संस्कार डालने के चक्कर में बारीक त्रुटियाँ कर बैठते हैं। 'भाई' होने के बाद लड़ाई-झगड़े, मनमुटाव होना, फसाद ये सब नियति है। वे भाई क्या जो आपस में लड़ाई ना करे? आप इसे कुसंस्कृति कहते हैं। यह आपका भ्रम और पूर्वाग्रह है। बल्कि यही संस्कृति है। लीजिए मैं प्रमाणित किए देता हूँ। इसके लिए हमें अतीत के पन्ने पलटने होंगे। क्योंकि यही परंपरा है। और यह भी हमारी ही परंपरा है कि हम अतीत की ओर सिर्फ देखते हैं, सीखते कुछ नहीं। अतीत से सीखने वालों को आज का सभ्य समाज 'ओल्ड फैशंड' और 'आउट डेटेड' मानता है। इस कंप्यूटर और नेटयुग में यह नासमझी! खैर, 'भाई' शब्द का इस संसार में आदिकाल से ही रिकार्ड खराब रहा है।

कुछ प्रसिद्ध भाइयों के रिकार्ड को देखिए। रावण, कितना प्रकांड विद्वान, धर्मज्ञ और राजनीतिज्ञ था? किंतु अपने स्वार्थ के लिए कुंभकर्ण जैसे पराक्रमी और बलशाली भाई को मरवा डाला। अच्छा खासा सो रहा था बेचारा। उस विभीषण के तो कूल्हे पर लात मारकर उसने लंका की सीमा दिखा दी। बाद में विभीषण ने जो किया वह भी भ्रातृधर्म के अनुकूल था। जिसके लिए लोगों ने कहावत ही गढ़ दी- 'घर का भेदी, लंका ढाए।' कंस की काली करतूतों का ये आलम है साहब कि बहनें भी अपने ओरिजनल भाइयों से आज तक घबराती हैं। और उस धर्मराज युधिष्ठिर ने तो हद कर दी साहब! सारे भाइयों को दाँव में हार गया। यहाँ तक कि सबकी 'कामन वाइफ' द्रौपदी का भी नहीं बख्शा। और मक्कारी तो देखिए, कहता रहा यही धर्म है। वाह! एक और भाई थे- बाली-सुग्रीव। बाली ने तो सुग्रीव की लुगाई को ही अपनी घरवाली बना कर रख लिया था। बेचारा सुग्रीव भरी जवानी में किष्किंधा के जंगलों में बंदरों के गिरोह के साथ मारा मारा फिरता रहा। यही है भाई-लीला!

क्या कहा-'राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न'? राजा दशरथ की संतानों की बात न कीजिए। मुझे तो ये बाबा वाल्मीकि की मनगढंत कल्पना लगती है। भाई और लड़ाई न हो? असंभव! कवि की कल्पना ठहरी साहब! जंगल में मोर नाचा किसने देखा? घर-परिवार में थोड़ी-बहुत बातें हो भी जाती रही होगी तो राजा जी उसको बाहर नहीं आने देते होगे। सभ्य परिवार की यही पहचान है। आज भी लोग ऐसा ही करते हैं।

औरंगजेब ने अपने बाप के सारे बेटों को मौत के घाट उतार दिया था। भैया ये भाइयों के झगड़ों में बड़े-बड़े रजवाड़े-उजड़ गए। उद्योगपतियों की कलई खुल गई। देश की अदालतों में बूढ़े माँ-बाप अपने बेटों को चार इंच की जमीन के लिए दशकों तक लड़ते देखते हैं और चौथेपन में चार आने तथा चार रोटी के लिए खून के आँसू बहाते हैं। तब उनका वह भोगा हुआ यथार्थ दिल में टीस पैदा करता है जब लड़कपन में ये चारों तोतली बोली में लड़ा करते थे। आज वही एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये हैं। यथार्थ ये भाई साहब कि गरीब माँ-बाप जिन चार बेटों को रात दिन मजदूरी कर पालपोसकर खड़ा कर देते थे वे ही चार बेटे, अब 'चार भाई' के रूप में अपने माँ-बाप को नहीं पाल सकते। जो बच्चे बचपन में कहते थे 'मेरी माँ-मेरी माँ' वे ही बड़े होकर कहने लगते हैं 'तेरी माँ-तेरी माँ'। यही सचाई है, मेरे भाई।

हमारे बुजुर्ग प्रायः कहा करते थे कि- चोर-चोर मौसेरे भाई। यानि जो चोर होंगे, वे भाई होंगे। या यह भी कह सकते हैं कि जो भाई होंगे, वे चोर होंगे? आज अधिकांश भारतवासी अपने-अपने तरीके से अपने देश भाइयों को लूटने में लगे हैं। इस हमाम में सब नंगे हैं। यानि सब चोर! और मौसेरे भाई! ऐसे ही तो भाई चारा बढ़ता है 'भाई साहब'। जो भी हो हमारी इस भाई संस्कृति का सबसे अधिक लाभ तो हमारे पड़ोसी देश चीन ने उठाया। उसने हमसे बुद्ध लिया और बदले में धोखा दिया वह भी भाई बनकर।

उसे पता था कि भाई बनकर ही धोखा दिया जा सकता है। इसलिए इसी तर्ज पर उसने नारा बनाया- 'चीनी-हिन्दी, भाई-भाई।' हम आदर्शवादी भाई बने रह गये और वह 'भाई' बनकर लद्दाख की भूमि हमसे छीनकर ले गया। हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जी पीठ में घोंपे गए इस छुरे का दर्द ज्यादा दिन न सह सके और परलोक चले गए। कुछ महीने पहले भी यह 'चीनी भाई' भाभी के साथ आया था। इधर वह हमारे नरेंद्र भाई को झूला झुलाते रहा, उधर उसके भाई चुनार में चौकियाँ बनाते रहे! सारा देश टीवी और अखबारो में देखता रहा और सोचता रहा कि- 'ये हो क्या रहा है, भाई?' ये भाई लोग आते हैं और बिना लड़े 'समझौतें' पर हस्ताक्षर करवा कर चले जाते हैं। दशक पूर्व चीन के साथ हुए ऐसे ही 'समझौते' ने हमारे देश के करोड़ों भाइयों के हाथ काट डाले।

सुनने में आ रहा है कि फिर प्रधानमंत्री 'चीनी भाई' के घर जानेवाले हैं। पर ऐ भाई जरा संभल के...। ये बिना लड़े किए जानेवाले समझौते बड़े घातक होते है। जाइए-जाइए, पर जरा संभल के, क्योंकि-

ये चपटी नाकोंवाले भी, नंबर एक खिलाड़ी हैं
भोली सूरत पर मत जाना, इनके पेट में दाढ़ी है
इस चीनी में चीनी कम है, और करेला ज्यादा है
चाल चलें घोड़ोंवाली, दिखता बिल्कुल प्यादा है
अवसर मिलते ही ये चीनी, सारे वादे तोड़ेंगे
बिच्छू के वंशज हैं ये न, डंक मारना छोड़ेंगे। ■

(पृष्ठ १७ का शेष

ताजमहल वास्तव में शिव मंदिर है...

जहाँ पर वर्तमान में मुमताज का कब्र बनी हुई है वहाँ पहले तेज लिंग हुआ करता था जो कि भगवान शिव का पवित्र प्रतीक है। इसके चारों ओर परिक्रमा करने के लिये पाँच गलियारे हैं। संगमरमर के अष्टकोणीय जाली के चारों ओर घूमकर या कमरे से लगे विभिन्न विशाल कक्षों में घूमकर और बाहरी चबूतरे में भी घूमकर परिक्रमा की जाती है। हिंदू रिवाजों के अनुसार परिक्रमा गलियारों में देवता के दर्शन हेतु झरोखे बनाये जाते हैं। इसी प्रकार की व्यवस्था इन गलियारों में भी है।

कोई भी व्यक्ति जो ताजमहल गया होगा वह हिन्दू मंदिर से तुलना करेगा तो उसे काफी समानता वहां देखने को मिलेगी। जहां तक हमने अपने आंखों से देखा है मंस्जिद के अंदर ज्यादा स्थान भी खाली नहीं रहता है इसके उलट किसी भी बड़े मंदिर को आप देखें तो मंदिर के बाहर बड़ा खुला मैदान मिलेगा। ताज भवन में ऐसी व्यवस्था की गई थी कि हिंदू परंपरा के अनुसार शरदपूर्णिमा की रात्रि में अपने आप शिव लिंग पर जल की बूंद टपके। इस पानी के टपकने को इस्लाम धारणा का रूप देकर शाहजहां के प्रेमाश्रु बताया जाता है।

भगवान शिव की पूजा में बेल पत्तियों का विशेष प्रयोग होता है। ताज की वाटिकाओं में बेल तथा अन्य फूलों के पौधों की उपस्थिति सिद्ध करती है कि शाहजहां के हथियाने के पहले ताज एक शिव मंदिर हुआ करता था। भारत में स्थित अधिकांश बड़े मंदिर किसी न किसी नदी के तट पर ही स्थित हैं। ताजमहल भी यमुना नदी के तट पर ही स्थित है। यमुना नदी में भक्त स्नान कर मंदिर के दर्शन हिंदू मंदिर प्रायः नदी या समुद्र तट पर बनाये जाते हैं। ताज भी यमुना नदी के तट पर बना है जो कि शिव मंदिर के लिये एक उपयुक्त स्थान है। इससे यह सिद्ध होता है कि ताजमहल वास्तव में शिव मंदिर है। इस विषय को किसी भी पंथ या मजहब से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। राष्ट्रहित में जो सच्चाई है उसे जानने का हक हर आदमी को है। इसलिए केन्द्र की मोदी सरकार को चाहिए कि जनाकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए ताजमहल की सच्चाई से जनता को वाकिफ करायें। ■

लखनऊ में महामना भारत रत्न अलंकरण सम्मान समारोह

लखनऊ। महामना पं. मदन मोहन मालवीय को प्रदत्त भारत रत्न अलंकरण का आज यहां भव्य समारोह में शंखध्वनि, मंगलाचरण तथा पुष्पवर्षा से स्वागत तथा सम्मान किया गया। महामना मालवीय मिशन लखनऊ द्वारा २४ मई को विश्वेश्वरैया प्रेक्षागृह में आयोजित महामना भारत रत्न सम्मान समारोह में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाइक, भारत के गृहमंत्री राजनाथ सिंह, काशी हिन्दू वि.वि. के कुलपति प्रो जी.सी. त्रिपाठी, महापौर डा. दिनेश शर्मा एवं वरिष्ठ नेता लाल जी टंडन उपस्थित थे।

काशी हिन्दू वि.वि. के कुलपति प्रो जी.सी. त्रिपाठी महामना मालवीय जी को प्रदान किये गये भारत रत्न अलंकरण को अपने साथ लेकर आये थे, जिसका स्वागत समिति के सदस्यों और उपस्थित अन्य गणमान्य जनों द्वारा स्वागत किया गया।

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाइक ने कहा कि काशी हिंदू में पढ़ने का अवसर न मिलने की पीड़ा मुझे आज भी है। काहिविवि की विश्वव्यापी प्रतिष्ठा है। मालवीय जी व्यक्ति का समग्र विकास चाहते थे। इसीलिए वे शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य को भी आवश्यक मानते थे। वे सभी विद्यार्थियों को इसके लिए प्रेरित करते थे। काहिविवि के चार लोगों को उनसे पहले भारत रत्न मिला- डा. भगवान दास, डा. राधाकृष्णन, प्रो. सी.एन. राव एवं पी.डी. टंडन। यह मालवीय जी का ही प्रताप है।

गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि मालवीय जी और अटल जी ने जिन जीवन मूल्यों को जिया यह उनका सम्मान है। महामना होने के भाव को अटल जी ने भी समझा था। छोटे मन का व्यक्ति कभी आध्यात्मिक नहीं हो सकता। महामना ही उदार होता है। महामना भारत में प्राचीन चिंतन और आधुनिक विज्ञान के बीच समन्वय चाहते थे। मालवीय जी ने बाई इंडियन का नारा दिया था। प्रधानमंत्री उस भावना से प्रेरित होकर मेक इन इंडिया अभियान चला रहे हैं।

प्रो त्रिपाठी ने कहा कि मालवीय जी को भारत रत्न मिलने से इस सम्मान का गौरव बढ़ा है। १९ वीं शताब्दी के छठे दशक में गांधी, स्वामी विवेकानन्द, और महामना मालवीय जी इन तीनों का प्रादुर्भाव हुआ। तीनों ने विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाई। भारत की आध्यात्मिक शक्ति को जगाया।

मिशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रभु नारायण श्रीवास्तव ने मिशन की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और बताया कि दिसम्बर २०१६ में दिल्ली में काशी हिन्दू वि.वि. के पूर्व छात्रों का एक अंतर्राष्ट्रीय समारोह आयोजित किया गया है। काशी हिन्दू वि.वि. की शताब्दी के अवसर पर २०१६ में अन्य अनेक कार्यक्रम भी देश भर में आयोजित किये जायेंगे।

समारोह का संचालन मिशन के महासचिव गोविंद राम अग्रवाल द्वारा किया गया और धन्यवाद ज्ञापन समारोह के संयोजक विष्णु कुमार गुप्त ने किया। कुलगीत और श्रद्धांजलि गीत महामना मालवीय विद्या मंदिर के आचार्यों द्वारा प्रस्तुत किया गया। समारोह में बड़ी संख्या में गणमान्य जन शामिल हुए जिनमें मिशन के राष्ट्रीय महासचिव हरीशंकर सिंह, महामना की पौत्रवधू, आर. एन. वर्मा, राजेन्द्र प्रसाद, डा. अभिनन्दन स्वरूप, आशुतोष कुमार, डी.एन. श्रीवास्तव, श्रीमती सीमा यादव, बी.एन. सिंह, डा. सायूष नारायण, एवं डा. दिलीप अग्निहोत्री भी उपस्थित थे। ■

देवर्षि नारद जयंती एवं पत्रकार सम्मान समारोह संपन्न

लखनऊ। 'पत्रकारिता सभी स्तम्भों की आत्मा है। जिन देशों की पत्रकारिता में राष्ट्रवाद का भाव रहा है उन देशों ने उन्नति की है। समाचारों के चयन में निष्पक्षता की बात करने वाले बीबीसी का इंग्लैण्ड के हितों के प्रति, सीएनएन का अमेरिका के हितों के प्रति और अलजजीरा की प्राथमिकता खाड़ी देशों के हितों में होती है।'

उक्त विचार विश्व संवाद केन्द्र द्वारा आयोजित नारद जयंती एवं पत्रकार सम्मान समारोह में दोपहर का सामना के कार्यकारी संपादक प्रेम शुक्ला ने व्यक्त की। इस अवसर पर पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए पांच पत्रकारों को सम्मानित भी किया गया- शलभमणि त्रिपाठी (आईबीएन७ लखनऊ ब्यूरो), विश्वजीत बनर्जी (पायनियर अंग्रेजी, लखनऊ संस्करण संपादक), राकेश कुमार शर्मा (नेशनल ब्यूरो स्वदेश, दिल्ली) रमेश चन्द्र अकेला (डीएनए ब्यूरो चीफ, कौशांबी) और अमर उजाला लखनऊ के छायाकार अर्जुन साहू को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष अरविन्द कुमार सिंह ने कहा कि नारद ने पत्रकारिता को उद्योग बनाने से लेकर पेड न्यूज के प्रति शिकायत दर्ज करा कर भगवान विष्णु से मुक्ति मांग ली थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राजनाथ सिंह सूर्य ने कहा कि अब पत्रकारिता योग्यता पर नहीं लाइजनिंग पर होती है। इस अवसर पर प्रान्त प्रचारक संजय, विसंके के अध्यक्ष नरेन्द्र भदौरिया, विभाग संघ चालक जयकृष्ण सिन्हा, विसंके प्रमुख राजेन्द्र, पथ संकेत के गंगा सिंह और विभाग प्रचारक अमरनाथ प्रमुख रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन रा. स्व.संघ के सह प्रान्त प्रचार प्रमुख दिवाकर ने किया। ■

जय विजय मासिक

कार्यालय– ४/३, अक्षय निवास, २, सरोजिनी नायडू मार्ग, लखनऊ - २२६००१ (उ प्र)

मो 09919997596, 08004664748, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in

प्रबंध सम्पादक- विजय कुमार सिंघल, सम्पादक- बृजनन्दन यादव

सहसम्पादक- अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान), कमल कुमार सिंह

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।